
₹25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
क्रान्ति
जुलाई 2018
ख़तरे में भारतीय लोकतंत्र ?
–प्रेमशंकर झा
विभिन्न कलाओं में मुसलमानों का योगदान
–संकलित
शिशु के स्वास्थ्य के प्रति सजगता
–डॉ॰ विभा खरे
इंटरनेट बैंकिंग पर सुरक्षा के सूत्र
–रमेश पलन

Bengal Footwear Co.

Kohinoor's

Stockist : Moti, Apollo, Ashoka, Uttam, SSC etc.



ख़ुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीर से पहले
ख़ुदा बन्दे से ख़ुद पूछे कि बता तेरी रज़ा क्या है ।

Bengal Footwear Co.

39, Rabindra Sarami,
Kolkata-700073

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 28 अंक 1 जुलाई 2018

कौन है जो अल्लाह को अच्छा ऋण दे कि अल्लाह उसे उसके लिए कई गुना बढ़ा दे ? और अल्लाह ही तंगी भी देता है और कुशादगी भी प्रदान करता है, और उसी की ओर तुम्हें लौटना है ।

–क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

ईश-अनुराग

जिसका हो संपर्क न तुमसे
वह हमको अनुराग न देना
प्रत्येक ओर सावन हो जैसे
खेल रहा जीवन हो जैसे
मर्यादित यदि हो न भावना
फागुन देना फाग न देना
हमको वह अनुराग न देना...
तुम बिन जीवन संताप मात्र हे
हर संघर्ष अनुताप मात्र है
साथ अगर तुम दे न सको तो
मधु से भरा पराग न देना
मुझको वह अनुराग न देना
जीवन प्रेम मात्र से पूरित
मन स्मृति मात्र से पुष्पित
पास तुम्हारे ये दोनों हैं
बाग़ के बदले आग न देना
मुझको वह अनुराग न देना
चंचल मन यदि यह है मेरा
मेरा मन फिर भी है तेरा
निष्ठुर होकर मेरे मन को
प्रीतम मेरे त्याग न देना
मुझको वह अनुराग न देना

सपना है संसार

सपना है संसार यह बाबा
सपना है संसार
कितनी बुरी है सोच
मृत्युलोक को तूने समझा है अपना आधार
सपना है संसार यह बाबा सपना है संसार
अमृत है मृत्यु से पहले तुमने कब यह जाना
टूटी तेरी नाव है बाबा कैसे होगे पार
सपना है संसार
अमृत जिसका नाम दें हम वह है जीवन कैसा
सृजन में ही छिपा हुआ है अपना सृजनहार
बाबा सपना है संसार
धन तेरा तो और कहीं है तू है किसपर मरता
समय अभी है कर ले चिन्ता हो तेरा निस्तार
बाबा सपना है संसार ।

● मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां



कहां क्या है ?

ईश-अनुराग, सपना है संसार	–मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	3
क़ुरआन ज्योति		5
मजलिस में बैठने के आचार (हदीस मंजरी)		6
विशुद्ध एकेश्वरवादी धर्म इस्लाम (संपादकीय)		7
साइंस महत्व और दुष्प्रभाव (आपके पत्र)		9
हज़रत उम्मे हराम (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	13
हज्जतुल विदा (जीवन आदर्श)	–मौलाना सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी	15
विभिन्न कलाओं में मुसलमानों का योगदान (संकलित)		
'दही खट्टी' क्यों ?' (मीडिया विमर्श)	–सी॰ के॰ रहमानी	24
ख़तरे में भारतीय लोकतंत्र ? (विशेष आयोजन)	–प्रेमशंकर झा	26-27
अपना-अपना मकान (कहानी)	–देवेन्द्र कुमार मिश्रा	33
शिशु के स्वास्थ्य के प्रति सजगता (महिला जगत)	–डॉ॰ विभा खरे	39
इंटरनेट बैंकिंग पर सुरक्षा के सूत्र (अर्थउपभोक्ता)	–रमेश पलन	41
साइरस और बाबिल (अतीत)	–अख़्लाक़ अहमद क़ादिरी	45
हिमाचल के मीठे सेब़ (बालवीथी)		49

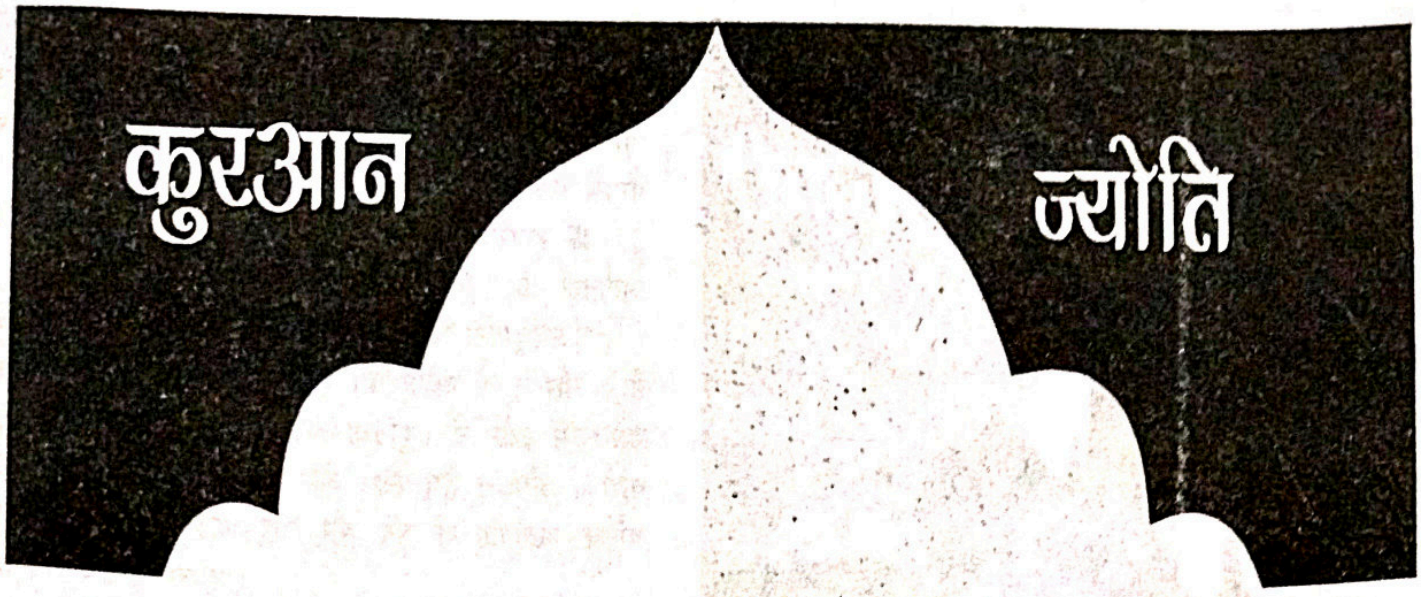

(62,63) सुनो ! जो अल्लाह के मित्र हैं, जो ईमान लाए और जिन्होंने तक़्वा (संयम और भय) की नीति अपनाई, उनके लिए किसी भय और दुख का मौक़ा नहीं है। (64) दुनिया और आख़िरत दोनों ज़िन्दगियों में उनके लिए शुभ-सूचना ही शुभ-सूचना है। अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं। यही बड़ी सफलता है। (65) ऐ नबी ! जो बातें ये लोग तुझ पर बनाते हैं वे तुझे दुखी न करें, सम्मान सारे का सारा अल्लाह के अधिकार में है और वह सब कुछ सुनता और जानता है।

(66) जान लो ! आसमान के बसने वाले हों या ज़मीन के, सब के सब अल्लाह के अधीन हैं, और जो लोग अल्लाह के सिवा कुछ (अपने स्वयं के गढ़े हुए) शरीकों को पुकार रहे हैं, वे निरे भ्रम और गुमान के पीछे चलने वाले हैं और केवल अटकल से काम लेते हैं। (67) वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी कि उसमें शान्ति प्राप्त करो और दिन को रौशन बनाया। इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो (खुले कानों से पैग़म्बर के सन्देश) को सुनते हैं।[65]

–क़ुरआन, 10:62,67

---

65. यह एक ऐसा विषय है जो व्याख्या चाहता है। जिसे बहुत ही संक्षिप्त शब्दों में वर्णन किया गया है। दार्शनिक जिज्ञासा, जिसका उद्देश्य यह पता चलाना है कि इस सृष्टि में प्रत्यक्ष रूप से जो कुछ हम देखते और अनुभव करते हैं उस के पीछे कोई वास्तविकता है या नहीं और है तो वह क्या है, दुनिया में उन सब लोगों के लिए जो 'वह्य' (प्रकाशना) व 'इलहाम' से सीधा सत्य ज्ञान नहीं पाते, धर्म के बारे में राय बनाने का एकमात्र साधन है। कोई व्यक्ति भी, चाहे वह अनीश्वरवाद अपनाये या शिर्क या ईश्वरवाद, बहरहाल एक न एक प्रकार के दार्शनिक जिज्ञासा को रखे बिना धर्म के बारे में किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकता और पैग़म्बरों ने जो धर्म प्रस्तुत किया है, उसकी जांच भी अगर हो सकती है, तो इसी तरह हो सकती है कि आदमी अपनी शक्ति भर, दार्शनिक चिन्तन-मनन करके, संतोष प्राप्त करने का यत्न करे कि पैग़म्बर हमें सृष्टि की प्रत्यक्ष चीज़ों के पीछे जिस वास्तविकता के छिपे होने का पता दे रहे हैं, वह दिल को लगती है या नहीं। इस जिज्ञासा को सही या ग़लत होना, पूरे का पूरा जिज्ञासा-विधि पर आश्रित है। इसके ग़लत होने से ग़लत राय और सही होने से सही राय बनती है। अब तनिक समीक्षा करके देखिये कि दुनिया में अलग-अलग गिरोहों ने इस जिज्ञासा के लिए कौन-कौन से तरीक़े अपनाए हैं–

मुश्रिकों ने पूर्णतः अंधविश्वास के आधार पर अपनी खोज की बुनियाद रखी है। (शेष पृष्ठ 19 पर)



द्वेष और शत्रुता

■ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा–

"बदगुमानी से बचो, इसलिए कि बदगुमानी सबसे झूठी बात है। और न तो लोगों की बातों की टोह में रहो और न एक-दूसरे के शत्रु बनो। बल्कि एक-दूसरे के भाई बने रहो। और कोई व्यक्ति अपने भाई की मंगनी पर मंगनी का पैग़ाम न भेजे यहां तक कि वह निकाह कर ले या फिर मंगनी छोड़ दे।" (बुख़ारी)

व्याख्या : यह हदीस बताती है कि ईमान वालों के पारस्परिक संबंध कितने प्रीतिकार होने चाहिए। इस्लाम जिस आदर्श समाज के निर्माण की मांग करता है उसके लिए अपरिहार्य है कि समाज के व्यक्तियों के दिल एक-दूसरे की ओर से बिल्कुल साफ़ हों। उनमें एक-दूसरे के लिए शत्रुता या घृणाभाव कदापि न पाया जाए। वे एक-दूसरे की कमज़ोरियों की तलाश में हरगिज़ न रहें बल्कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भाई की मान-मर्यादा का रक्षक हो। वे कोई ऐसा काम न करें जिससे किसी दूसरे का दिल टूटे और जो सहानुभूति और हितचिंता के विरुद्ध हो। उदाहरणस्वरूप अगर किसी ने किसी के यहां शादी का पैग़ाम भेजा है तो फिर यह किसी प्रकार उचित न होगा कि कोई दूसरा व्यक्ति उस पैग़ाम के बाद वहां अपना पैग़ाम भेजे। हां, अगर लड़की वाले उस पैग़ाम को स्वीकार न करें या किसी कारणवश मंगनी का पैग़ाम भेजने वाला स्वयं ही अपने पैग़ाम को वापस ले ले तो फिर दूसरे व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त हो जाता है कि वह वहां शादी के लिए अपना पैग़ाम भेजे।

■ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा–

"बदगुमानी से बचो, क्योंकि बदगुमानी सबसे झूठी बात है। और न तो लोगों की बुराइयों की टोह में रहो और न खोज में और न (दुनिया का) लोभ करो और न ईर्ष्या करो। और न द्वेष रखो और न एक-दूसरे से पीठ फेरो बल्कि अल्लाह के बंदे और भाई-भाई बनकर रहो।"

(मुवत्ता इमाम मालिक)

व्याख्या : इस हदीस में भी इस उपाय की चर्चा की गयी है कि किस प्रकार इस्लामी समाज की पवित्रता को बाक़ी रखा जाए। साधारणत: दुनिया का लोभ मनुष्य को अन्याय और अत्याचार पर उभारता है और वह उस विशालहृदयता और उच्चता का प्रदर्शन नहीं कर पाता जो इस्लाम में अभीष्ट है। इसलिए इसमें दुनिया के लोभ-लालच से दूर रहने की ताकीद की गयी है।

इस हदीस में अत्यंत संक्षिप्त और संग्राहक शब्दों में इस्लामी समाज की वास्तविक विशेषता का वर्णन किया गया है जो इसका एक स्पष्ट उदाहरण है कि नबी (सल्ल॰) को ईश्वर की ओर से 'जवामिउल कलिम' प्रदान किया गया था। अर्थात आप (सल्ल॰) को यह योग्यता प्राप्त हुई थी कि आप (सल्ल॰) के संक्षिप्त शब्दों में अर्थों का बाहुल्य पाया जाता था। आप कहते हैं, "कूनू इबादल्लाहि इख़वाना।" (अल्लाह के बन्दे और भाई-भाई बनकर रहो।) कितने सुन्दर और प्रभावी शब्दों में ईमान वालों का सुन्दर चित्र प्रस्तुत कर दिया गया है। मोमिन ईश्वर के द्रोही नहीं बल्कि उसके आज्ञाकारी बन्दे होते हैं और वे परस्पर एक-दूसरे के शत्रु नहीं बल्कि भाई बनकर रहते हैं। ऐसे भाई जो एक-दूसरे के शुभ-चिंतक और दुख दूर करने वाले होते हैं।

('हदीस सौरभ'-2)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

विशुद्ध एकेश्वरवादी धर्म इस्लाम

मानव-जीवन का आरंभ एकेश्वरवाद से हुआ है । हज़रत आदम (अलैहि॰) और हव्वा (अलैहि॰) सारी मानवजाति के माता-पिता हैं । वे और उनकी संतान एकेश्वरवाद पर क़ायम थे । उनकी मृत्यु के बाद उनकी संतान में शिर्क (अनेकेश्वरवाद) आया । विशेषत: अल्लाह के एक पैग़म्बर हज़रत नूह (अलैहि॰) का काल हज़रत आदम (अलैहि॰) के बाद का है । इस काल में बड़े बुज़ुर्गों की याद के लिए उनके पांच बड़े बुत (मूर्ति) बनाकर रखे गये थे । बाद के लोगों ने उनको याद रखने से आगे बढ़कर उन बुतों की पूजा करनी शुरू कर दी । इस तरह मूर्तिपूजा का आरंभ हुआ । हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने हज़ारों वर्ष पहले मक्का में जो इबादतगाह बनायी थी, वह केवल एक ईश्वर की उपासना के लिए थी । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से केवल 350 वर्ष पहले अम्र बिन हई नामक व्यक्ति ने मक्का से शाम (सीरिया) की यात्रा पर वापस आते समय कुछ बुत लाकर खाना-ए-काबा में रख दिए । वहीं से खाना-ए-काबा में मूर्तिपूजा शुरू हुई । यह एक सर्वमान्य सच्चाई है कि मनुष्य सृजनहार-पालनहार ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है । सृष्टि के अन्य सभी जीवों, वस्तुओं, चीज़ों और प्राकृतिक संरचनाओं में केवल मनुष्य को ही कुछ विशिष्ट गुण, क्षमताएं और अधिकार मिले हुए हैं, जिनके अंतर्गत वह अपनी बुद्धि-मेधा का उपयोग सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दिशाओं में करने के लिए स्वतंत्र हैं । वह अपने इच्छानुसार जीवन बरतता और जीता है । वह चाहता है तो ईश्वरीय आदेशों और निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करता है और इस प्रकार अपने लौकिक व पारलौकिक जीवन को सफल बनाता है । इसके विपरीत वह स्वच्छंद जीवन जीकर सर्वथा असफल परिणाम का भागी बनता है । मनुष्य वह प्राणी है जिसको ईश्वर ने इतनी शक्ति व सामर्थ्य प्रदान की है कि वह एक सीमा के अंतर्गत सृष्टि के संसाधनों से लाभ उठा सकता है और उसका दोहन भी कर सकता है । इस दृष्टि से यह स्पष्ट है कि सृष्टि में जो मानव को स्थान प्रदान किया गया है, वह सोद्देश्य है और विशिष्ट उद्देश्य के अंतर्गत ही मनुष्य के लिए वे असीमित और असंख्य संसाधन जुटाए गये हैं । स्रष्टा और मनुष्य के बीच इस संबंध को अपेक्षित है कि मनुष्य अपने पालनकर्ता प्रभु का आज्ञाकारी बने और उसके आदेशों व इच्छाओं के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करे । उस एक ईश्वर स्रष्टा, पालनकर्ता को छोड़कर किसी अन्य को पूज्य, उपास्य, नियंता, अधिपति न बनाए । वह विशुद्धभाव से एकेश्वरवादी बने और एक ईश्वर को ही अपना उपास्य और पूज्य माने । अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और अपेक्षाओं आदि के लिए उसी की ओर रुजू करे, उसी से विनीत भाव से प्रार्थना करे और उसकी ही प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करे ।

मनुष्य के पास एक ही हृदय है, जो एक ईश्वर की भक्ति की सामर्थ्य रखता है, फिर भक्ति को विखंडित तो किया ही नहीं जा सकता । अन्तरात्मा को भी यही वांछित है कि वह एक ही ईश्वर की भक्ति करे । मनुष्य के अपने स्रष्टा के साथ इस प्रकार के मधुर संबंध की उक्त और अन्य अपेक्षाओं-वांछाओं को मानव जीवन में सही तौर पर उतारने, बरतने और उन्हें अमल में लाने के परिणामस्वरूप जीवन में जो गुण, विशिष्टताएं, शील-स्वभाव, नैतिकता और सदाचार पैदा होते हैं वे जीवन को विकारों और चिंताओं से मुक्त करते ही हैं, ईश्वर

की प्रसन्नता का इतना उत्तम साधन बन जाते हैं कि मनुष्य का लोक-परलोक दोनों सुधर-संवर जाता है । यही सफलता मानव जीवन की वास्तविक सफलता है । इसके विपरीत जो मनुष्य स्रष्टा के नैसर्गिक संबंध को झुठलाता है, उससे मुंह फेरता है वह बड़ा कृतघ्न तो है ही अपने जीवन को अत्यंत जटिल और समस्याग्रस्त भी बना लेता है । अंततः उसके हाथ असफलता और निराशा ही लगती है । मानव इतिहास यह बताता है कि मनुष्य अपने विवेक का प्रयोग उद्दंडता, निरंकुशता और मनमाने व्यवहार के रूप में भी करता रहा है, वहीं दूसरी ओर करुणामय, पालनहार, स्रष्टा ने उसे बार-बार सन्मार्ग दिखाया और इस्लाम को परिपूर्ण रूप से ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा भेजा । ईश्वरीय शिक्षाओं को जब भी झुठलाया गया या उनमें परिवर्तन आ गया तो इसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा और उसमें बिगाड़ आ गया । इन अवसरों पर सर्वशक्तिमान संप्रभु, ईश्वर मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए अपने दूत, संदेशवाहक, पैग़म्बर और रसूल भेजता रहा एवं आवश्यकता के अनुसार उन पर अपनी किताब उतारी । इस प्रकार करुणामय दयावान प्रभु ने उन शिक्षाओं को मनुष्य तक पहुंचाने का प्रबंध किया जिन्हें वे भुला बैठे थे । ईश्वर के दूत और पैग़म्बर संसार के प्रत्येक भू-भाग में भेजे गये, अतः भारत में भी वे ईश्वर का संदेश लेकर आए होंगे । सभी नबियों ने अपने आह्वान का आरंभ एकेश्वरवाद से किया और इस पर इस प्रकार जमे रहे कि किसी भी हाल में इससे बाल बराबर भी हटने को तैयार न हुए । अल्लाह के अंतिम रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से विरोधियों ने बार-बार चाहा कि आप इस विषय में थोड़ी-सी नरमी दिखाएं, लेकिन आपने ज़रा भी नरमी नहीं दिखाई, यहां तक कि आपको प्रलोभन दिया गया, रिश्वत में वह सब कुछ पेश किया जिसकी उन्हें सामर्थ्य थी, लेकिन इन सब उपायों के बावजूद भी वे पैग़म्बर को विचलित न कर सके ।

'कान्ति' मासिक का आगामी विशेषांक

पश्चिमी जगत और मुसलमान

मुसलमानों ने पश्चिमी जगत को किस रूप में देखा, समझा और जाना ? इस विषय पर बहुत ही कम साहित्य उपलब्ध है । जबकि पश्चिमी जगत के लोगों के मुसलमानों के साथ संपर्क पर बहुतायत चीज़ें उपलब्ध हैं । ब्रिटिश मूल के अमेरिकी इतिहासकार एवं विचारक बर्नार्ड लुइस (BERNARD LEWIS) ने इस विषय पर विस्तृत अध्ययन किया है और "द मुस्लिम डिस्कवरी ऑफ़ यूरोप" (The Muslim Discovery of Europe) नामक पुस्तक लिखी है, जो काफ़ी प्रसिद्ध हुई । इसकी उपादेयता और महत्व के मद्देनज़र 'कान्ति' (मासिक) के प्रस्तुत विशेषांक में इस पुस्तक के महत्वपूर्ण अंशों को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । साथ ही पेश की गयी हैं इस विषय पर कुछ अन्य सामग्रियां ।

पृष्ठ लगभग : 120, मूल्य : 60 रुपये

संपादक, 'कान्ति' (मा०), दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल
इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
ई-मेल : **editorkanti@yahoo.com**

साइंस : महत्व और दुष्प्रभाव

भूमंडल पर जब जीवन का आरंभ हुआ, तब इन्सान के सामने तीन ही मूल समस्याएं थीं । रोटी, कपड़ा और मकान । रहने के लिए उसने गुफाओं और पेड़ों के नीचे आश्रय लिया । फल, सब्ज़ियों और वनस्पतियों को अपना भोजन बनाया, पेड़ों के पत्तों और जानवरों की खालों को अपना वस्त्र बनाया । धीरे-धीरे वह विकास की मंज़िल तय करता हुआ जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में ग्रोथ पैदा करता रहा और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में नवीनता अपनाता चला गया । सुख-सुविधाओं की ऐसी-ऐसी चीज़ों का आविष्कार कर डाला कि बुद्धि विस्मित होकर रह गयी । यहां तक कि अपने जीवन में नवीनता पैदा करते-करते वह इस मक़ाम तक पहुंच गया कि उसके अधिकतर कामों में इन्सान की जगह मशीनों ने ले ली और आज सूरतेहाल यह है कि इन्सान पूर्णरूप से मशीनों पर ही निर्भर रहने लगा है ।

जी हां, इन्सान ने खुद को अलग करके मशीनों को अपना कार्यवाहक बना लिया है और इन्सान की असमर्थता का कारण साइंस और टेक्नॉलोजी है, जिसने जीवन के हर क्षेत्र में इस तरह अपना अधिकार जमा लिया है कि इसके बिना ज़िन्दगी दुश्वार ही नहीं, बल्कि असंभव प्रतीत होती है । आज हम जहां भी निगाह डालते हैं वहां टेक्नॉलोजी ही राज करती नज़र आती है । दुनिया के नक़्शे को उठाकर देखिये, इन्सानों की बढ़ती हुई आबादी के पेशे नज़र भूमंडल पर हर तरफ़ ऊंची-ऊंची इमारतों का जाल-सा दिखायी देता है, जिस पर चढ़ने के लिए इन्सान लिफ्ट और एक्सिलेटर का मोहताज बन गया है । एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए आरामदेह और द्रुतगामी गाड़ियां हाज़िर हैं । हवाई जहाज़ों और रेल गाड़ियों ने महीनों की यात्रा को समेटकर घंटों में कर दिया है ।

हाथ से बने हुए कपड़ों का प्रचलन भी अब ख़त्म ही होता चला जा रहा है । अब मशीनों से ही हल्के से हल्का और मोटे से मोटा कपड़ा आकर्षक डिजाइनों में बुनकर निकलता है और फैशन इंडस्ट्रीज का हिस्सा बन जाता है । फ़्रोज़ेन फूड का प्रचलन भी टेक्नॉलोजी की देन है । इन्सान की भोजन-संबंधी ज़रूरत को पूरा करने और उसके स्वाद को बढ़ाने के लिए टेक्नॉलोजी की सहायता से जानवरों की कृत्रिम रूप से वृद्धि की जाने लगी है ।

साइंसी टेक्नॉलोजी का इस्तेमाल केवल भोजन, कपड़ा और मकान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी वह पूर्णरूप से छा गया है, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या चिकित्सा का, अब आधुनिक टेक्नॉलोजी पर ही आगे बढ़ रहा है । सारे विभागों और कार्यालयों में भी अब कंप्यूटरीकृत प्रबंध-व्यवस्था है । पुलिस स्टेशन में अपराधियों की घटनाओं को दर्ज किया जाए या अदालतों के कार्यालय-संबंधी कार्य, बैंक हों या अन्य कार्यालय हर जगह टेक्नॉलोजी की प्रबंध-व्यवस्था ने कामों को संगठित करने के साथ-साथ आसान और द्रुतगामी भी बना दिया है । साइंस और टेक्नॉलोजी ने जंगों का अंदाज़ भी बदल दिया है । अब सशस्त्र सिपाहियों की ज़रूरत नहीं रही, उनकी जगह एटमी हथियारों और ड्रोन जहाज़ों ने ले ली है । कुछ बटन दबाते ही पूरा का पूरा शहर तबाह व बरबाद हो जाता है ।

शैक्षिक संस्थानों में ब्लैक बोर्ड की जगह स्मार्ट स्क्रीन ने ले ली है । अब स्कूलों में लिखने से ज़्यादा टाइप करने का प्रचलन हो चला है । पुस्तकालय की सारी मोटी-मोटी किताबें अब eBook के रूप में pdf फारमेट में घर बैठे उपलब्ध हैं । बीसवीं सदी का सबसे हैरतअंगेज़ आविष्कार कंप्यूटर था, जिसकी तेज रफ़्तारी पर इन्सान को बड़ा नाज़ था, मगर पिछले दशक में आने वाले टच स्क्रीन मोबाइल फ़ोन और wifi ने कंप्यूटर को भी मात दे दी । अब एक ज़रा-सा मोबाइल फ़ोन एक समय में कई कामों को निबटा रहा होता है । छोटा-सा सेल फ़ोन लोगों की पाकेट डायरी, हाथ की घड़ी, बच्चों का कल्कुलेटर, दीवारों के कैलेंडर, टार्च यहां तक की टेलीवीज़न और रडियो तक को हज़म कर चुका है । अब तो पवित्र कुरआन मजीद भी कुछ लोग मोबाइल पर पढ़ ही लेते हैं । हद तो यह है कि अब तो लोग ताजियत, अयादत, मुबारकबाद के लिए भी मुलाक़ात करने के बजाय फेस बुक पर ही यह काम पूरा कर लेते हैं ।

अपने घरों का जायज़ा लें, तो इन्सानों से ज़्यादा मशीनें दिखायी देंगी । ए०सी०, हीटर, ओवन, वाशिंग मशीन, सिलाई मशीन, ग्रैंडर, जूसर, आटा गूंथने की मशीन, बर्तन धोने और रोटी पकाने के लिए मशीन भी मौजूद है । कुछ कहा नहीं जा सकता कि कुछ सालों के बाद रोटी खिलाने के अलावा लोगों को सुलाने और नहलाने की भी मशीनें ईजाद हो जाएंगी । साइंस और टेक्नॉलोजी का महत्व अपनी जगह सर्वमान्य है, जिससे किसी तरह भी इन्कार नहीं किया जा सकता और न ही इस टेक्नॉलोजी की मदद से प्राप्त होने वाले लाभ से किनाराकशी की जा सकती है, मगर यह भी एक वास्तविकता है कि यही टेक्नॉलोजी इन्सान के लिए काफ़ी हानिकारक बन चुकी है ।

पहले इन्सान अपने कामों के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए मीलों पैदल चलता था, जिसकी वजह से शरीर स्वस्थ रहता था, टांगें भी मज़बूत रहती थीं और शरीर के सारे अंग अपने काम ठीक तरह से करते थे, मगर अब इन्सान सुस्ती और काहिली का शिकार हो चुका है । थोड़ी-सी भी दूरी तय करनी हो, तो गाड़ी का सहारा लेता है । पैदल न चलने के कारण पाचन-क्रिया हर वक़्त प्रभावित होती रहती है । मोटापा, शुगर, ब्लडप्रेशर, कोलस्ट्राल, घुटनों का दर्द और असंख्य बीमारियों का शिकार रहता है । गाड़ियों की वजह से पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि हो गयी है, फिर भी विभिन्न मशीनों से निकलने वाली रेडियाई लहरें मानव-स्वास्थ्य के लिए बहुत ज़्यादा हानिकारक हैं । इनकी वजह से नित्य नये चर्म-रोग और असंख्य बीमारियों ने जन्म ले लिया, खाने-पीने की सामग्रियों में से पोषक-तत्वों को ख़त्म कर दिया है ।

इन हानियों से हटकर इन्सान ने वास्तव में अपना वक़्त बचाने के लिए मशीन बनायी थी, मगर यही मशीनें इन्सान के वक़्त का एक बड़ा हिस्सा खा जाती हैं । मोबाइल फ़ोन पर अनावश्यक गपशप, फेसबुक पर हर वक़्त दूसरों की ताह लगाना । असंख्य गेम्स और व्यर्थ वीडियो में बहुत ज़्यादा समय बरबाद हो जाता है । मोबाइल फ़ोन की वजह से मां-बाप के पास औलाद के लिए और औलाद के पास [illegible] वक़्त नहीं बचता । इसी मोबाइल की वजह से इन्सान माता-पिता, बहन-भाई, यार-दोस्त और रिश्तेदारों से कटकर रह गया है ।

नि:संदेह हम साइंस और टेक्नॉलोजी को पूरी तरह से अपनी ज़िन्दगियों से दूर नहीं कर सकते, मगर इसके हानिकारक प्रभावों से बचने के लिए हमें प्रकृति की तरफ़ वापसी का सफ़र करना होगा । आप आधुनिक टेक्नॉलोजी का ज़रूर लाभ उठाएं, मगर ख़ुद को पूर्णरूप से इसका मोहताज न बनाएं । अपने हाथ से काम करने की आदत डालें । जीवन-पद्धति में सादगी पैदा करें । हर वक़्त गाड़ी में सफ़र करने के बजाय कभी-कभी पैदल चलने की भी कोशिश किया करें । अपने जीवन में संतुलन पैदा करें और इससे पहले कि आपके एहसासात भी मशीनी हो जाएं, कोशिश करें कि कुछ वक़्त इन मशीनों से निकालकर अपनों को भी दें ।

सबा नुज़हत
नयी दिल्ली

जिस्म बनाने के ख़तरनाक रास्ते

पश्चिमी देशों में जिस्म पर मांसपेशियां बनाने के लिए टेस्टोस्टेरोन के अलावा और कई रासायनिक दवाओं का धड़ल्ले से इस्तेमाल किया जा रहा है । इनके कई गंभीर प्रभाव भी देखे गये हैं, परन्तु लोग इनकी अनदेखी करके जिस्म बनाने में जुटे हैं । ऐसा ही एक रसायन क्रीटीन के नाम से जाना जाता है । कड़ी कसरत करने के बाद इसके सेवन से मांसपेशियां बनती हैं ।

पाउडर या सिरप के रूप में उपलब्ध क्रीटीन का सेवन करने से शरीर का भार बिना चर्बी की मात्रा बढ़ाये ही तेज़ी

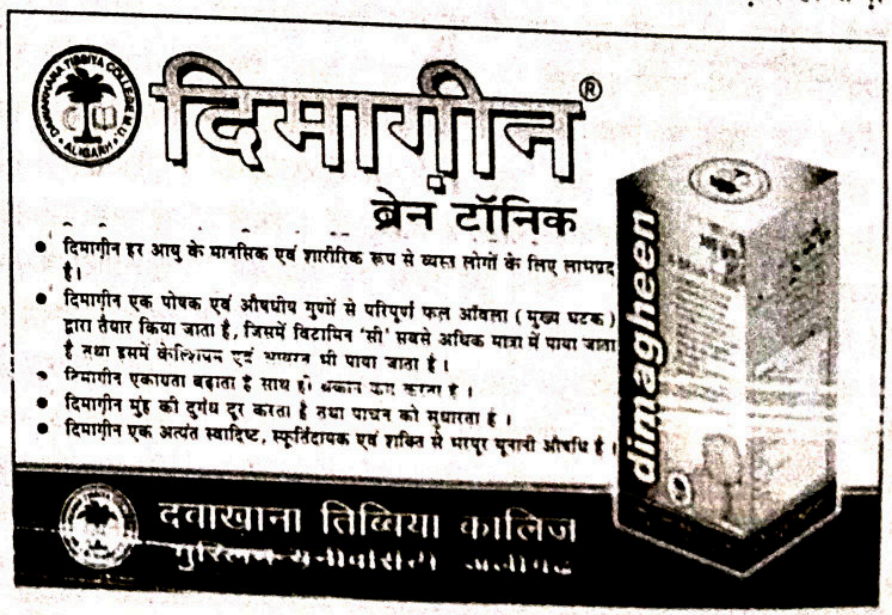

से बढ़ता है । अध्ययनों से पता लगा है कि इसका नियमित इस्तेमाल सेहत के लिए ख़तरनाक साबित हो सकता है । यह नतीजा क्रीटीन के थोड़े समय तक सेवन से निकाला गया । लंबे समय तक इसके उपयोग से उत्पन्न ख़तरों को जानने के लिए अध्ययन जारी है । देह में जमा चर्बी के भंडारों को जल्दी से जल्दी गलाने या कहें जलाने के लिए इफीड्रीन नामक दवा की गोलियां इस्तेमाल की जाती है ।

यह रसायन इफीड्रा नामक पौधे से निकाला जाता है और ऊर्जा बढ़ाने वाली अनेक दवाओं में इसका प्रचुर उपयोग है । इसके सेवन से देह में चर्बी की मात्रा तेज़ी से घटती है, परन्तु जैसे ही इसका सेवन बंद किया जाता है, तुरंत शरीर भार फिर पहले की तरह बढ़ने लगता है । इफीड्रीन के सेवन से दौरे और आघात पड़ने की सूचना है । ख़ासतौर से उच्च रक्तचाप और मधुमेह के रोगियों के लिए यह दवा बेहद ख़तरनाक है ।

सब जानते हैं कि मांसपेशियां बनाने के लिए प्रोटीन कच्चे माल का काम करती है । विशेषज्ञों की राय है कि देह को प्रोटीन की आवश्यक मात्रा हमारे आहार के ज़रिए मिलनी चाहिए । ख़ालिस प्रोटीन की गोलियां, पाउडर या सिरप लेना सेहत के लिए ठीक नहीं होता । इसे शरीर में प्रोटीन की अधिकता हो जाती है, जिससे गुर्दे और जिगर ख़राब होने का ख़तरा बन जाता है । इसके बावजूद दुनिया भर में जिस्म के दीवाने ख़ालिस प्रोटीन का धड़ल्ले से इस्तेमाल कर रहे हैं । हमारी देह में प्राकृतिक तौर पर बनने वाली एड्रीनल हार्मोन भी दवा के रूप में बिक रही हैं । ये हार्मोन देह में जाकर आंशिक रूप से टेस्टोस्टेरोन में बदल जाते हैं । इसलिए माना जाता है कि इनके सेवन से मांसपेशियों में तेज़ बढ़वार होती है ।

एड्रीनल हार्मोन्स का नियमित इस्तेमाल शरीर में कोलेस्टेरोल की मात्रा बढ़ा देता है और पुरुषों में महिलाओं जैसे वक्ष का विकास होने लगा है । लंबे समय तक इनका इस्तेमाल करने से क्या परिणाम निकलेगा, कहना मुश्किल है । हमारे देश में भी इस तरह की जिस्म बनाने वाली दवाओं का प्रचलन बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा है । दवा निर्माता इसके लिए आकर्षक विज्ञापनों का सहारा भी ले रहे हैं । पर बेहतर यह होगा कि लोग इनके जाल में न फंसे और सामान्य आहार लेते हुए सेहत को दुरुस्त रखने की सोचें ।

डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव

जौनपुर, उ॰प्र॰

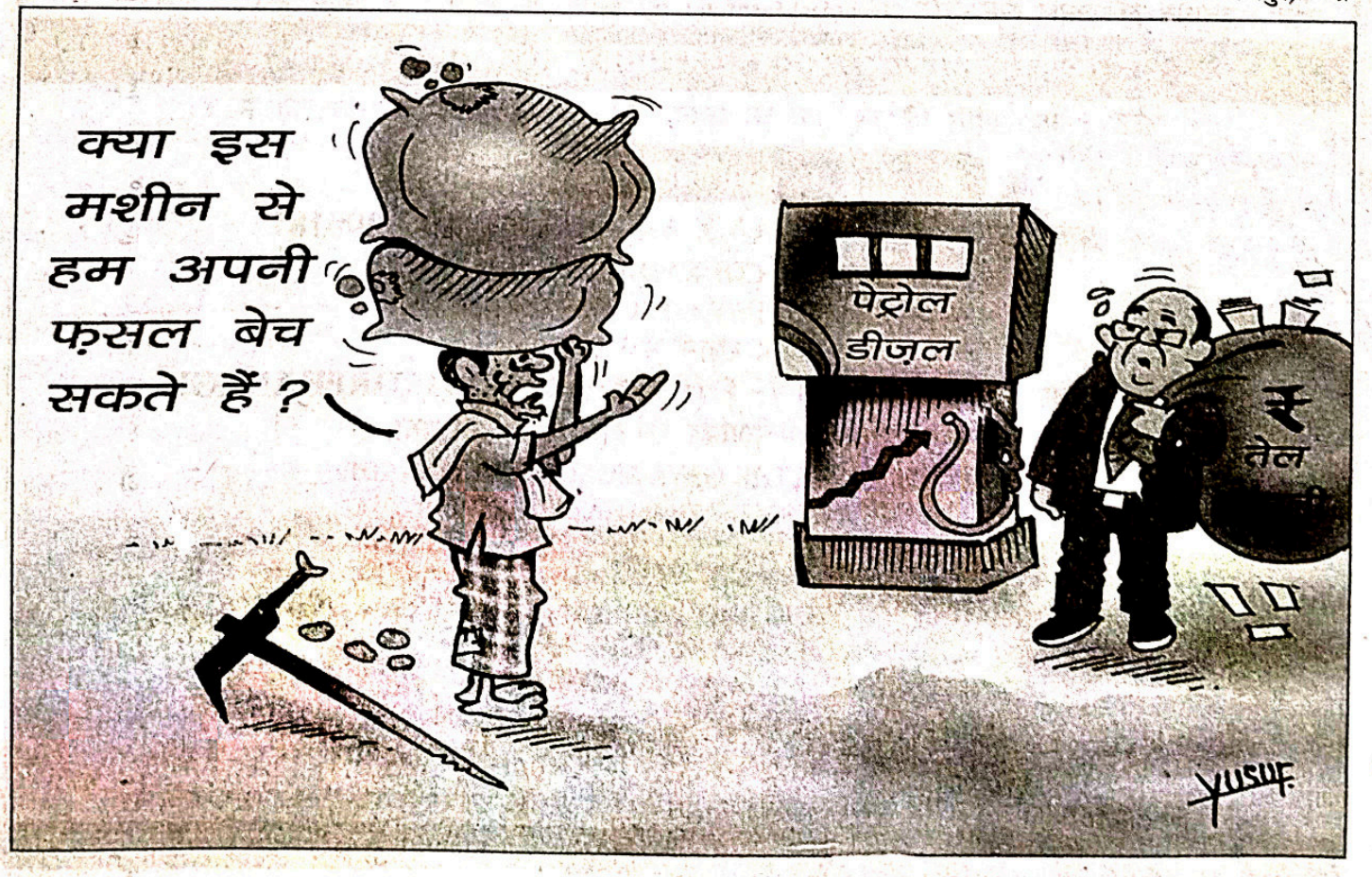

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 100 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2018-2019 के सत्र के लिए आइ०ए०, बी०ए०, एम०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLiS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 18000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 25 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 75 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम पूरा हो चुका है ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK SWIFT CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

Local Donors मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 09955655960, 09801213022

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

BANK, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

हज़रत उम्मे हराम (रज़ि०)

❖ तालिब हाशमी

हज्जतुल विदा के कुछ दिनों के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मदीना मुनव्वरा से 'कुबा' तशरीफ़ ले गये और अपने एक रिश्तेदार महिला के यहां ठहरे । वहां खाना खाने के बाद लेट गये । आप (सल्ल०) को नींद आ गयी । लेकिन जल्द ही आप जाग गये और आप (सल्ल०) के चेहरे पर मुस्कराहट थी । आप (सल्ल०) ने उस महिला को संबोधित करते हुए कहा :

''मैंने स्वप्न में देखा है कि मेरी उम्मत के कुछ लोग समुन्द्र में अल्लाह के लिए जिहाद पर निकल रहे हैं ।''

उस महिला ने कहा, ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०), मेरे मां-बाप आप पर कुरबान । दुआ कीजिए कि मुझे भी उन लोगों में शामिल होने का स्वभाग्य प्राप्त हो ।''

थोड़ी देर बाद आप (सल्ल०) फिर सो गये । दोबारा उठे तो फिर मुस्करा रहे थे और उसी स्वप्न को फिर दोहराया । उस महिला ने एक बार फिर दुआ करने का आग्रह किया । आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : ''तुम भी उसी जमाअत के साथ हो ।''

आप (सल्ल०) के मुबारक मुंह से यह शब्द सुनना था कि वे खुशी से उछल पड़ीं और अनायास ही उनकी जुबान पर तकबीर व तहलील जारी हो गये । जिस महिला के यहां आप (सल्ल०) रुके और उसे यह शुभ सूचना दी वे थीं हज़रत उम्मे हराम (रज़ि०)।

(2)

हज़रत उम्मे हराम (रज़ि०) बड़ी ही जलीलुल क़द्र सहाबिया थीं । ये आप (सल्ल०) की रिश्ते में ख़ाला (मौसी) लगती थीं । हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) की मां हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) उनकी अपनी बहन थीं और शहीदे बर्रे मऊना (रज़ि०) उनके अपने भाई ।

हज़रत उम्मे हराम (रज़ि०) भी अपने भाई और बहन से साथ इस्लाम के शुरुआती दौर में ही मदीना मुनव्वरा पहुंची और दीन की दौलत से मालामाल हो गयीं । उनकी शादी अम्र बिन क़ैस (रज़ि०) से हुई जिनसे उनको दो बेटे हुए–क़ैस (रज़ि०) और अब्दुल्लाह (रज़ि०)।

हज़रत उम्मे हराम (रज़ि०) के पति हज़रत अम्र बिन क़ैस (रज़ि०) और उनके बड़े बेटे हज़रत क़ैस बिन अम्र (रज़ि०) दोनों को उन तीन सौ तेरह सरफ़रोशों में शामिल होने का सम्मान प्राप्त है जिन्होंने जंगे-बद्र में आप (सल्ल०) के साथ थे ।

सन 3 हिजरी में जंगे उहद बरपा हुई तो एक बार फिर दोनों बाप-बेटे जानों को हथेली पर रखकर मैदाने जंग में पहुंचे और बहादुरी के साथ लड़ते-लड़ते शहीद हो गये । पति और बेटे की शहादत ने हज़रत उम्मे हराम (रज़ि०) को तोड़ कर रख दिया लेकिन उन्होंने उसे बड़े ही धैर्य एवं

सलाम उस पर कि...

सलाम उस पर कि जिसने बादशाही में फ़क़ीरी की
सलाम उस पर कि जिसने बेकसों[1] की दस्तगीरी[2] की
सलाम उस पर कि जिसने ख़ूं[3] के प्यासों को वुबाएं[4] दीं
सलाम उस पर कि जिसने गालियां सुनकर दुआएं दीं
सलाम उस पर कि दुश्मन को हयाते-जावेदा[5] दे दी
सलाम उस पर कि अबू सुफ़ियान को जिसने अमां[6] दे दी
सलाम उस पर कि असरारे-मुहब्बत[7] जिसने समझाए
सलाम उस पर कि जिसने ज़ख़्म खाकर फूल बरसाए
सलाम उस पर कि जिसके घर में चांदी थी न सोना था
सलाम उस पर कि टूटा बोरिया जिसका बिछौना था
दरूद उस पर कि जिसका नाम तसकीने-दिलो-जां[8] है
दरूद उस पर कि जिसके ख़ुल्क[9] की तफ़्सीर क़ुरआं[10] है ।

● माहिरुल क़ादिरी

1. मुहताजों, 2. मदद, 3. ख़ून, 4. लांग कोट की तरह सामने से खुला एक अरबी परिधान, 5. शाश्वत जीवन, 6. पनाह, 7. प्रेम का रहस्य, 8. दिलो-जान के सुकून का सामान, 9. आचार-व्यवहार, 10. क़ुरआन

संयम के साथ सहन किया ।

उनकी दूसरी शादी जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि॰) से हुआ । सन 4 हिजरी में हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰) को एक बार फिर एक बहुत बड़े सदमे से गुज़रना पड़ा । उनके प्यारे भाई हज़रत हराम बिन मलहान (रज़ि॰) भी शहीद हो गये । बर्रे मऊना की घटना हज़रत हराम (रज़ि॰) के साथ ही घटी थी । हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰) ग़म से निढाल हो गयीं, लेकिन फिर भी अपने आपको संभाला और अल्लाह की मर्ज़ी के सामने अपना सिर झुका लिया । सरवरे आलम (सल्ल॰) ने भी हज़रत हराम (रज़ि॰) की शहादत को बहुत महसूस किया ।

सही मुस्लिम में है कि नबी (सल्ल॰) अपनी पाक पत्नियों के अलावा किसी और महिला के घर नहीं जाते थे । लेकिन हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) इसकी अपवाद थीं । आप (सल्ल॰) फ़रमाते थे । मुझे उन पर रहम आता है कि उनके भाई ने मेरे साथ रहकर शहादत पायी है ।

इस रिवायत में केवल उम्मे सुलैम (रज़ि॰) का नाम लिया गया है लेकिन सीरत की दूसरी किताबों में मिलता है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) के अलावा हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰), हज़रत उम्मुल फ़ज़्ल (रज़ि॰), हज़रत शफ़ा बिन्त अब्दुल्लाह (रज़ि॰), हज़रत असमा बिन्त अबी बक्र (रज़ि॰) के यहां भी कभी-कभी तशरीफ़ ले जाते थे । प्रमाणिक रिवायतों के अनुसार आप (सल्ल॰) ने समुन्द्री जंग का सपना उस समय देखा था जब आप हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰) के घर पर आराम फ़रमा रहे थे ।

(3)

यह सपना हज़रत उस्मान ज़ुन्नूरैन (रज़ि॰) के दौरे ख़िलाफ़त में पूरा हुआ । सन 28 (हि॰) में हज़रत अमीर मआविया (रज़ि॰) ने अमीरुल मोमिनीन की अनुमति से क़बरस द्वीप (Cyprus) की ओर जंगी समुन्द्री बेड़ा भेजा । इस्लामी सेना में बड़े-बड़े जलीलुल क़द्र सहाबी शामिल थे । अल्लाह तआला ने मुसलमानों को जीत दिलवायी और क़बरस पर इस्लामी झंडा लहराने लगा ।

उस समुन्द्री बेड़े में हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि॰) भी शामिल थे । उनके साथ उनकी पत्नी हज़रत उम्मे हराम भी शामिल थीं । जब मुहिम पूरी हो गयी और लोग वापस होने लगे तो हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰) भी सवारी पर बैठने लगीं । जानवर मुंह ज़ोर था, वह बिदक गया । जिससे हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰) ज़मीन पर गिर गयीं और बुरी तरह ज़ख़्मी हुईं और इसी सदमे से उनकी मौत हो गयी । इमाम बुख़ारी (रह॰) और इब्ने असीर (रह॰) के अनुसार क़बरस में ही वह दफ़्न की गयीं । हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰) की संतानों में तीन लड़कों का नाम आता है । (1) हज़रत अम्र बिन क़ैस (रज़ि॰), से दो बेटे क़ैस और अब्दुल्लाह और (2) हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि॰) से मुहम्मद ।

हज़रत उम्मे हराम (रज़ि॰) से कुछ हदीसें भी रिवायत की जाती है । उन हदीसों के राविंयों में हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) और हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि॰) जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी शामिल हैं ।

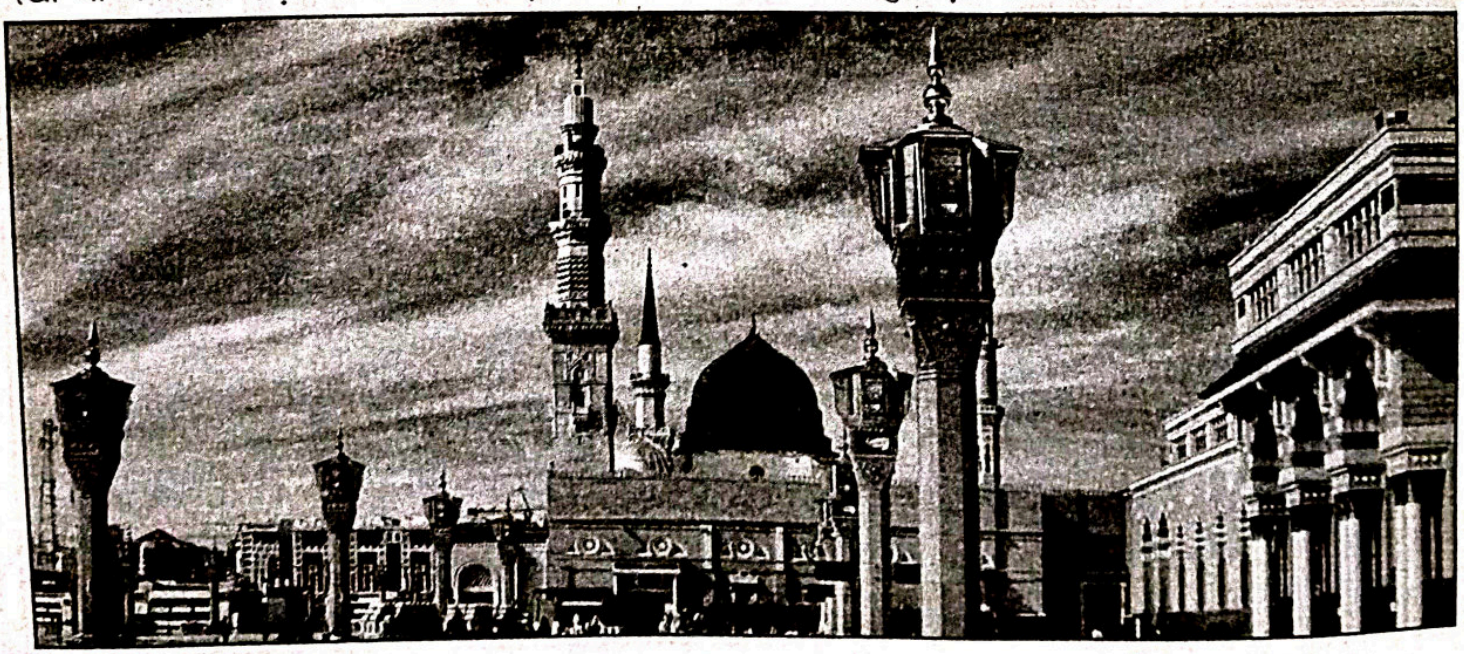

हज्जतुल विदा

■ मौलाना सफ़ीउर्रहमान मुबारकपुरी

दावत (इस्लाम को स्वीकार करने का निमंत्रण) एवं तबलीग़ (धर्म प्रचार) का कार्य पूर्ण हो गया और अल्लाह ही के एकमात्र उपास्य की स्वीकृति और अन्य किसी के पूज्य होने से इन्कार एवं मुहम्मद (सल्ल॰) की रिसालत (ईश दूतत्व) के आधार पर एक नये समाज का निर्माण पूर्ण हो गया और उसकी रूपरेखा निश्चित हो गयी । अब मानो दिव्य शक्ति आपके हृदय को आभास करा रही थी कि संसार में आपके रहने का समय समाप्ति के निकट है । अत: आपने हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि॰) को सन 10 हिजरी में यमन का गवर्नर बनाकर भेजा तो प्रस्थान करते समय अन्य बातों के अतिरिक्त यह भी फ़रमाया, "ऐ मआज़ ! संभवत: तुम मुझसे मेरे इस वर्ष के पश्चात न मिल सकोगे । संभवत: मेरी इस मस्जिद (मस्जिद नववी) और मेरी क़ब्र के पास से गुज़रोगे ।" और हज़रत मआज़ यह सुनकर आपकी जुदाई के ग़म से रोने लगे ।

वास्तव में अल्लाह यह चाहता था कि अपने पैग़म्बर को उस दावत के फल दिखला दे, जिसकी राह में आपने बीस वर्ष से अधिक तक नाना प्रकार की कठिनाइयों और परिश्रमों को सहन करते हुए अल्लाह के पैग़ाम को लोगों तक पहुंचा दिया था और उम्मत की भलाई चाहने का दायित्व पूर्ण कर दिया था ।

अल्लाह की इच्छा एवं मसलहत के अनुसार नबी (सल्ल॰) ने जब इस ऐतिहासिक "हज्जे मबरूर" के लिए अपने इरादे की घोषणा की तो संपूर्ण अरब के मुसलमान समूह दर समूह पहुंचना शुरू हो गये । हर एक की इच्छा थी कि वह रसूलुल्लाह के पद-चिह्नों को अपना मार्गदर्शक बनाए और आपका अनुसरण करे । फिर शनिवार के दिन जबकि माह ज़ीक़ादा में चार दिन शेष थे रसूलुल्लाह ने कूच की तैयारी फ़रमाई । बालों में कंघी की, तेल लगाया, तहबंद पहना, चादर ओढ़ी, क़ुरबानी के जानवरों को क़लादह (झोल) पहनाया और ज़ुहर के बाद कूच फ़रमा दिया और अस्र से पूर्व ज़ुलहुलैफ़ा पहुंच गये । वहां अस्र की नमाज़ दो रकअत पढ़ी और रात भर रुके रहे । सुबह हुई तो सहाबा से फ़रमाया, "रात मेरे पालनहार की ओर से एक आने वाले ने आकर कहा कि इस मुबारक (शुभ) वादी में नमाज़ पढ़ो" और कहो, "हज में उमरा है ।" फिर ज़ुहर की नमाज़ से पूर्व आपने एहराम के लिए ग़ुस्ल फ़रमाया । इसके पश्चात हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने आपके पवित्र शरीर और सिर में अपने हाथ से ज़रीरह और मुश्क के मिश्रण वाली ख़ुशबू लगाई । ख़ुशबू की चमक आपकी मांग एवं दाढ़ी में दिखायी पड़ती थी । अगर आपने यह ख़ुशबू धोई नहीं बल्कि वैसे ही रहने दी । फिर आपने तहबंद पहना और चादर ओढ़ी दो रकअत ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी । इसके बाद मुसल्ले ही पर हज एवं उमरा दोनों का एक संग एहराम बांधे हुए सदाये लब्बैक (उपस्थित होने की आवाज़) बुलन्द की । हज के समय हाजी बुलन्द आवाज़ से कहते हैं, "अल्लाहुम्मा लब्बैक" जिसका अर्थ होता है कि अल्लाह मैं उपस्थित हूं और भावार्थ होता है कि "ऐ अल्लाह ! मैं तेरे दरबार में सिर झुकाए हाथ पूर्णरूप से जोड़े उपस्थित हो गया हूं, अब तू जैसा चाहे मेरे साथ व्यवहार करे । दंड दे या क्षमा कर दे और अपनी एवं अपने दीन की जो चाहे सेवा मुझ से ले, मैं लाचार हूं, मैं उपस्थित हूं, हर प्रकार का अधिकार तुझे ही प्राप्त है ।" फिर बाहर तशरीफ़ लाए, क़स्बा नामक ऊंटनी पर सवार हुए और पुन: सदाये लब्बैक बुलन्द की । उसके पश्चात ऊंटनी पर सवार खुले मैदान में तशरीफ़ ले गये तो वहां भी लब्बैक पुकारा ।

उसके पश्चात आपने अपनी यात्रा जारी रखी । हफ़्ते भर बाद जब आप सांझ की बेला में मक्का के निकट पहुंचे तो "ज़ीतवा" में ठहर गये । वहीं रात व्यतीत की । दूसरे दिन फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर ग़ुस्ल फ़रमाया, फिर प्रातवेला में मक्का में प्रवेश किया । यह इतवार 4 ज़िलहिज्जा सन 10

हिजरी का दिन था । रास्ते में आठ रातें व्यतीत हुई थीं । सामान्य गति से इस यात्रा का यही हिसाब भी है ।

मस्जिदे हराम में पहुंचकर आपने पहला ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ किया । फिर सफ़ा एवं मरवा के मध्य ''सई'' की, परन्तु एहराम नहीं खोला क्योंकि आपने हज एवं उमरा का एहराम एक साथ बांधा था और अपने संग ''हदी'' लाये थे । तवाफ़ का ''सई'' से निवृत्त होकर आपने मक्का के ऊपरी भाग में ''हजून'' के पास क़याम फ़रमाया । परन्तु पुनः तवाफ़े हज के अतिरिक्त कोई और तवाफ़ नहीं किया । आपके जो सहाबा अपने साथ 'हदी' (क़ुरबानी का जानवर) नहीं लाए थे, आपने उन्हें आदेश दिया कि अपना एहराम उमरा में परिवर्तित कर दें और बैतुल्लाह का तवाफ़ एवं सफ़ा व मरवा की सई करके पूरी तरह ''हलाल'' हो जाएं (उमरा से निवृत्त हो जाएं), परन्तु चूंकि आप स्वयं निवृत्त नहीं हो रहे थे, अतः सहाबा को हिचकिचाहट हुई । आपने फ़रमाया, यदि मैं अपने संबंध की यह बात पहले जान गया होता तो बाद में ज्ञात हुई तो मैं भी निवृत्त हो जाता । आपका यह कथन सुनकर सहाबा ने अनुपालन किया और जिनके पास 'हदी' न थी वे निवृत्त हो गये ।

आठ ज़िलहिज्जा–तरविया के दिन आप ''मिना'' तशरीफ़ ले गये और वहां 9 ज़िलहिज्जा तक क़याम फ़रमाया । ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा और फ़ज्र (पांच वक़्त) की नमाज़ें वहीं पढ़ीं । फिर इतनी देर रुके रहे कि सूर्य उदय हो गया । इसके पश्चात ''अरफ़ा'' को चल पड़े । वहां पहुंचे तो ''निमरह'' की वादी में क़बहः (पड़ाव) तैयार था उसी में ठहर गये । जब सूरज ढल गया तो आपके आदेशानुसार क़स्वा पर कुजावा कसा गया और आप बतने वादी (वादी के मध्य) में तशरीफ़ ले गये । उस समय आपके चारों ओर एक लाख चौबीस हज़ार या एक लाख चवालीस हज़ार इन्सानों का समुद्र ठाठें मार रहा था । आपने उनके मध्य एक जामे ख़ुतबा (व्याख्यान) इरशाद फ़रमाया । आपके इरशादात (कथन) को रबीआ बिन उमैया बिल ख़ल्फ़ अपनी बुलन्द आवाज़ द्वारा लोगों तक पहुंचा रहे थे ।

आपने फ़रमाया, ''लोगो ! मेरी बात सुन लो क्योंकि मैं नहीं जानता संभवतः अपने इस वर्ष के पश्चात इस स्थान पर तुमसे कभी न मिल सकूंगा ।

तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल एक-दूसरे पर इसी प्रकार हराम हैं जिस प्रकार तुम्हारे आज के दिन की, रवां (चालू) महीने की ओर मौजूद (इस) शहर की हुरमत है । सुन लो ! अज्ञानता की हर वस्तु मेरे चरणों तले रौंद दी गयी । अज्ञानता के ख़ून भी समाप्त कर दिये गये और हमारे ख़ून में से पहला ख़ून जिसे मैं समाप्त कर रहा हूं वह रबीअ बिन हारिस के पुत्र का ख़ून है (यह बच्चा बनू सअ्द में दूध पी रहा था कि उन्हीं दिनों हुज़ैल के क़बीले ने उसे क़त्ल कर दिया था) और अज्ञानता का ब्याज समाप्त कर दिया गया और हमारे सूद (ब्याज) में से पहला सूद जिसे मैं समाप्त कर रहा हूं, वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है । अब यह सारे का सारा सूद समाप्त है ।

हां ! औरतों के बारे में अल्लाह से डरो, क्योंकि तुमने उन्हें अल्लाह की अमानत के साथ लिया और अल्लाह के कलिमे के द्वारा ''हलाल'' किया है । उन पर तुम्हारा हक़ यह है कि वह तुम्हारे बिस्तर पर किसी ऐसे व्यक्ति को न आने दें जो तुम्हें गवारा नहीं । यदि वह ऐसा करें तो तुम उन्हें मार सकते हो, परन्तु सख़्त मार न मारना और तुम पर उनका हक़ यह है कि तुम उन्हें मारूफ़ (भली-भांति जो उचित हो) के साथ खिलाओ और पहनाओ । और मैं तुममें ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूं कि यदि तुमने उसे मज़बूती से पकड़े रखा तो इसके बाद हरगिज़ गुमराह न होगे और वह है अल्लाह की किताब क़ुरआन)।

लोगो ! याद रखो, मेरे बाद कोई नबी नहीं और तुम्हारे बाद कोई उम्मत नहीं, लिहाज़ा अपने रब की इबादत करना, पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ना । रमज़ान के रोज़े रखना, ख़ुशी-ख़ुशी अपने माल की ज़कात देना, अपने परवरदिगार के घर का हज करना और अपने हुक्मरानों की इताअत (आज्ञापालन) करना । ऐसा करोगे तो अपने परवरदिगार की जन्नत में दाख़िल होगे ।

और तुमसे मेरे संबंध में पूछा जाने वाला है । तो तुम लोग क्या कहोगे ? सहाबा ने कहा कि हम शहादत देते हैं कि आपने तब्लीग़ कर दी, पैग़ाम (संदेश) पहुंचा दिया और ख़ैरख़ाही (भलाई चाहने) का हक़ अदा फ़रमा दिया ।

यह सुनकर आपने कलिमे की उंगली (तर्जनी) को आसमान की ओर उठाया और लोगों की ओर झुकाते हुए तीन बार फ़रमाया, ''ऐ अल्लाह ! गवाह रह ।''

जब आप ख़ुतबे से फ़ारिग़ (निवृत्त) हो चुके तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल (अवतरित) फ़रमाई : आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा ''दीन'' मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसन्द कर लिया ।

(क़ुरआन, 5:3)

हज़रत उमर ने यह आयत सुनी तो रोने लगे । पूछा गया कि आप क्यों रो रहे हैं ? फ़रमाया, इस कारण कि कमाल के पश्चात नुक़्स ही तो है ।

ख़ुतबे के बाद हज़रत बिलाल ने अज़ान कही, फिर इक़ामत कही । रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई, इसके पश्चात हज़रत बिलाल ने फिर इक़ामत कही और आपने अस्र की नमाज़ पढ़ाई । इन दोनों नमाज़ों के मध्य कोई और नमाज़ नहीं पढ़ी । इसके बाद आप जाये वक़ूफ़ (रुकने के स्थान) पर तशरीफ़ ले गये । क़िब्ला रुख़ मुसलसल वक़ूफ़ फ़रमाया (काबा की ओर मुंह करके लगातार बैठे रहे)। जब सूरज की टिकिया लुप्त हो गयी तो हज़रत उसामा को पीछे बिठाया और वहां से रवाना होकर मुज़्दलफ़ा तशरीफ़ लाए । मुज़्दलफ़ा में मग़रिब और इशा की नमाज़ें एक अज़ान और दो इक़ामत से पढ़ी । मध्य में कोई नफ़्ल नमाज़ नहीं पढ़ी । इसके पश्चात आप लेट गये और तुलूए फ़ज्र (भोर) तक लेटे रहे । सवेरा होते ही अज़ान एवं इक़ामत के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और इसके बाद क़स्वा पर सवार होकर ''मशअरे हराम'' तशरीफ़ लाए और क़िब्ला रुख़ होकर अल्लाह से दुआ की और उसकी तकबीर (बड़ाई) व तहलील (गुणगान) और तौहीद के कलिमात कहे । यहां इतनी देर ठहरे कि ख़ूब उजाला हो गया । इसके पश्चात सूर्योदय से पूर्व ''मिना'' के लिए रवाना हो गये और इस बार फ़ज़्ल बिन अब्बास को अपने पीछे सवार किया और जमरएकुब्रा पर पहुंचे (इबलीस का प्रतीक)। फिर आपने उसे सात कंकरियां मारीं । हर कंकरी के साथ तकबीर कहते जाते थे । कंकरियां छोटी थीं जिन्हें चुटकी में लेकर चलाया जा सकता था । आपने यह कंकरियां बतने वादी (बीच वादी) में खड़े होकर मारी थीं । इसके पश्चात आप क़ुरबानगाह तशरीफ़ ले गये और अपने शुभ हाथों से तिरसठ ऊंट ज़िब्ह किये । फिर हज़रत अली को सौंप दिया, जिन्होंने शेष सैंतीस ऊंट ज़िब्ह किये । इस प्रकार सौ ऊंट की संख्या पूर्ण हो गयी । आपने हज़रत अली को भी अपनी 'हदी' (क़ुरबानी) में सम्मिलित कर लिया था । कुछ देर बाद रसूलुल्लाह ने कुछ गोश्त तनाउल फ़रमाया (खाया, हर ऊंट का एक-एक टुकड़ा हांडी में पकाया गया था ।) और हज़रत अली के साथ ही उसका शोरबा भी पिया । कुछ देर बाद आप सवार होकर मक्का तशरीफ़ ले गये । बैतुल्लाह का तवाफ़ फ़रमाया, इसे ''तवाफ़े इफ़ाज़ह'' कहते हैं । और मक्का ही में ज़ुहर की नमाज़ अदा फ़रमाई फिर चाहेज़मज़म (ज़मज़म के कुएं) पर बनू अब्दुल मुत्तलिब के पास तशरीफ़ ले गये । आपने भी एक डोल में से इच्छानुसार पिया ।

आज यौमुन्नहर था अर्थात ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ थी । नबी (सल्ल०) ने आज भी दिन चढ़े चाश्त के समय एक ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया । ख़ुतबे के समय आप खच्चर पर सवार थे और हज़रत अली आपके इरशाद (कथन) लोगों को सुना रहे थे । सहाबा कुछ बैठे और कुछ खड़े थे । इसके पश्चात अय्यामे-तशरीक़ (11, 12, 13 ज़िलहिज्जा) को मिना में मुकीम रहे (ठहरे रहे)। इस दौरान आप हज के मनासिक (विधि) भी अदा फ़रमा रहे थे और लोगों को ''शरीअत'' के आदेश भी सिखा रहे थे । आपने अय्यामे तशरीक़ में भी एक दिन ख़ुतबा (व्याख्यान) दिया । (हज़रत सरा: बिन्ते बनहान (रज़ि०) ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ने हमें रऊस के दिन अर्थात 12 ज़िलहिज्जा को ख़ुतबा दिया ।)

अय्यामे तशरीक़ के अंत पर दूसरे दिन योमुन्नफ़र अर्थात 13 ज़िलहिज्जा को नबी (सल्ल०) ने मिना से कूच फ़रमाया और वादी अबतह के ख़ेफ़ बनी कनाना में फ़रोकश हुए (ठहरे)। दिन का शेष भाग और रात वहीं बिताई और ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ें वहीं पढ़ीं । अलबत्ता इशा के बाद एक नींद सोकर उठे फिर सवार होकर बैतुल्लाह तशरीफ़ ले गये और तवाफ़े वदा फ़रमा आये (विदाई की परिक्रमा कर ली) और अब तमाम मनासिके हज (हज की संपूर्ण विधि) से फ़ारिग़ होकर आपने सवारी का रुख़ मदीना मुनव्वरा की राह पर डाल दिया । इस कारण नहीं कि वहीं पहुंचकर विश्राम करें बल्कि इसलिए कि अब फिर अल्लाह के लिए अल्लाह की राह में नयी जद्दोजेहद का प्रारंभ करें ।

"जिस दिन रूह और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे, कोई न बोलेगा सिवाय उसके जिसे रहमान इजाज़त दे और जो ठीक बात कहे । वह दिन सत्य है, अब जिसका जी चाहे अपने रब की ओर पलटने का मार्ग अपना ले ।"

(क़ुरआन, 78:38-39)

A Well Wisher

KOLKATA

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

इशराक़ियों और योगियों ने यद्यपि मुराक़बा (ध्यान-मग्न) का ढोंग रचाया है और दावा किया है कि हम प्रत्यक्ष के पीछे झांककर परोक्ष का अवलोकन कर लेते हैं, लेकिन सच तो यह है कि उन्होंने अपनी इस खोज की नींव अटकल पर रखी है । वह 'मुराक़बा' वास्तव में अपने अटकल का करते हैं और जो कुछ वे कहते हैं कि हमें दिखायी देता है । उसकी वास्तविकता इसके सिवा कुछ नहीं है कि अटकल से जो विचार उन्होंने बना लिया है, उसी पर ध्यान को जमा देने और फिर उस पर मन का दबाव डालने से उनको वही विचार चलता-फिरता दिखायी पड़ने लगता है ।

पारिभाषिक दार्शनिकों ने क़ियास को शोध का आधार बनाया है जो वास्तव में तो गुमान (अटकल) ही है, लेकिन इस गुमान के लंगड़ेपन को महसूस करके उन्होंने तार्किक प्रमाण और कृत्रिम बौद्धिकता की बैसाखियों पर उसे चलाने का यत्न किया है और इसका नाम 'क़ियास' रख दिया है ।

वैज्ञानिकों ने यद्यपि विज्ञान के क्षेत्र में शोध के लिए ज्ञानात्मक विधि अपनायी मगर पराप्राकृतिक सीमाओं में क़दम रखते ही वे भी ज्ञानात्मक विधियों को छोड़कर अटकल गुमान और अनुमान और तार्किक प्रमाण के पीछे चल पड़े ।

फिर इन सब गिरोहों के अंधविश्वास और अटकलों को किसी न किसी पक्षपात का रोग भी लग गया जिसने उन्हें दूसरे की बात न सुनने और अपने ही प्रिय मार्ग पर मुड़ने और मुड़ जाने के बाद मुड़े रहने पर विवश कर दिया ।

क़ुरआन जिज्ञासा की इस विधि को मूल रूप से ग़लत क़रार देता है । वह कहता है कि तुम लोगों की गुमराही का मूल कारण यही है कि तुम सत्य की खोज का आधार गुमान और अटकल पर रखते हो और फिर पक्षपात की वजह से किसी की समुचित बात सुनने के लिए भी तैयार नहीं होते । इसी दोहरी ग़लती का परिणाम यह है कि तुम्हारे लिए स्वयं सच्चाई को पा लेना तो असंभव था ही, नबियों के लाए हुए दीन को जांचकर सही राय पर पहुंचना भी असंभव हो गया । इसके मुक़ाबले में क़ुरआन दार्शनिक शोध के लिए सही ज्ञानात्मक और बुद्धिपरक तरीक़ा यह बताता है कि पहले तुम वास्तविकता के बारे में उन लोगों का वर्णन खुले कानों से, बिना पक्षपात के, सुनो जो दावा करते हैं कि हम अटकल या 'मुराक़बा' के आधार पर नहीं, बल्कि 'ज्ञान' के आधार पर तुम्हें बता रहे हैं कि वास्तविकता यह है । फिर सृष्टि में जो 'निशानियां, तुम्हारे देखने और अनुभव में आती हैं, उन पर विचार करो, उनकी गवाहियों को एक क्रम लगाकर देखो और खोजते चले जाओ कि इस प्रत्यक्ष के पीछे जिस वास्तविकता की निशानदेही ये लोग कर रहे हैं, उसकी ओर संकेत करने वाली निशानियां तुम्हें इस प्रत्यक्ष में मिलती हैं या नहीं । अगर ऐसी निशानियां नज़र आएं और उनके संकेत भी स्पष्ट हों, तो फिर कोई कारण नहीं कि तुम ख़्वामख़्वाह उन लोगों को झुठलाओ जिनका बयान अवशेष चिह्नों की गवाहियों के अनुसार पाया जा रहा है—यही विधि इस्लामी दर्शन का आधार है, जिसे छोड़कर अफ़सोस है कि मुसलमान दार्शनिक अफ़लातून व अरस्तू के पदचिह्नों पर चल पड़े ।

क़ुरआन में जगह-जगह न केवल इस विचार-पद्धति पर उभारा गया है, बल्कि स्वयं सृष्टि की निशानियों को प्रस्तुत करके उनसे परिणाम निकालने और वास्तविकता तक पहुंचने की मानो विधिवत ट्रेनिंग दी गयी है, ताकि सोचने और खोजने की यह विधि मन में बैठ जाए । चुनांचे इस आयत में भी उदाहरण के रूप में केवल दो निशानियों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया गया है, अर्थात रात और दिन । रात और दिन का यह बारी-बारी आना-जाना वास्तव में सूर्य और धरती के संबंधों में अत्यंत विधिवत परिवर्तन के कारण होता है । यह एक विश्वव्यापी व्यवस्थापक और सारी सृष्टि पर आच्छादित सत्ताधारी शासक के अस्तित्व की खुली निशानी है । इसमें खुली तत्वदर्शिता और स्पष्ट उद्देश्य भी दिखायी पड़ता है, क्योंकि पृथ्वी पर मौजूद तमाम चीज़ों के हित इसी रात और दिन के आने-जाने के साथ जुड़े हुए हैं, इसमें खुली हुई पालनहारी, रहमत और परवरदिगारी की निशानियां भी पायी जाती हैं, क्योंकि इससे यह प्रमाण मिलता है कि जिसने धरती पर ये मौजूद चीज़ें पैदा की हैं, वह स्वयं ही इनके अस्तित्व की ज़रूरतें भी पूरी करता है । इससे यह भी मालूम होता है कि वह विश्वव्यापी व्यवस्थापक एक है और यह भी कि वह खिलंडरा नहीं, बल्कि तत्वदर्शी है और सोद्देश्य काम करता है, और यह भी कि वही उपकारी और प्रशिक्षक होने की हैसियत से बन्दगी (आज्ञापालन) का अधिकारी है और यह भी कि रात व दिन के आने-जाने के तहत जो कोई भी है, वह रब (पालनहार) नहीं, बल्कि मरबूब (पालित) है स्वामी नहीं, दास है । इन पक्की गवाहियों के मुक़ाबले में मुश्रिकों ने अटकल से जो धर्म गढ़ रखे हैं, वे आख़िर किस तरह सही हो सकते हैं ।

वास्तव में जहन्नम एक घात है, सरकशों का ठिकाना, जिसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे । उसके अन्दर किसी ठण्डक और पीने योग्य किसी चीज़ का मज़ा वे न चखेंगे, कुछ मिलेगा तो बस गर्म पानी और घावों का धोवन ।''

(क़ुरआन, 78:21-25)

A Well Wisher

KOLKATA

विभिन्न कलाओं में मुसलमानों का योगदान

■ संकलित

क़ुरआन ने विज्ञान की तरह ही मुसलमानों को दूसरी विभिन्न कलाओं के विकास के लिए प्रोत्साहित किया । नमाज़ों के बीच तथा नमाज़ों से अलग अल्लाह की स्तुति के बखान व सवाब के लिए पवित्र क़ुरआन के पढ़े जाने की आवश्यकता ने स्वर संगीतकला की एक नयी शाखा को विकसित किया । इसके मूल पाठ को सुरक्षित रखने के लिए लेखन कला (Calligraphy) तथा जिल्द बन्दी की ज़रूरत को पैदा की ।

मस्जिदों के निर्माण ने गृह निर्माण व सजावट की कला को बढ़ावा दिया । गृह निर्माण तथा सजावट की कला को धनवान व्यक्तियों की ज़रूरत ने भी आगे बढ़या । शरीर और आत्मा दोनों में संतुलन बनाए रखने के लिए इस्लाम ने हर क्षेत्र में मध्यमार्ग की शिक्षा दी, जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति प्रदत्त प्रतिभाओं का सही दिशा में विकास हुआ तथा मानव व्यक्तित्व ने चहुमुखी उन्नति की ।

इमाम मुस्लिम की 'सहीह' तथा इमाम इब्ने हंबल की 'मुसनद' में हमें नबी (सल्ल०) की एक दिलचस्प हदीस मिलती है । 'अल्लाह जमील (सुन्दर रूपवान) है तथा जमाल (सौंदर्य) को पसन्द कर ' है ।' एक दूसरी हदीस में है, 'नफ़ासत (उत्तमता, शुद्धत.) हर चीज़ के लिए है । किसी की ज.न लो तो वह भी अच्छे तरीक़े से लो ।' पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है, 'और हमने दुनिया के आसमान (क़रीबी आकाश) को प्रदीपकों से सजाया (67:5) तथा 'निश्चय ही धरती पर जो कुछ है, हमने उसकी शोभा बनाई है, ताकि हम उनकी परीक्षा लें कि कौन उनमें कर्म की दृष्टि से सबसे अच्छा है ।' (14:7) क़ुरआन तो यहां तक आदेश देता है, ऐ! आदम की औलाद इबादत के हर अवसर पर अपनी शोभा को धारण कर लो ।' (7:31)

नबी (सल्ल०) के जीवनकाल की एक घटना हमारे सामने है जो कि हमारा पथ-प्रदर्शन करती है : एक दिन आपने एक क़ब्र का भीतरी भाग देखा, जो कि ठीक से समतल नहीं था । आपने उसे ठीक कर देने के लिए कहा, और कहा कि इससे मृतक को न तो कोई हानि पहुंचेगी और न कोई लाभ । लेकिन जीवित आंखों को यह ज़्यादा भला मालूम देगा । अल्लाह इस बात को पसन्द करता है कि काम को सुथराई व निपुणता से किया जाए ।'

(इब्ने सअद 8,156)

ललित कलाओं के प्रति आदमी में प्राकृतिक रूप से रुचि होती है । दूसरी सभी ईश्वर प्रदत्त क्षमताओं की ही तरह इस्लाम कलात्मक प्रतिभा का भी संतुलित व समन्वित विकास चाहता है । ध्यान रहे इस्लाम त्याग तथा आध्यात्मिक अभ्यासों के क्षेत्र में भी 'अति' की अनुमति नहीं देता ।

मस्जिद के सबसे पहले मिम्बर में, जो कि नबी (सल्ल०) के लिए बनाया गया था, अनार जैसे दो गोले लगे हुए थे और नबी (सल्ल०) के दो छोटे नवासे (इमाम हसन व हुसैन रह०) उनसे खेला करते थे । यह लकड़ी पर कटाव व नक़्क़ाशी का आरंभ था । तदुपरांत क़ुरआन की प्रतियों को रंगों से सुसज्जित किया जाने लगा तथा उनकी जिल्दबन्दी पर भी बड़ा ध्यान दिया गया । संक्षेप में यह कि इस्लाम कलात्मक विकास की राह में हरगिज़ कोई बाधा नहीं डालता । केवल एक ही, चीज़ से रोका गया है, और वह है (आदमी सहित) जीवित चीज़ों की आकृतियां बनाना ।

नबी (सल्ल०) ने इस पर रोक लगाई है । इस रोक का कारण जहां तात्विक और आध्यात्मिक है, वहीं मनोवैज्ञानिक, जीव-वैज्ञानिक तथा सामाजिक भी हैं । प्राणी-जगत, वनस्पति-जगत तथा खनिज-जगत की संरचना में प्राणीजगत का विस्तार सर्वाधिक है, दूसरा स्थान वनस्पति- जगत का

है और सबसे अंतिम खनिज-जगत का । अत: अपने पैदा करने वाले के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धा व्यक्त करने के लिए मानव ईश्वर को सर्वोच्च कृति का दर्जा देता है, लेकिन इसके प्रदर्शन के लिए वह निम्न श्रेणी के प्रतीकों से संतुष्टि प्राप्त करता है ।

मनोवैज्ञानिकों का मत है कि समस्त जगत में प्राणी जगत को प्राप्त विशिष्ट स्थिति को देखते हुए (जो उसे चलने-फिरने तथा मानव में विचार करने तथा नयी-नयी चीज़ों की खोज लगाने की क्षमता के कारण प्राप्त है) इन्सान को जीवों की छवि दोहरे प्रलोभनों में डाल देती है, जिनसे आदमी ज़्यादा बच नहीं सकता । उनमें पहला प्रलोभन तो यह कि आदमी में यह विश्वास पैदा हो जाता है कि वह सृष्टि करता है (शून्य से बनाता है), जबकि वास्तव में वह केवल निर्माण करता है, यह रूप-परिवर्तन करता है (इसके उदाहरण स्वरूप यूनान के मूर्तिकार का प्रसिद्ध वृत्तांत प्रस्तुत किया जा सकता है जो कि अपने ही बनाए हुए बुतों पर दीवाना हो गया था)।

दूसरा भ्रम यह होता है कि आदमी इन बेजान प्रतीकों को दिव्य शक्ति का सजीव आदर्श रूप मानकर उनकी पूजा करना शुरू कर देता है, हालांकि इन प्रतीकों में न आत्मा होती है न अन्य गुण (उदाहरण के लिए मूर्तिपूजा का इतिहास देखिए तथा आजकल राष्ट्रीय व अन्य नायकों के प्रति लोगों का रवैया)। कलात्मक प्रतिभा पर चित्रकारी तथा बुतों आदि के बनाने पर लगी पाबन्दी से उसमें अन्य क्षेत्रों में अपनी कला का प्रदर्शन करने का उत्साह पैदा होता है । यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसे वृक्ष में नयी-नयी शाखाओं के फूटने का क्रम तीव्र करने के लिए उसकी छंटाई की जाती है ।

अलबत्ता इस क्षेत्र में कुछ अपवाद भी हैं । जैसे बच्चों के खिलौने तथा बिछाने की चादरों व क़ालीनों आदि पर चित्रकारी । इन दोनों चीज़ों को नबी (सल्ल॰) ने स्पष्ट रूप से गवारा किया है । इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक ज़रूरत के लिए चित्रकारी (जैसे डॉक्टरों के लिए शरीर-रचनाओं आदि के चित्र) सुरक्षा-सुविधा के लिए पुलिस द्वारा फ़ोटो आदि लेना तथा अन्य ऐसे ही आवश्यक कार्यों के लिए चित्रकारी पर पाबन्दी नहीं लगाई जा सकती ।

इतिहास साक्षी है कि जानदार चीज़ों के चित्रादि पर पाबन्दी कर मुसलमानों में सामान्य रूप से कला के विकास

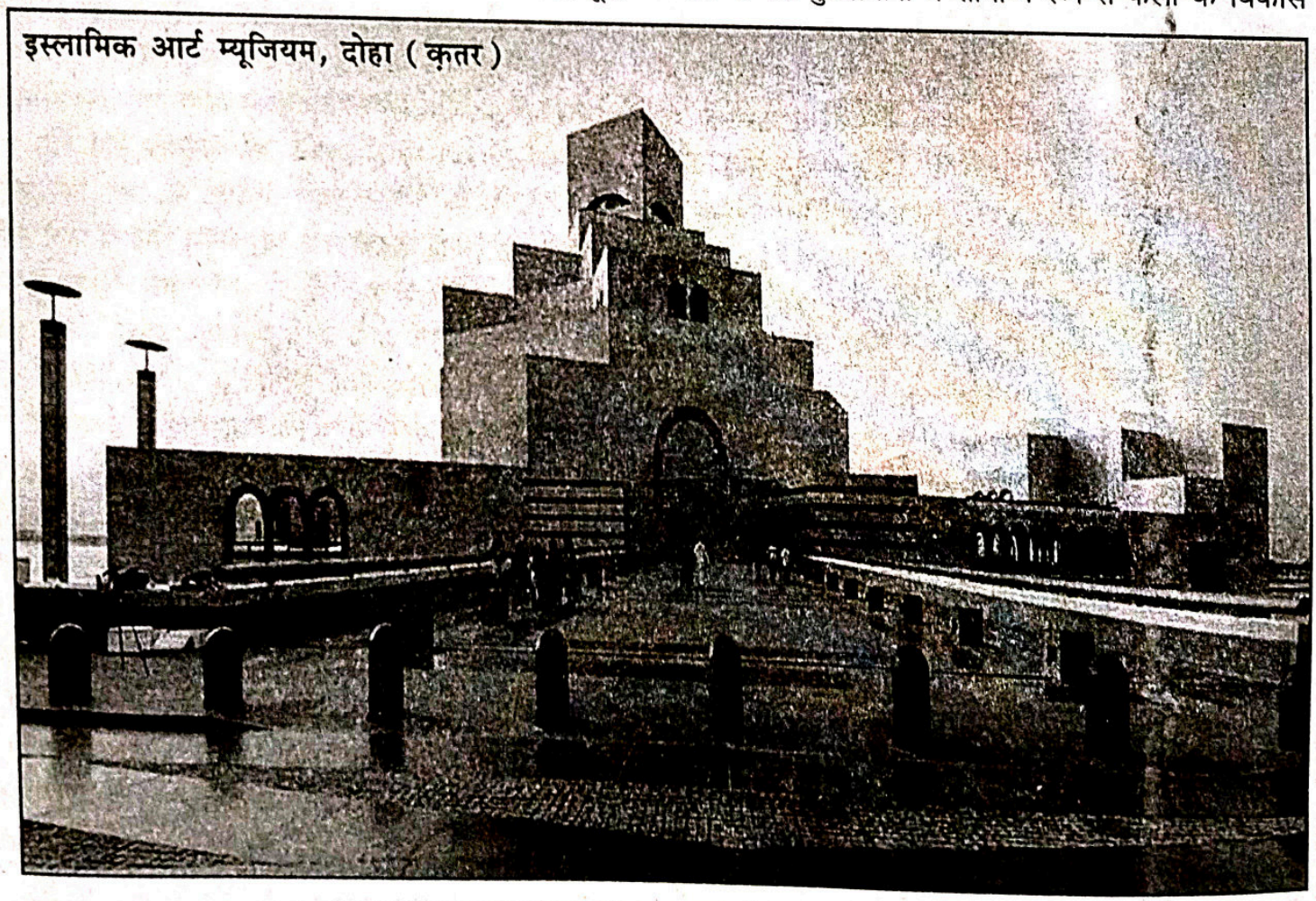

इस्लामिक आर्ट म्यूजियम, दोहा (क़तर)

पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा । इसके बजाय ग़ैर-तस्वीरी कला के विकास में बड़ा आश्चर्यजनक विकास हुआ ।' (क़ुरआन, 23:34) ने ख़ुद मस्जिदों के निर्माण की महिमा का वर्णन किया है । मक्का में नबी (सल्ल०) की मस्जिद यरुशलम का गुंबद, इस्तम्बोल की मस्जिदे-सुलैमानी, आगरा का ताजमहल तथा गरनाता का अलहमरा महल तथा अन्य अनेक भवन अवशेष अपनी निर्माण-कला तथा चित्र-कला में संसार की किसी भी सभ्यता के उच्चतम आदर्श प्रतीक धरोहरों से कम नहीं है ।

हाथ से लिखने की सुन्दर कला (Calligraphy) मुसलमानों की ही विशेषता है । इस कला ने लिखाई को कला का एक नमूना बना दिया । अत: यह कपड़ों तथा अन्य चीज़ों की सजावट की जगह उपयोग में लाई जाती है । इसके अनेक ऐसे मुंह बोलते नमूने हैं कि जिनकी शान व सुन्दरता बस देखने के योग्य है, उनका वर्णन लिखकर नहीं किया जा सकता ।

एक दूसरी कला जो कि मुसलमानों में ही सीमित है वह क़ुरआन का कलापूर्ण मधुर आवाज़ से पढ़ना है । पद्य में न होने के बावजूद और बिना साज-संगीत की सहायता के, क़ुरआन को सुन्दर कलापूर्ण आवांज़ में नबी (सल्ल०) के समय से ही पढ़ा जाता रहा है । अरबी भाषा की यह विशेषता है कि इसके गद्य में भी एक ऐसी लय तथा सुरीलापन व मिठास है, जो दूसरी भाषाओं के पद्य में भी मुश्किल से मिलते हैं, जिन लोगों ने किसी अच्छे 'क़ारी' को क़ुरआन पढ़ते या अज़ान देते सुना है वे जानते हैं कि मुसलमानों की इस विशेष कला का आकर्षण अद्वितीय है ।

जहां तक अन्य प्रचलित सांसारिक साज-संगीत का मामला है, तो उसने भी मुस्लिम शासकों तथा अन्य दौलतमंद लोगों की सरपरस्ती में काफ़ी उन्नति की है । 'रसायल-इख़्वान-अस्सफ़ा' के विद्वान लेखक अल-फ़राबी, अबू-सीना तथा अन्य अनेक लोगों ने इस विषय पर न केवल यादगार कृतियां छोड़ी हैं, बल्कि यूनानी तथा भारतीय संगीत में सराहनीय सुधार भी किये हैं । उन्होंने संगीत के विभिन्न सुरों को दर्शाने के लिए अलग-अलग आकृतियां ईजाद कीं, तथा विभिन्न साज़ों का सविस्तार वर्णन किया है । विभिन्न श्रेणी के पद्य को गाने के लिए तथा विभिन्न अवसरों, जैसे, दुख-सुख आदि के समय कौन-सा साज़ बजाया जाए ? इस विषय में भी कार्य किया गया ।

जहां तक कविता का संबंध है, नबी (सल्ल०) ने यह स्वीकार किया है : 'ऐसी बहुत-सी कविताएं हैं जो ज्ञान से भरपूर हैं और ऐसे अनेक ख़ुत्बे (प्रवचन) हैं जिनका असर जादू के समान होता है ।' क़ुरआन ने नैतिकता से गिरी हुई कविताओं को निरुत्साहित किया है ।

इस दिव्य निर्देश का पालन करते हुए ख़ुद नबी (सल्ल०) ने अपने काल के सर्वोच्च कवियों को अपने पास जमा किया और उनको सही रास्ता दिखाया तथा उनको वांछित सीमा से अवगत कराया । इस प्रकार आप (सल्ल०) ने इस प्राकृतिक प्रतिभा के अच्छे और बुरे उपयोग के बीच अन्तर को स्पष्ट कर दिया । सभी कालों तथा भाषाओं में मुसलमान कवियों की कविताओं के ख़ज़ाने मिलते हैं ।

सार यह कि कला के क्षेत्र में मुसलमानों का बहुत बड़ा योगदान है । इसके अवांछित पक्षों से बचते हुए इसके उत्तम पहलुओं को परवान चढ़ाया तथा अनेक नयी चीज़ों की खोज व संरचनाएं कीं । चलते-चलते दो विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी की जा सकती है–

(1) यदि मुसलमानों की अपनी कोई अलग सभ्यता न रही होती–वह सभ्यता जो नबी (सल्ल०) ने उनको प्रदान की और जो बड़ी तीव्रगति से फैली–तो निस्संदेह वे उन सभ्यताओं में डूबकर अपनी पहचान खो चुके होते, जिन्होंने परवर्ती कला में उन पर राजनैतिक आधिपत्य प्राप्त कर उनको अपने अधीन कर लिया ।

(2) आदर्श इस्लामी राज्यों के नागरिकों में बहुत से ग़ैर-मुस्लिम लोग थे, जैसे ईसाई, यहूदी, अग्नि-पूजा करने वाले ब्राह्मण और बौद्ध आदि ।

इनमें से हर एक की अपनी अलग सभ्यता व संस्कृति और परिपाटियां थी । ये विभिन्न संप्रदाय आपस में भले ही एक-दूसरे से सहयोग न करते हों लेकिन वे अपने राजनैतिक मालिकों अर्थात मुसलमानों के साथ पूरा सहयोग करते, जिससे मुसलमानों को यह लाभ पहुंचा कि वे कला और विज्ञान के क्षेत्र में उन सब के कार्यों से लाभ उठाते रहे और किसी ऐसे कार्य में दोबारा मेहनत से बचे रहे जिसमें पहले ही कोई खोज कार्य या प्रगति हो चुकी थी । इससे उनके इन सब संप्रदायों द्वारा अर्जित ज्ञान व दक्षता में समन्वय स्थापित करने का भी अवसर मिला, जिससे विज्ञान और कला को आगे बढ़ने में बड़ी सहायता मिली ।

'दही खट्टी होती है' क्यों ?

अंग्रेज़ीनुमा हिन्दी पढ़कर आ रहे विद्वान हिन्दी के साथ जाने-अनजाने उसके मूलरूप को बदरंग कर रहे हैं जिससे लिंग वचन और व्याकरण गड़बड़ा रह है ।

■ सी॰ के॰ रहमानी

भाषा में लचीलापन तो ठीक और यह भी ठीक है कि किसी भी भाषा को नये-नये शब्दों को आत्मसात करते रहना चाहिए लेकिन भाषा के मूलरूप से खिलवाड़ नहीं होनी चाहिए । आजकल भाषा के साथ वह हो रहा है जो नहीं होना चाहिए । भाषा के सरलीकरण के नाम पर कुछ शब्दों का तो अस्तित्व ही लगभग ख़त्म हो गया है तो कुछ शब्द ख़त्म होने के कगार पर हैं ।

■ भाषा के सरलीकरण के नाम पर कुछ शब्दों का तो अस्तित्व ही लगभग ख़त्म हो गया है तो कुछ ख़त्म होने के कगार पर हैं ।

■ कुछ विद्वान पत्रकार पद को भी लिंग में परिवर्तित कर देते हैं, जैसे कांग्रेस 'अध्यक्षा' सोनिया गांधी ने..., अगर किसी देश में महिला राष्ट्रपति है तो क्या उन्हें राष्ट्रपत्नी लिखेंगे ।

मैं रास्ते में जा रहा था वह उधर से आ रहे थे । वह गुस्से से तमतमा रहे थे । मैंने कहा, पंडित जी प्रणाम ! उन्होंने प्रणाम का जवाब दिया मगर गुस्से में ही । मैंने पूछा, पंडिजी क्यों गुस्से से उबले जा रहे हो ? उन्होंने तमतमाते हुए कहा अख़बार और चैनल वाले हिन्दी के साथ एक तरह से व्यभिचार कर रहे हैं । व्याकरण और लिंग सब गड़बड़ा रहा है । किसी को इस बात से कोई मतलब नहीं कि क्या कह रहे हैं और क्या लिख रहे हैं । मीडिया वाले लिखते और बोलते हैं 'दही खट्टी है ।' ये बताओ दही स्त्री लिंग कब से हो गया ? क्या इस बात पर ऐतिराज नहीं होना चाहिए कि स्त्रीलिंग को पुल्लिंग और पुल्लिंग को स्त्रीलिंग कर दिया जाता है ।

जब प्याज महंगा हुआ तो चैनलों पर एंकर चिल्ला रहे थे प्याज महंगी हो गयी । अख़बार भी यही लिख रहे थे प्याज महंगी हो गयी । अब बताओ प्याज का लिंग ही बदल दिया । विद्यालय बुनियादी शिक्षा का सबसे मज़बूत स्तंभ होता है । वहां से हुई चूक जल्दी ठीक नहीं होती है । अलीगढ़ ज़िले के गड़राना गांव के प्राथमिक स्कूल में लिखा था शिक्षार्थ 'आईये' सेवार्थ 'जाईये'। यहां शिक्षा ले रहे छात्र आगे चलकर 'आईये' और 'जाईये' ही लिखेंगे ।

पंडिजी इस बात पर अपना माथा पीट रहे थे कि पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ 'हो गया' । इसी तरह कुछ विद्वान पत्रकार स्कूल को स्त्रीलिंग बोलने-लिखने में झिझकते नहीं हैं । पंडिजी का गुस्सा शांत होने में नहीं आ रहा था । वह कह रहे थे 'मुझको गुस्सा बहुत आती है'। नशीली चीज़ खिलाने के बाद गिरोह के लोग 'चलती' ऑटो से फेंक देते थे । एक जगह पढ़ा 'लड़की का नाक छेद दिया है ।' बताइए यह कौन-सी हिन्दी है । एक राष्ट्रीय अख़बार की स्कैनिंग करने वाला एक पत्रकार लिखवाया करते थे कि लुटेरों ने गैंग 'बना ली' है । पंडिजी कहने लगे मैं भाषाविद भले ही न सही, मगर हमने भी हिन्दी 'पढ़ा' नहीं 'पढ़ी' है । वे कहने लगे एक चैनल पर एक धारावाहिक आ रहा है उसका नाम है 'मेरा ससुराल'। अब बताइए, ससुराल को भी पुल्लिंग कर

दिया जबकि शुरू से ही ससुराल स्त्रीलिंग है । कुछ विद्वान झनकार को 'झंकार' और इनकार को 'इंकार' लिख रहे हैं ।

पंडिजी बोले कुछ विद्वजन कोर्ट, रोड और तार को भी स्त्री का चोगा पहना रहे हैं । सोचानुसार, मूर्ती, प्रस्तुती, श्रद्धांजली भी लिख रहे हैं । हरिदास को कुछ विद्वान 'हरीदास' लिखने में संकोच नहीं कर रहे । हरी घास, साग-सब्ज़ियां, पत्तियां होती है । हरि भगवार के लिए होता है इसलिए लोग अपना नाम भगवान के नाम पर यानी हरि...रखते हैं न कि हरियाली के नाम पर ।

'आपका रजिस्ट्री मिला ।' 'जान से मारने की धमकी दिया ।' एक राष्ट्रीय अख़बार में 'मामला सी॰एम॰ या मंत्री से जुड़ा होता हो तो राष्ट्रपति के पास सिफ़ारिश 'भेजना' होता है को पढ़कर पंडिजी ख़फ़ा दिखायी दिए । कहने लगे सिफ़ारिश तो भेजी जाती है भेजनी होती है । पहले अंग्रेज़ी की उच्चारण भारत के हिसाब से होता था लेकिन आज अंग्रेज़ों के हिसाब से हो रहा है । पहले कैरियर लिखा जाता था लेकिन अब अंग्रेज़ी के हिसाब से कॅरियर लिखने लगे हैं । लोग ननद को नंद लिखने लगे हैं । 'लैंडलाईन' 'मोबाईल' 'पाईप' 'लाईसैंस' लिखने में भी गुरेज नहीं कर रहे हैं । कई अख़बार में शब्दों को बहुवचन बनाने के लिए 'टकरावों', 'व्यवस्थाओं' 'क़ानूनों' 'आदेशों' 'निर्देशों' 'ज़मीनों' और 'माफ़ियाओं' लिख रहे हैं, जबकि उपरोक्त सभी शब्द अपने आप में बहुवचन भी हैं । महिला नेता को तो नेत्री लिखना आम बात हो गयी है । कुछ विद्वान पत्रकार पद को भी लिंग में परिवर्तित कर देते हैं । जैसे कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने...। अगर किसी देश में महिला राष्ट्रपति है तो क्या उन्हें राष्ट्रपत्नी लिखेंगे ।

पहले मुक़द्दमा, सम्मन, ठप्प की जगह पर मुक़दमा, समन और ठप लिखे जाने लगा है । इसी तरह पहले आधे 'न्' और आधे 'ण' का ख़ूब चलन था लेकिन उसकी जगह बिंदी ने ले ली है । जैसे पहले कान्ति, चान्द, मण्डी, चण्डीगढ़ लिखा जाता था लेकिन अब कांन्ति, चांद, चंडीगढ़ लिखा जाने लगा है । चलो इसे भाषा का सरलीकरण माना जा सकता है ।

मैंने उनका ग़ुस्सा शांत करने की कोशिश की कहा, 'कभी-कभी एंकरों और पत्रकारों पर क्षेत्रीय बोली हावी हो जाती है । पंजाबी बोली में कई शब्दों का लिंग वचन बदल जाता है ।

हरियाणा में हिन्दी का और भी कचूमर निकाला जा रहा है । धर्मवीर को 'धर्मबीर' और वीरता को 'बीरता' लिख रहे हैं । इसी प्रकार 'आदेश की अनुपालन करनी होगी ।' जबकि होना चाहिए आदेश का अनुपालन करना होगा या अनुपालन न करने पर कार्रवाई होगी । हैरत की बात तो यह कि अख़वार भी 'अनुपालन करनी होगी' लिख रहे हैं ।

पंडिजी कह रहे थे टी॰वी॰ समाचारों में तो फिर भी चल जाएगा क्योंकि वहां सेकेंडों में बात आयी गयी हो जाती है लेकिन अख़वार तो दस्तावेज़ है । अख़वार 'स्कूल' का काम करते हैं । उससे लोग सीखते हैं । लोग अख़वार में लिखे शब्द को उदाहरण के रूप में पेश करते हैं कि देखो अख़वार में फलां शब्द ऐसा लिखा है । जब आप ग़लत लिखना शुरू कर देंगे तो कल वह चलन में आ जाएगा, जो भाषा के साथ अन्याय है ।

"ज़माने की क़सम, इन्सान वास्तव में घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए, और अच्छे कर्म करते रहे, और एक-दूसरे को हक़ की नसीहत और सब्र की ताकीद करते रहे ।"

(क़ुरआन, 103:1-3)

A Well Wisher

KOLKATA

ख़तरे में भारतीय लोकतंत्र ?

■ प्रेमशंकर झा

जिस समय मैं यह लिख रहा हूं, देश एक बार फिर 25 जून, 1975 को इंदिरा गांधी सरकार द्वारा भारत पर लगाए गये आपातकाल (इमरजेंसी) को याद कर रहा है, जिसे 21 महीने बाद 21 जून, 1977 को हटा दिया गया था । हम में से उन लोगों ने जिन्होंने उन दो वर्षों के दौरान सेंसरशिप, सार्वजनिक बहसों के लगभग ख़ात्मे और एक मद्धम से मगर हर जगह छाए डर के माहौल को महसूस किया है, वे कभी भी इतिहास के इस अध्याय को नहीं भुला पाएंगे ।

जब देश पर आपातकाल लगाया गया था उस समय आज के भारत की तीन चौथाई आबादी का जन्म भी नहीं हुआ था और आज के हर दस में से 9 भारतीय इतने बड़े नहीं थे कि उस समय हो रही चीज़ों के परिणामों का अंदाज़ा लगा पाते । इसलिए इतने साल बीत जाने के बाद लोगों की चेतना पर आपातकाल के निशान धुंधला गये हैं और इसे याद किया जाना एक रस्मअदायगी बन गया है ।

आज की सामान्य समझ यह है कि आपातकाल एक व्यक्ति के सनक की सीमा तक पहुंचे अहंकार का नतीजा था । इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी को चुनावों में धांधली करने का दोषी क़रार दिया था । क़ानून के आदेश के अनुसार उन्हें अपने पद से इस्तीफ़ा देना होता और संसद से बाहर निकलना पड़ता, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया । वे आपातकाल हटाने पर भी तब मजबूर हुईं, जब उन्होंने महसूस किया कि उनकी अपनी ही पार्टी आपातकाल को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ाते जाने के पक्ष में नहीं थी ।

इस वाक़िये ने लंबे समय में इस यक़ीन को जन्म दिया है कि आपातकाल ने एक अच्छा काम यह किया कि इसने लोगों को अपनी लोकतांत्रिक आज़ादी के महत्व को समझाया और आने वाली सरकारों को यह सबक़ देकर गया कि भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे हुए देश में अनिश्चितकाल के लिए तानाशाही शासन चलाना नामुमकिन है । इसलिए यह बात थोड़ी विरोधाभासी लगेगी, मगर एक तरह से इंदिरा गांधी ने भारत के लोकतंत्र को हमेशा के लिए सुरक्षित कर दिया ।

लेकिन, इस आराम देने वाले यक़ीन की बुनियाद बालू पर पड़ी है । बीतते समय के साथ ऐसे दस्तावेज़ और संस्मरण सामने आये हैं, जो ये बताते हैं कि इंदिरा गांधी की मंशा कभी भी आपातकाल को स्थायी तौर पर बनाए रखने की नहीं थी ।

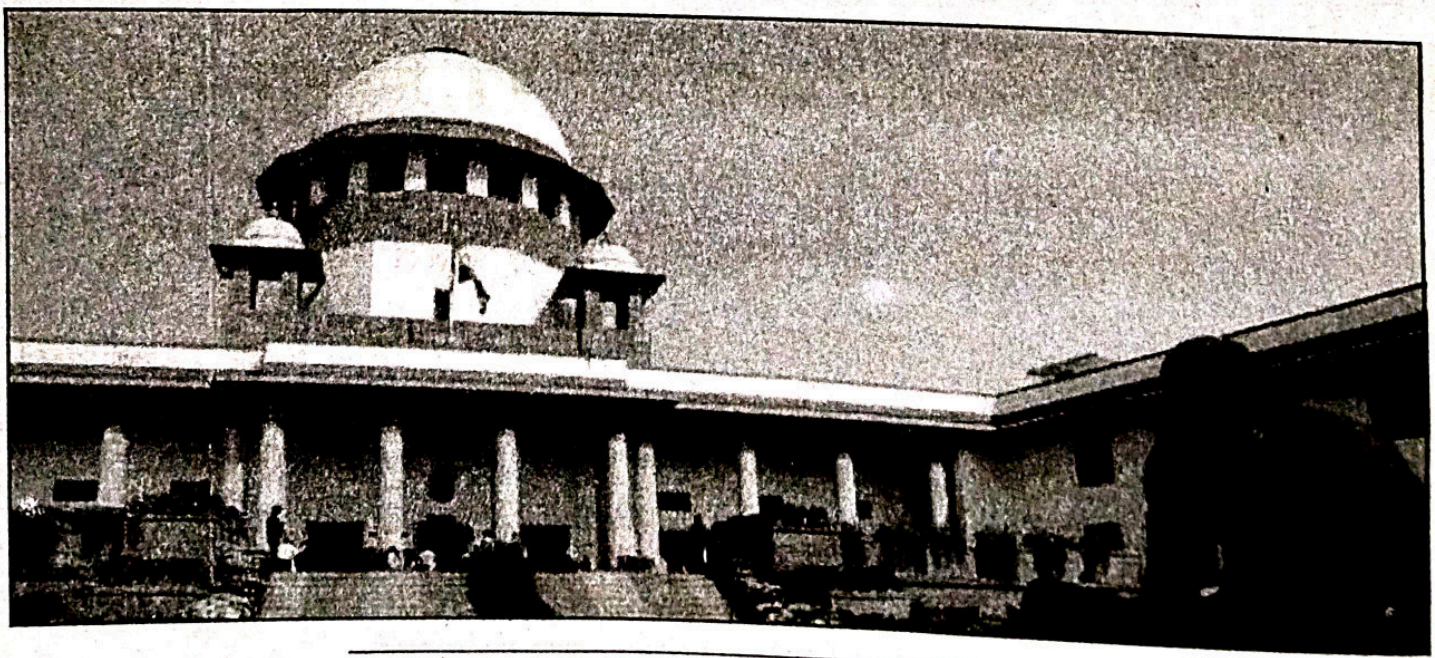

समाधान की खोज

इसके साथ ही वक़्त के गुज़रने के साथ वे ज़्यादातर सबक़ भुला दिये गये हैं, जिन्हें देश ने उस अनुभव से सीखा था । आज हम एक बार फिर अपने लोकतंत्र को लेकर लापरवाह ढंग से निश्चिंत हो गये हैं । लेकिन, सुरक्षित होने की बात तो दूर, यह एक बार फिर ख़तरे में है और यह पहले के किसी भी ख़तरे से अलहदा है । लेकिन ऐसा लगता है कि कोई भी इस ख़तरे से वाक़िफ़ नहीं है ।

यह सही है कि इलाहाबाद हाईकोई का फ़ैसला आपातकाल का कारण बना, मगर इस वजह से नहीं कि इसने इंदिरा गांधी के शासन पर तत्काल कोई ख़तरा पैदा कर दिया था । हाईकोर्ट के फ़ैसले के बाद उन्हें तुरंत अपनी कुर्सी छोड़ने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस कृष्ण अय्यर ने उन्हें संसद में शक्ति परीक्षण के बग़ैर तब तक प्रधानमंत्री के तौर पर काम करने की इजाज़त दे दी थी, जब तक उनके द्वारा की गयी अपील की सुनवाई सुप्रीम कोर्ट की फुल बेंच (संपूर्ण पीठ) द्वारा नहीं हो जाती। सुप्रीम कोर्ट की यह फुल बेंच गर्मियों की छुट्टी के बाद बैठने वाली थी ।

हक़ीक़त यह है कि इंदिरा गांधी को देश में आपातकाल लगाने की सलाह बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर रे ने एक चिट्ठी लिखकर 8 जनवरी, 1975 को दी थी । यानी इलाहाबाद हाईकोर्ट के फ़ैसले के छह महीने पहले । रे ने इस आधार पर यह सिफ़ारिश की थी कि देश में फैल रही अराजकता और देश भर में शासन को चरमराने से रोकने के लिए यह ज़रूरी हो गया था ।

एक साल पहले 'आउटलुक' पत्रिका में छपे एक लेख में रे पर यह आरोप लगाया गया था कि जब उन्होंने यह सलाह दी, तब देश में कोई संकट नहीं था, लेकिन ये बात हक़ीक़त से परे है ।

रे ने यह सलाह तत्कालीन रेल मंत्री ललित नारायण मिश्रा की हत्या के सिर्फ़ पांच दिनों बाद दी थी । मिश्रा की हत्या बिहार में एक जनसभा के दौरान डायस के नीचे बम रखकर की गयी थी । एक ऐसी पीढ़ी को जो टेलीविज़न और कंप्यूटर के परदों पर डरावनी सार्वजनिक हत्याओं और बमबारियों को देखने की अभ्यस्त हो गयी है, यह कोई बड़ी घटना नहीं लगेगी ।

लेकिन ये वे दिन थे, जब लीला ख़ालिद ने आकाश में पहले हवाईजहाज़ को हाइजैक नहीं किया था और सिर्फ़ दो पुलिस जवान 1, सफ़दरजंग रोड, जो श्रीमती इंदिरा गांधी का आवास था, की सुरक्षा में तैनात होते थे । इसलिए मिश्रा की



मौत से सरकार को लगने वाले धक्के को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए ।

आपातकाल की घोषणा की पृष्ठभूमि

यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मिश्रा पर हुआ हमला देश के तत्कालीन माहौल में चिंताजनक संकेत दे रहा था । हमले की यह घटना 13 महीनों से देश में चल रहे आंदोलनों के बाद हुई थी, जिनकी शुरुआत दिसंबर, 1973 में गुजरात के कांग्रेसी मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल के ख़िलाफ़ छात्रों के बग़ावत से हुई थी । इस बग़ावत को इस यक़ीन ने जन्म दिया था कि सूखे और कठिनाई के दौर में पटेल ने अपने परिवार और मित्रों को फ़ायदा पहुंचाने के लिए खाने के तेल की क़ीमतों में गड़बड़ी की है ।

श्रीमती गांधी ने पहले तो चिमनभाई पटेल का इस्तीफ़ा दिलवाकर और राष्ट्रपति शासन लगाकर विधानसभा को स्थगित करके, छात्रों को शांत करने की कोशिश की । लेकिन, यह क़दम एक बड़ी रणनीतिक चूक साबित हुई । इस फ़ैसले को इंदिरा गांधी की कमज़ोरी समझकर पूरा विपक्ष, जिसमें कम्युनिस्ट से लेकर जनसंघ और कांग्रेस (ओ) तक, छात्रों के आंदोलन में शामिल हो गया और उसने गुजरात विधानसभा को भंग करके फ़िर से चुनाव कराने की मांग रखी ।

जब इस मांग के समर्थन में मोरारजी देसाई अनशन पर बैठ गये, तब 168 सदस्यों वाली विधानसभा में 148 सीट होने के बावजूद इंदिरा गांधी दूसरी बार झुक गयीं और उन्होंने मार्च, 1974 में विधानसभा को भंग कर दिया ।

यह उनकी दूसरी ग़लती साबित हुई । इसने विपक्ष के हौसलों को और बढ़ा दिया और जो आंदोलन शिकायतों की वैध अभिव्यक्ति के तौर पर शुरू हुआ था, वह बल प्रयोग के द्वारा सत्ता परिवर्तन की अवैध कोशिश में तब्दील हो गया।

कुछ दिनों के भीतर ही यह आंबोलन बिहार में फैल गया । जून, 1974 तक यह कर्नाटक, यू॰पी॰ और पंजाब में फैल चुका था । उस समय इंदिरा गांधी के मुख्य सचिव पी॰एन॰ धर के शब्दों में, 'किसी ने भी क़ानून के शासन के ख़ात्मे और सरकार बदलने के संवैधानिक तरीक़े को नकारने पर आंसू का एक क़तरा तक नहीं बहाया ।'

कभी पंडित नेहरू और उनके परिवार के क़रीबी सहयोगी रहे बुज़ुर्ग समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण ने जो भूमिका निभाई, उससे इंदिरा गांधी ख़ासतौर पर और कुपित हुईं । जे॰पी॰ ने फ़रवरी, 1974 में गुजरात का दौरा किया था और वहां नवनिर्माण आंदोलन से प्रभावित हुए थे । जब अप्रैल, 1974 में नये बने संगठन, बिहार राष्ट्रीय संघर्ष समिति ने उनसे अप्रैल, 1974 में संपर्क किया, तो वे झट से ख़ुशी-ख़ुशी आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए तैयार हो गये । धर के मुताबिक़ एल॰एन॰ मिश्रा की हत्या ने श्रीमती गांधी के इस संदेह को और मज़बूत करने का काम किया कि उनकी सरकार को गिराए जाने की साज़िश रची जा रही है । उनका यह शक तब यक़ीन में बदल गया, जब दो आनंदमार्गियों ने (2014 में जिनकी सारी अपीलें ख़त्म हो गयीं) ने मुख्य न्यायाधीश ए॰एन॰ रे, (जिन्हें श्रीमती गांधी ने सुप्रीम कोर्ट में उनसे तीन वरिष्ठ जजों के ऊपर वरीयता देते हुए मुख्य न्यायाधीश बनाया था) की हत्या करने की कोशिश की । लेकिन, इस घटना के बाद भी इंदिरा गांधी को यह नहीं लगा कि देश में आपातकाल लगाने की ज़रूरत है ।

दो और झटकों ने उनको अपना मन बदलने की वजह दी । पहला झटका 12 जून को गुजरात विधानसभा चुनावों में विपक्ष की अप्रत्याशित जीत के तौर पर लगा । दूसरा, जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फ़ैसले के बाद दिल्ली के रामलीला मैदान में जे॰पी॰ ने जनता से तब तक सरकार से असहयोग करने और उसे कर अदा करने से इन्कार करने का आह्वान किया, जब तक इंदिरा गांधी सत्ता छोड़ नहीं देतीं ।

इन दो घटनाओं ने इंदिरा गांधी को यह यक़ीन दिला दिया कि पूरे देश में एक क़िस्म का जनोन्माद फैल रहा है और क़ानून और तय प्रक्रिया का पालन करने की विपक्ष की कोई मंशा नहीं है । न ही विपक्ष उनकी अपील पर सुनवाई पूरी होने तक उन्हें सरकार के मुखिया के तौर पर काम करने देने को ही तैयार है ।

इस बात के पक्ष में स्पष्ट सबूत हैं कि इंदिरा गांधी की कभी भी आपातकाल को स्थायी तौर पर लगाए रखने की मंशा नहीं थी । स्वर्गीय के॰सी॰ पंत ने 1980 के दशक के अंत में मुझसे कहा था कि 25 जून, 1975 की कैबिनेट

बैठक के बाद उन्होंने बग़ैर किसी लाग-लपेट के उनसे (इंदिरा से) पूछा था कि क्या आपातकाल अस्थायी होगा? इस पर इंदिरा गांधी का जवाब था– ऑफ़ कोर्स (बिल्कुल)। इस जवाब में थोड़ा-सा चिड़चिड़ापन इस भाव का मिला हुआ था कि वे ऐसा संदेह कैसे कर सकते हैं ।

पी॰एन॰ धर ने अपने संस्मरण में इसका ज़िक्र किया है कि 1976 के अंत के महीनों में, इंदिरा गांधी को ये पता था कि बंसीलाल और वी॰सी॰ शुक्ला जैसे चाटुकारों से घिरे संजय गांधी जनवरी, 1977 के आगे भी लोकसभा का कार्यकाल बढ़ाने के पक्ष में थे । लेकिन, उन्हें नहीं लगता था कि यह समझदारी भरा क़दम होगा । इसलिए उन्होंने धर को इस विषय पर एक नोट तैयार करने के लिए कहा था।

इस नोट में धर ने जल्दी चुनाव कराने की सलाह दी थी क्योंकि आपातकाल से हुआ फ़ायदा समाप्त हो गया था और घाटा बढ़ने लगा था । धर ने तब यह महसूस किया कि वे चुनाव, चुनाव की व्यवस्था और संवैधानिक सुधारों को लेकर की जाने वाली चर्चाओं से संजय को अलग रख रही हैं । इसलिए जब उन्होंने 18 जनवरी को आपातकाल हटाने और मार्च में चुनाव कराने की घोषणा की, तो धर समेत उनके इर्द-गिर्द के सारे लोग जिनमें संजय भी थे, पूरी तरह से चकित रह गये । धर को यह पता था कि उस समय तक 'एजेंसियों ने यह बात बता दी थी कि अगर चुनाव होते हैं, तो वे हार जाएंगी । लेकिन धर का निष्कर्ष है कि इंदिरा गांधी ने यह फ़ैसला इसलिए लिया क्योंकि वे दूसरे रास्ते को कहीं बदतर समझती थीं ।

तब और अब

इसके ठीक उलट, नरेंद्र मोदी सरकार देश को बेहद सोच-समझ कर सधे हुए हाथों से एक ऐसे आपातकाल की ओर ले जा रही है, जिसकी मिसालें इतिहास में मिलती तो हैं, लेकिन वे ख़ुशी देने वाली नहीं हैं । सत्ता में आने के बाद अपने शुरुआती भाषणों में मोदी ने आने वाले दस सालों के लिए अपनी योजनाओं को इस तरह से पेश किया, जैसे प्रधानमंत्री या सरकार में बदलाव की कोई गुंजाइश ही नहीं है । उसके बाद से उनके कई मंत्री और उनके पार्टी अध्यक्ष अमित शाह ने भी ऐसे ही बयान दिये हैं ।

ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपने कामकाज को रूपांतरकारी मानते हैं । यह काम है, भारतीय, ख़ासकर हिंदू मानस में पहले कमज़ोरी की भावना जगाना, जिसके कारण भारत को सदियों की 'गुलामी' झेलनी पड़ी, और एक ताक़तवर, ताल ठोंकने वाला हिंदू राष्ट्र का निर्माण करना, जो ताक़त और भय जगाने के कारण दुनिया में सम्मान की निगाहों से देखा जाएगा । ऐसे कायापलट में समय लगेगा ।

ख़ुद को अपने पहले वाले के शासकों, जो उनकी नज़रों में कमज़ोर घुटनों वाले, छद्म राष्ट्रवादी हैं और उनके पश्चिम में पढ़े-लिखे सलाहकारों के समूह से अलग दिखाने के लिए इस सरकार ने देश को कश्मीर की निहत्थी जनता के ख़िलाफ़ डर के अभियान में झोंक दिया है ।

इससे पहले इसने नेपाल पर एक अघोषित व्यापारिक नाकेबंदी इस वजह से कर दी थी कि नेपाल ने अपने संविधान के निर्माण में मोदी की सलाह को नज़रंदाज़ करने की गुस्ताख़ी की थी । इसने नेपाल को चीन की बांहों में धकेल दिया ।

इस सरकार ने पाकिस्तान के साथ पहले से ही तनावपूर्ण रिश्तों को और बदतर बना दिया है और मनमोहन सिंह सरकार ने चीन के साथ शीत युद्ध की समाप्ति के बाद एक नयी अंतर्राष्ट्रीय विश्व व्यवस्था के निर्माण के लिए सहयोग बढ़ाने के नाम पर सीमा-विवादों को पीछे छोड़ देने में जो सफलता हासिल की थी, उसे भी इस सरकार ने गंवा दिया है ।

लेकिन ये सारे सोचे-समझे उकसावे भाजपा द्वारा देश के भीतर क़ानून के शासन पर किये जा रहे सुनियोजित हमले के सामने कहीं नहीं ठहरते ।

इसके सबसे शुरुआती उदाहरणों में से एक था, एक छेड़छाड़ किये गये वीडियो के द्वारा जे॰एन॰यू॰ छात्र संघ के अध्यक्ष कन्हैया कुमार को तथाकथित तौर पर 'पाकिस्तान ज़िंदाबाद' के नारे लगाते हुए और जे॰एन॰यू॰ कैंपस में भाजपा की छात्र इकाई-अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से उलझते हुए दिखाना और इसका इस्तेमाल उन्हें गिरफ़्तार करने और जेल भेजने के लिए करना । हालांकि, भारतीय दंड संहिता (आई॰पी॰सी॰) में पाकिस्तान समर्थक नारे लगाना अपराध नहीं है और दो टी॰वी॰ चैनलों ने यह उजागर किया कि इन टेपों के साथ छेड़छाड़ की गयी है, फिर भी सरकार ने

कुमार को तीन हफ़्ते तक जेल में रखा ।

जब वे जेल में थे, तब आर०एस०एस० की छांव में पलने वाले संगठनों में से एक–अधिवक्ता संघ से ताल्लुक़ रखने वाले तीन वकीलों ने पुलिस की मौजूदगी में कन्हैया कुमार की पिटाई की । इंडिया टुडे के स्टिंग ऑपरेशन में ये वकील अपने इस कारनामे की डींग हांकते देखे गये । लेकिन पुलिस ने बदले में बस इन्हें थाने में आने की दावत दी, उनके ख़िलाफ़ शिकायत दर्ज की और उन्हें तुरंत बेल पर रिहा कर दिया ।

संघ परिवार से ताल्लुक़ रखने वाले एक और छद्म संगठन–भारतीय गोरक्षा दल की छतरी तले सैकड़ों गोपरहेदार नमूदार हो गये हैं । इन्होंने अनगिनत मुसलमानों, दलितों, ट्रक चलाने वालों और मवेशी का व्यापार करने वालों पर हमले किये हैं और कम से कम दस लोगों की हत्या कर दी है । मारे जाने वालों में छह मुसलमान हैं ।

दक्षिण एशिया के ह्यूमन राइट्स वॉच की डायरेक्टर मीनाक्षी गांगुली ने कहा, 'गाय के नाम पर मुस्लिमों और दलितों की पीट-पीटकर हत्या किये जाने पर भाजपा नेताओं की तरफ़ से कोई सख़्त बयान नहीं आने से यह संदेश गया है कि भाजपा इस हिंसा का समर्थन करती है । एक ऐसी सरकार जो 'सबका विकास' के वादे पर सरकार में आयी थी, अब समाज के सबसे कमज़ोर लोगों को सुरक्षा देने को लेकर अनिच्छुक नज़र आ रही है ।'

भारतीय गोरक्षा दल का दावा है कि इससे 50 संगठन जुड़े हुए हैं और इसके पास 10,000 स्वयंसेवकों की सेना है, लेकिन देश भर में दूसरे स्वयंभू गोरक्षा समूह पनप गये हैं । दिल्ली में ही ऐसे 200 समूहों के कार्यरत होने का अनुमान है । गुजरात के ऊना क्षेत्र में भी इतने गोरक्षा समूहों के होने का अनुमान है ।

1 जुलाई, 2016 को 35 गोरक्षकों ने एक गाय की खाल उतारने के अपराध में सात दलितों पर हमला किया । इस गाय को गिर के जंगल के पास के एक गांव में शेर ने मार दिया था । इन गो-रक्षकों ने दलितों पर गोवध का आरोप लगाया और लोहे के डंडों और सरियों से उनकी पिटाई की ।

इनमें से चार का अपहरण करके उन्हें ऊना लेकर आया गया, जहां एक कार में बांध कर शहर भर में सार्वजनिक तौर पर उनकी बेंत से पिटाई की गयी । हिंसा करने वालों ने इस पिटाई का वीडियो बनाया, दलितों के चिल्लाने की आवाज़ को एक कर्णप्रिय पश्चिमी संगीत से बदल दिया और इस टेप को यू-ट्यूब पर डाल दिया । सात दलित अस्पताल में भर्ती कराये गये, मगर पुलिस मूकदर्शक बनी रही ।

भारतीय गोरक्षा संघ और अधिवक्ता संघ आर०एस०एस० द्वारा बनाई गयी लड़ाकू सेना का बस एक छोटा-सा हिस्सा है । इसका तीसरा हिस्सा गोरखपुर की हिंदू युवा वाहिनी है, जो खुद को हिंदुत्व और राष्ट्रवाद को समर्पित एक प्रचंड सांस्कृतिक-सामाजिक संगठन कहती है ।

हिंदू युवा वाहिनी की स्थापना मुस्लिमों से नफ़रत करने वाले भाजपा के फायरब्रांड नेता और अब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने की थी । यह संगठन कई दंगों में शामिल रहा है, जिसमें 2005 में मऊ में हुआ दंगा उल्लेखनीय है । मुख्यमंत्री बनने के बाद आदित्यनाथ ने अपनी पहली कार्रवाई-अवैध बूचड़खानों (उनके ओर उनकी वाहिनी के शब्दों में) को बंद कराने में, पुलिस की मदद करने के लिए वाहिनी को बुलाया ।

आदित्यनाथ और हिंदू युवा वाहिनी 'लव जिहाद' और 'घर वापसी' अभियानों के मुख्य जांचकर्ता रहे हैं । इन दोनों अभियानों का मक़सद नयी सरकार में मुस्लिमों को उनकी हैसियत बताना था, जिसका अंजाम कई मुस्लिमों पर हमले और कई मौतों के तौर पर सामने आया । लेकिन फिर भी मोदी सरकार के पिछले तीन साल में इक्का-दुक्का ही गिरफ़्तारियां हुई हैं । त्वरित ज़मानत और सज़ा न दिया जाना ही यहां की रिवायत है । पुलिस और जजों ने भी अपनी तरफ़दारी तय कर ली है ।

विरोधियों की बांहें मरोड़ना

लेकिन, यह सब भी आर०एस०एस० और भाजपा द्वारा लोकतंत्र की स्थापित परंपराओं के भीषण अपमान के सामने कहीं नहीं ठहरता । 2015 में दिल्ली विधानसभा चुनावों में अरविंद केजरीवाल के हाथों पूरी तरह से धूल चटा दिए जाने के बाद मोदी ने आप पर जिस स्तर का हमला किया, उसके लिए किसी लोकतंत्र में कोई जगह नहीं हो सकती ।

यह हमला तीन चरणों में किया गया । पहले चरण में सारी ताक़त सरकार को पंगु बनाने में ख़र्च की गयी ।

उपराज्यपाल नजीब जंग को मोहरा बनाकर उसने एंटी करप्शन ब्यूरो (ए॰सी॰बी॰) को दिल्ली सरकार के हाथों से छीन लिया और उस हेल्पलाइन नंबर को बंद कर दिया जिस पर ए॰सी॰बी॰ को जनता से पुलिस और तीन नगर निगमों के अधिकारियों द्वारा रंगदारी वसूलने की 160,000 शिकायतें मिली थीं ।

इसके बाद गृह मंत्रालय ने एक सर्कुलर निकाल कर उन विषयों पर भी जिनका पुलिस या ज़मीन से कोई लेना-देना नहीं था राज्य सरकार के हाथ से लगभग सारी अहम शक्तियां छीन लीं । ये दो मामले केंद्र के लिए आरक्षित हैं ।

हमले का दूसरा चरण दिल्ली हाईकोर्ट की एक एकल पीठ के एक असाधारण फ़ैसले के साथ शुरू हुआ, जिसने भारतीय संविधान के एक नहीं दो अनुच्छेदों-अनुच्छेद 293 और अनुच्छेद 293ए को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया और दिल्ली को (और इसके नतीजे के तौर पर पांडिचेरी को भी) पूरी तरह से फिर से केंद्र के अंगूठे के नीचे ला दिया ।

इसके बाद जंग ने 400 फाइलें ज़ब्त कर लीं और वैसी छोटी से छोटी चीज़, जिसे 'अनियमित' कहा जा सकता था, सी॰बी॰आई॰ को जांच के लिए भेज दी गयी । इसके बाद टी॰आर॰पी॰ के भूखे टी॰वी॰ चैनलों की सहायता से राई जैसे मामलों पर आरोपों का पहाड़ खड़ा किया गया और अख़बारों के पाले हुए पत्रकारों की मदद से सरकार को बदनाम करने और यह धारणा बनाने की कोशिश की गयी कि 'आप' किसी से बेहतर नहीं है, बल्कि शायद दूसरों से भी गयी-गुंजरी है ।

मोदी ने इस हमले का तीसरा चरण अरविंद केजरीवाल और उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया पर भ्रष्टाचार, मनी लांड्रिंग और पैसे की हेराफेरी के अरोपों के नाम पर सीधा हमला करना शुरू कर दिया । यह सब पार्टी को तोड़ने और केजरीवाल सरकार को इस्तीफ़ा देने के लिए मजबूर करने की पूर्वपीठिका तैयार करने के लिए किया गया ।

इस मक़सद को अंजाम देने के लिए आप के दो सदस्यों कुमार विश्वास और 'इंडिया अगेंस्ट करप्शन आंदोलन' के उफान के दिनों में आर॰एस॰एस॰ से आये और इस तरह आर॰एस॰एस॰ को इस आंदोलन से जोड़कर रखने वाले कपिल मिश्रा को मोहरा बनाया गया ।

इस हमले का ब्योरा देना काफ़ी थकाने वाला काम होगा, इसलिए यहां इतना ही कहना काफ़ी होगा कि मिश्रा ने यह आरोप लगाया कि उन्होंने अपनी आंखों से केजरीवाल को केजरीवाल के ही घर पर एक ख़ास तारीख़ को स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन से 2 करोड़ का विदेशी डोनेशन लेते हुए देखा ।

सी॰एम॰ आवास के आसपास लगे सी॰सी॰टी॰वी॰ कैमरों से इस आरोप की पुष्टि नहीं हो पायी, फिर भी दिल्ली पुलिस ने दिल्ली के चुने हुए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के ख़िलाफ़ कम से कम 29 मामले दर्ज कर दिए ।

केजरीवाल विपक्ष के इकलौते नेता नहीं हैं, जिनके ख़िलाफ़ मोदी और अमित शाह ने अपनी पूरी ताक़त झोंक दी है । भाजपा देश के लोकतंत्र के लिए कितनी ख़तरनाक है यह पहचानने वाली देश की पहली मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के मंत्री भी कई महीनों से सी॰बी॰आई॰, आयकर अधिकारियों और इंफोर्समेंट डायरेक्टरेट (प्रवर्तन निदेशालय) के निशाने पर हैं । वे (भाजपा-संघ परिवार) जितनी चीज़ें कर रहे हैं, उनमें एक साझा सूत्र है क़ानून का अनादर और शासन और उन तमाम परंपराओं के प्रति पूर्ण अवमानना का भाव जिन पर लोकतंत्र टिका है ।

मोदी और शाह ये जानते हैं कि आज वे अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों के साथ जो कर रहे हैं, वही उनके प्रतिद्वंद्वी भी सत्ता में आने के बाद उनके साथ कर सकते हैं, बल्कि करेंगे । मध्य प्रदेश में व्यापमं घोटाला, राजस्थान में ज़मीन घोटाला जैसे घोटालों की सूची देखते हुए विपक्ष के पास हाथ साफ़ करने के लिए मौक़ों की कमी नहीं होगी । तो फिर वे इस बात से इतने बेफिक्र कैसे हैं कि यही सब पलटकर उनके साथ भी हो सकता है ? उन तमाम लोगों के लिए जो आगे देखने का साहस रखते हैं, जवाब उनके सामने है-उन्हें (भाजपा) यह भरोसा है कि विपक्ष कभी सत्ता में नहीं आएगा । ऐसा तभी हो सकता है, जब भारत से लोकतंत्र को उखाड़ फेंका जाए ।

इंदिरा गांधी द्वारा लगाया गया आपातकाल तवे पर पड़े पानी की बूंद की तरह क्षणिक था, अस्ली आपातकाल सबका इंतिज़ार कर रहा है । (सा॰ : 'द वायर')

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

संक्षिप्त परिचय

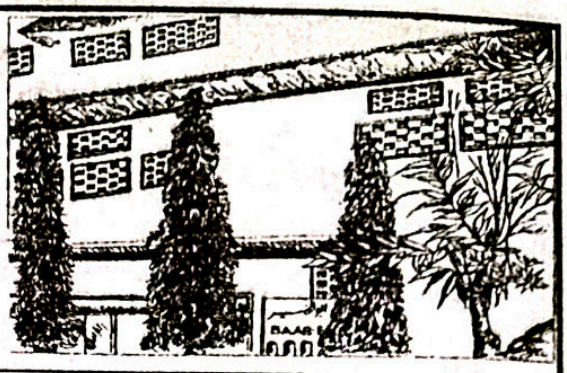

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 30 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 11 बैच 103 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 7 बैच 65 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2018 ई॰ तक 87 अनाथ बच्चियों और 61 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 35 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 110 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 18,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,35,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उंदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

अपना-अपना मकान

■ देवेन्द्र कुमार मिश्रा
(छिंदवाड़ा, म०प्र०)

संयुक्त परिवार में रहते हुए सब अपने-अपने भविष्य के बारे में सोच रहे थे। यह सामूहिक सोच नहीं थी। व्यक्तिगत सोच थी। सिर पर माता-पिता का साया था। पिता के साथ किराये के मकान में रहते थे। दोनों भाइयों का विवाह हो चुका था। उनके एक-एक बच्चे भी थे। बड़ा लड़का चन्दर अपनी पत्नी के साथ अपने कमरे में बैठा हुआ बातचीत कर रहा था।

"कल बाबू जी रिटायर होंगे तब कैसे चलेगा ? ख़ुद का मकान भी नहीं है। पेंशन में घर का ख़र्च कैसे चलेगा ? मान लो बाबूजी ने मकान नहीं ख़रीदा तो क्या होगा ? अभी घर ख़र्च के लिए तीन हज़ार देने में काम बन जाता है। बाबूजी के रिटायर होने के बाद छह हज़ार देने पड़ेंगे। फिर हम अपनी बचत कैसे करेंगे ?"

चन्दर की पत्नी नें कहा, "हमारा भी एक बेटा है। हमें उसके बारे में सोचना चाहिए। बाबू जी ने तो एक मकान तक नहीं बनाया। हमें अपने मकान के विषय में खुद सोचना चाहिए। यदि बाबू जी रिटायरमेंट के बाद मकान बनवाने के लिए आपसे लोन लेने के लिए कहें तो मना कर देना। आधी ज़िन्दगी लोन चुकाने में गुज़र जाएगी। उनके न रहने के बाद आपकी भाई से न बनी तो मकान को लेकर झगड़ा अलग होगा। मुझे नहीं लगता बाबू जी मकान बनवाएंगे। अभी तो उन्हें कीर्ति की शादी करनी है।"

कीर्ति इस घर की छोटी बेटी थी। दो भाई और एक बहिन। अपने कमरे में दूसरा भाई सुन्दर अपनी पत्नी विमला के साथ भविष्य के विषय में सोच रहा था। दोनों के बच्चे दादी-दादा के साथ सो जाते थे। आज भी खेलते-खेलते वहीं सो गये थे।

सुन्दर ने कहा, "बाबू जी से तो कुछ मिलने से रहा। उनके पास सम्पत्ति के नाम पर कुछ है भी नहीं। साल भर में रिटायर हो जाएंगे तो हमें भी दो की जगह चार हज़ार देने पड़ेंगे। सिर पर खुद की छत भी नहीं है।"

विमला ने कहा, "अब हमारा भी परिवार है। हमें अपने विषय में सोचना चाहिए। अपने लिए बचाना चाहिए। कीर्ति की शादी के लिए बाबू जी कुछ न कुछ आर्थिक मदद मांगेंगे। लेकिन उतना ही देना जिससे हमारे परिवार, हमारे भविष्य पर असर न पड़े। तुम्हारी बहिन है तो अपना कर्तव्य निभाओ। मैं मना नहीं करती। लेकिन अब तुम एक बच्चे के पिता हो। तुम्हारा अपनी पत्नी के प्रति भी कुछ कर्तव्य है। फिर कोई पक्की नौकरी तो है नहीं।"

चन्दर की किराना की दुकान थी और सुन्दर का जनरल स्टोर था। कीर्ति की उम्र 23 वर्ष की हो गयी थी। शादी की बात चल रही थी। लेकिन बाबू जी का कहना था कि अगले साल रिटायर हो जाऊंगा। जमा पैसा एक मुश्त हाथ आ जाएगा। तब शादी के बारे में सोचेंगे। अभी उम्र भी ज़्यादा नहीं हुई है। बाबू जी रामभगत अपनी पत्नी से कह रहे थे। दोनों पोते सो चुके थे।

"बच्चों के सामने हाथ नहीं फैलाऊंगा। इकलौती बैटी की शादी के लिए। वे अपना कमा-खा रहे हैं। इतना बहुत है। हां, मेरे रिटायरमेंट के बाद उन्हें आर्थिक मदद ज़्यादा करनी पड़ेगी। इतनी थोड़ी-सी मदद में मैं अकेले घर नहीं चला सकता। संयुक्त परिवार कैसे चलेगा ?"

रामप्यारी तीनों बच्चों की मां दो पोते की दादी और रामभगत की पत्नी ने कहा, "बस इस बात का दुख है कि खुद की छत नहीं है सिर पर। इतना बड़ा परिवार लेकर बैठे हैं किराये के मकान में। बार-बार मकान बदलते रहो। जब सस्ता ज़माना था तब कितनी बार कहा था कि एक प्लॉट ही ले लो। धीरे-धीरे मकान बन जाएगा। अब प्लाट की क़ीमत इतनी बढ़ गयी है कि प्लाट लो तो मकान नहीं बन पाएगा।"

रामभगत ने समझाते हुए कहा, "प्लाट मैं ख़रीद लूंगा। मकान बेटे बनवा लेंगे और उस समय भी एक लाख रुपये कहां थे 1500 स्क्वायर फिट का प्लॉट ख़रीदने के लिए। मैं क़र्ज़ लेकर कोई काम नहीं करता। तुम चिंता मत करो। अपने जीवन भर की नौकरी की जमा-पूंजी से मैं

बिटिया की शादी और एक प्लॉट तो ख़रीद ही सकता हूं। शहर से कुछ मील दूर ही सही। अब तो सारी कॉलोनियां शहर के बाहर ही बन रही हैं।''

अचानक से रामप्यारी को पिछली घटना याद आ गयी। जब उनका झगड़ा बड़ी बहू से हुआ था। उन्हें बड़ी बहू की मुंहजोरी बिल्कुल पसन्द नहीं है। ग़लती करती है। उस पर बहस भी करती है। फिर बड़े बेटे के सोते हुए पुत्र पर नज़र डाली और कहा, ''यदि पोते का मोह न होता तो कब का अलग कर चुकी होती ? मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाती।''

रामभगत ने कहा, ''तुम औरतें भी अजीब हो। उसकी कोख से जन्मा बच्चा जान से प्यारा है और जिसने जन्म दिया उससे नफ़रत है।''

''क्या करूं ?'' आज तुम्हारी नौकरी से घर चलता है तो यह हाल है। बेटा भी कुछ नहीं कहता अपनी पत्नी से। इतना तो कह ही सकता है कि मां है मेरी। तमीज़ से बात करो। कल जब तुम रिटायर हो जाओगे और घर ख़र्च के लिए दोनों के पति को ज़्यादा रुपये देने पड़ेंगे तब तो सिर पर ही बैठ जाएंगी।''

''ऐसे कैसे सिर पर बैठ जाएंगी ? मैं हूं, तुम्हें चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम किसी पर बोझ नहीं हो। मैं नहीं रहूंगा। तब भी तुम्हें पेंशन मिलेगी।''

''शुभ-शुभ बोलो जी। यह क्या कह गये ?'' रामप्यारी ने कहा।

''सच्ची बात कह रहा हूं कोई अमर होकर तो नहीं आया।'' फिर उन्होंने बात का रुख़ बदलते हुए पूछा, ''छोटी बहू तो ठीक है न।''

सामने तो मीठा ही बोलती है। पर है बड़ी घुन्नी। सामने अम्मां जी-अम्मां जी करती है। पीछे बुरा बोलती है।''

''तुमसे किसने कहा ?''

''कहेगा कौन ? एक दिन मियां-बीवी में झगड़ा हो रहा था। अपने सुन्दर पर भड़क रही थी कि तुम्हारी अम्मां के नखरे बहुत हैं। बाद में मैंने पूछा कि मेरे कौन-से नखरे हैं तो कहने लगी, मैं अपनी अम्मा के बारे में कह रही थी। फिर कहने लगी कि आप क्या हम पति-पत्नी की बातें छिपकर सुनती हैं। बड़े आये पति-पत्नी वाले। बेटे हमारे हैं। पाल-पोसकर हमने बड़े किये और शादी क्या कर दी कि उनकी बातें प्राइवेट हो गयीं। हमारा जैसे कोई अधिकार ही नहीं है।''

''तुम्हें छिपकर सुनने की क्या ज़रूरत थी ?''

''छिपकर कौन सुनता है ? इतना तेज़ बोलेगी तो सुनाई ही देगा। फिर मेरा बेटा है। उससे कौन क्या कह रहा है, यह जानने का मेरा पूरा अधिकार है।''

''हां, है, लेकिन तुम्हारा बेटा अब केवल तुम्हारा बेटा नहीं है। किसी का पति भी है। बहू का हक़ तुमसे ज़्यादा है। भूल गयी वे दिन जब मेरी अम्मी आकर मुझ पर हक़ जताया करती और तुम्हें किसी बात पर डांटती तो मेरे आते ही तुम अपना दुखड़ा लेकर बैठ जाती थी। उनके जाने की और न आने की भगवान से प्रार्थना करती थी।''

''अब पुरानी बातें छोड़ो। मैं उनकी बहू थी। दो बच्चों की मां। मेरा भी अपना परिवार था। उनका अचानक आकर मेरे घर में दख़ल देना और अधिकार सहित महीनों डटे रहना उस पर मुझे डांटना, मुझसे लड़ना। क्यों सहती मैं ?''

''फिर अपनी बहुओं से इतनी उम्मीद क्यों ? अपने बेटों पर इतना अधिकार क्यों ? उनका भी परिवार है। जबकि मैं तो अपनी मां का इकलौता बेटा था।''

रामप्यारी मन ही मन कुछ बड़बड़ाती रही। फिर बोली, ''ठीक है हमने अपना कर्तव्य निभा दिया है। अब उनका वे जानें। हमें बस कीर्ति की शादी की चिंता करनी है। हमारे परिवार में अब कीर्ति ही रह गयी है। उसी के विषय में सोचना है। और तुम मांगो या न मांगो मैं तो शादी में मदद के लिए कहूंगी। आख़िर भाई है वे। उनका भी फ़र्ज़ बनता है। हम माता-पिता हैं। हमारे प्रति भी उनका कर्तव्य बनता है। अभी तक हम पाल ही तो रहे हैं सभी को।''

एक परिवार बढ़ते हुए तीन परिवार में बंट गया। एक परिवार में माता-पिता थे। दूसरे में बड़े बेटे का परिवार। तीसरे में छोटे बेटे का परिवार।

अब दोनों के बेटों के राशन कार्ड, गैस कार्ड अलग-अलग थे। सरकारी नियमानुसार तीन परिवार थे उनके संयुक्त परिवार में और तीनों परिवार अपने-अपने ढंग से अपने-अपने लिए सोच रहे थे। चार बर्तन एक टोकरे में हो तो खनकते तो हैं ही लेकिन जब ज़्यादा ज़ोर से खड़के तो बर्तन के टूटने का भी डर रहता है। चन्दर की पत्नी सुमन को लगता था कि उनका पति ज़्यादा रुपये देता है और सुन्दर कम। उसे यह भी लगता कि उसके सास-ससुर उससे ज़्यादा विमला

की तरफ़ ध्यान देते हैं । विमला साल में चार बार मायके जाती है तो घर में कोई कुछ नहीं कहता । वह दो बार भी जाए तो सबका मुंह बनने लगता है । विमला इस बार फिर मायके जाने की तैयारी में थी । सुमन ने कहा, ''देवरानी जी तुम्हारे तो ठाठ हैं जब चाहे मायके जाओ ।''

जेठानी का व्यंग्य समझकर विमला ने कहा, ''आप भी तो जाती हैं । मैं तो दो-चार दिन के लिए जाती हूं । आप तो महीने-महीने रहती हैं ।''

''तो क्या मैं साल में दो बार भी न जाऊं ?''

''आप तो चली जाती हैं आराम फ़रमाने । मुझे तो यहां पूरे घर का काम संभालना पड़ता है ।''

''जब तुम जाती हो तब मैं भी करती हूं ।''

''मैं तो दो-चार दिन रहकर आ जाती हूं ।''

''अब मायके में कोई नहीं पूछता तो मैं क्या करूं? मेरे माता-पिता, भाई, भाभी तो आने ही नहीं देते ।''

''आने तो मेरे माता-पिता भी नहीं देते । लेकिन यहां भी देखना पड़ता है । आपका क्या है ? जहां गये वहीं के हो गये ।''

इस मामूली-सी बात पर बात इतनी बढ़ी कि दोनों बहुएं अपने मायके दो सम्मान के लिए लड़ पड़ीं । उन्हें झगड़ता देख सास रामप्यारी ने आकर गुस्से में कहा, ''शर्म नहीं आती । कोई इस तरह लड़ता है । आसपास के लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?''

बड़ी बहू सुमन ने कहा, ''अपनी लाडली बहू को समझाइए । मेरे मायके वालों को कुछ न कहें ।''

विमला ने भी पलटकर कहा, ''तुम्हारा मायका, मायका है और मुझे क्या सड़क से उठाकर लाए हैं ?''

दोनों बहुओं की तू-तू, मैं-मैं से सास ने गुस्से में कहा, ''बड़ों का कोई लिहाज़ है कि नहीं ।'' सुमन ने गुस्से में कहा, ''पहले आप बताइए आप किससे कह रही हैं मुझसे या विमला से । क्यों, आपको मैं ही ग़लत लगती हूं, जबकि मेरे पति घर चलाने के लिए ज़्यादा पैसे देते हैं ।''

बड़ी बहू की बात सुनकर सास ने क्रोध में कहा, ''तो कोई एहसान नहीं करते । हम न हों तो पेट भर खाना भी नसीब न हो अपनी कमाई से ।''

''भूखे मरेंगे तो यहां रहेगा कौन ?'' सुमन ने कहा ।

मां और भाभी को लड़ते देख कीर्ति को बहुत बुरा लगा । उसने अपनी मां के पास खड़े होकर कहा, ''ख़बरदार जो मेरी मां से बहस की । सास लगती है आप दोनों की । मेरी मां के सीधेपन का बहुत फ़ायदा उठा रही हो दोनों । बहू हो, बहू की तरह रहो । मेरी मां से बदतमीज़ी से बात की तो ठीक नहीं होगा ।''

''क्या ठीक नहीं होगा ?'' सुमन ने पलटकर कहा ।

''इस घर से चलता कर देंगे ।'' कीर्ति ने कहा ।

''घर...'' सुमन ने व्यंग्य से कहा ।

''कहां है घर ? यह तो किराये का मकान है । तुम्हारे बाबू जी से इतना भी तो नहीं हुआ कि ख़ुद का एक मकान बनवा लेते । किराये का मकान है । चलता कर दोगे तो दूसरा किराये का मकान ढूंढ़ लेंगे ।'' सुमन ने जैसे विमला के भी मन की बात कह दी हो । विमला अपने कमरे में चली गयी । सुमन की बात सुनकर सास रामप्यारी ने कहा, ''जो कहना है मुझसे कहो । मेरी बेटी को सुनाकर कहने की ज़रूरत नहीं है ।''

आपने इसे सिर पर चढ़ाकर रखा है । बड़ों के बीच में इसे बोलने की ज़रूरत क्या है ?'' सुमन ने अपनी सास से कहा ।

''कोई अगर मेरी मां से कुछ कहेगा तो मैं चुप नहीं रहूंगी ।'' कीर्ति ने पलटवार किया ।

मां को कीर्ति की ही बात अच्छी लगती, उनकी बेटी जो थी । चाहती तो वह कीर्ति को टोक भी सकती थी । लेकिन अपने पति पर ताना वह बर्दाश्त नहीं कर सकी । उन्होंने कहा, ''बस बहुत हो गया । मेरे पति एक मकान नहीं बनवा सके । तुम जैसे दहेज में मकान लाई हो । तुम बनवा लो । देखते हैं कितना पैसा है ।''

''जब औक़ात होगी तो बनवा लेंगे । जीवन भर किराये के मकान में नहीं रहेंगे ।''

''हां, बहू अच्छा ताना मारा मेरे पति की ग़रीबी का । हम तो सोच रहे थे सब मिल-जुलकर बनवा लेंगे । लेकिन अब तुम जैसों के लिए तो एक पैसा ख़र्च नहीं करूंगी । हमारी तो पूरी उम्र किराये के मकानों में बीत गयी । बची-खुची और गुज़ार देंगे ।'' कहते हुए सास रामप्यारी रोते-रोते चली गयी । कीर्ति भी मां के पीछे-पीछे चल दी । सुमन वहीं खड़ी विचार करती रही कि यह क्या निकल गया उसके मुंह से । रात में पतियों के आने पर सबने अपने पति को ख़ुद की निर्दोषिता के साथ-साथ दूसरे की बुराई रखी ।

चन्दर ने गुस्से में कहा, "दिन-रात काम करता हूं और घर आने पर सुकून के कुछ पल भी नहीं मिलते ।"

"मैं कहां कुछ कह रही हूं । बस बता रही हूं कि ऐसे लोगों के लिए कोई ख़र्च करना बेकार है । अम्मां जी ने तो मकान ख़रीदने की बात से साफ़ इन्कार कर दिया । सब तुम्हीं पर नज़र गढ़ाये बैठे हैं ।"

"मेरे पास इतना रुपया कहां ?" चन्दर ने कहा ।

"तो रहो जीवन भर किराये के मकान में ।" सुमन ने ताना मारते हुए कहा ।

विमला ने अपने पति सुन्दर से कहा, "अच्छा हुआ जो जेठानी और सास की लड़ाई में स्पष्ट हो गया कि कोई अपना मकान नहीं बनाया जाएगा । हमें अपनी व्यवस्था खुद करनी होगी । उनके जीवन का लक्ष्य तो बस अपनी बेटी की शादी करना शेष है । उन्हें तो आदत है किराये के मकान में रहने की । हमारे परिवार का क्या होगा ?"

सुन्दर ने कहा, "यदि वे अपने विषय में सोचते हैं तो हम भी अपने विषय में सोचेंगे । हमारा भी एक बेटा है । फिर कोई सरकारी नौकरी तो है नहीं हमारे पास । धंधा चल रहा है । कल नहीं भी चल सकता ।"

रामप्यारी ने कहा, "हमें ताना मार रही थी कि एक मकान तो बनवा नहीं सके ।"

यह बात ससुर रामभगत को भी बुरी लगी । ये सीधा उन पर आक्षेप था । उन्होंने दूसरे दिन सबको बुलाकर कहा, "यदि प्रेम से नहीं रह सकते । तो अच्छा है कि अलग-अलग रहो । यह मैं सहन नहीं कर पाऊंगा कि मेरी बेटी और पत्नी से कल की आयी बहुएं झगड़ा करें । रही मकान की बात । तो पहले मुझे अपनी बेटी की शादी की चिंता है । रहना है तो सबको मिल-जुलकर सहयोग करना होगा । महंगाई बढ़ती जा रही है । अब तुम्हारे थोड़े से रुपयों से घर का ख़र्च नहीं चलता । घर चलाने के लिए ज़्यादा मदद करो ।"

"लेकिन, अभी तो आपके रिटायर होने में समय है ।" चन्दर ने कहा ।

"मैंने लोन लिया है । बेटी की शादी नहीं रोक सकता। वेतन में से लोन की क़िस्त कटेगी । तो आधा पैसा ही घर आएगा । समझ लो कि मैं रिटायर हो गया और पेंशन मिल रही है ।"

बाबू जी की बात से चन्दर, सुन्दर, विमला, सुमन के सामने जैसे धमाका हुआ हो, वे सन्नाटे में आ गये कुछ पल के लिए ।

"कितना लोन लिया है आपने ।" सुन्दर ने पूछा ।

"पांच लाख रुपया ।" रामभगत जी ने कहा ।

"और यह पैसा मुझे जल्द से जल्द चुकाना है । इसलिए वेतन का सत्तर प्रतिशत कटवा रहा हूं क़िस्त में । अब तुम लोग कमाते हो । चलाओ घर ।"

"लेकिन बाबू जी, हम इतना कैसे कर पाएंगे ?" चन्दर ने कहा ।

रामप्यारी ने व्यंग्य से कहा, "अपनी पत्नी से पूछो । बातें तो बहुत बड़ी-बड़ी करती हैं । अलग किराये में रहने की, तो घर नहीं चला सकती क्या ?"

चन्दर मां के इस व्यंग्य पर तिलमिलाकर रह गया । उसे सुमन पर भी गुस्सा आया कि क्यों मुंह खोलकर बिना सोचे-समझे कुछ भी बक देती है । रामभगत जी के पास पैसा आ चुका था । वे कीर्ति की शादी के लिए धड़ाधड़ लड़के देख रहे थे ।

अवकाश लेकर वे अक्सर रिश्तेदारों, परिचितों से मिलने वाले पते लेकर लड़का देखने निकल जाते । कहीं लड़का नहीं जमता । कहीं कुंडली नहीं मिलती । लेकिन उन्हें हर हाल में इसी साल शादी करनी थी । उन्हें एक सरकारी नौकरी वाला लड़का पसन्द आया, वे इस रिश्ते को किसी भी क़ीमत पर नहीं छोड़ना चाहते थे । परिवार अच्छा था । सरकारी नौकरी में था । कुंडली भी मिल रही थी कि उन्हें दहेज में और कुछ नहीं चाहिए था सिवाय एक मुश्त रक़म के । वह भी पांच लाख । उनके पास पांच लाख ही थे, जबकि शादी के और भी ख़र्चे थे । कपड़े, गहने, भोजन में ही कम से कम तीन लाख रुपये चाहिए थे । उन्होंने हामी भी भर दी । और घर आकर दोनों बेटों से कहा, "बहिन की शादी में कितना ख़र्च करोगे ?"

"बाबू जी, पांच लाख लिए तो हैं आपने लोन से ।" चन्दन ने कहा ।

"हां, लेकिन पांच लाख उन्हें दहेज में एक मुश्त चाहिए । बाक़ी कुछ भी नहीं ।"

"इतना दहेज देने की क्या ज़रूरत है ? लड़कों की कोई कमी थोड़े ही है ।" सुन्दर ने अपनी बात रखी ।

"अच्छे लड़कों की कमी ही समझो । मैं यह रिश्ता किसी भी हालत में करूंगा । मुझे कोई बहस नहीं करनी इस

शादी को लेकर । तुम लोग ये बताओ कितनी मदद करोगे ।'' रामभगत ने दोनों बच्चों से पूछा ।

''कितने की ज़रूरत पड़ेगी ?'' चन्दर ने पूछा ।

''तीन लाख रुपये की । मैंने सारा हिसाब लगा लिया है । तुम दोनों डेढ़-डेढ़ लाख का बन्दोबस्त कर दो बस । समझ लो शादी निपट गयी और मेरा गंगा स्नान हो गया ।''

पिता की बात सुनकर दोनों बेटे सन्नाटे में आ गये ।

चन्दर ने कहा, ''बाबू जी आपका वेतन कटने से पूरे घर की ज़िम्मेदारी सिर पर आ गयी है । फिर चाहकर भी हम डेढ़ लाख नहीं कर पाएंगे । पच्चीस-पचास हज़ार तक बात होती तो कहीं से भी क़र्ज़ा उठा लेते ।'' सुन्दर ने भी बड़े भाई की बात का समर्थन करते हुए कहा, ''इतनी कमाई नहीं होती तो बचत कहां से होगी बाबूजी ? फिर क़र्ज़ लेकर शादी करना कहां कि अक़्लमंदी है ?''

सुन्दर की बात सुनकर पिता ने कहा, ''मुझे बेवक़ूफ़ कह रहे हो । नहीं कर सकते तो न सही । मैं रुपया बाज़ार से उठा लूंगा । अपनी पत्नी के गहने बेच दूंगा । लेकिन शादी उसी घर में करूंगा । मुझे तुम जैसी नालायक़ औलादों से पहले भी कोई उम्मीद नहीं थी और न अब है ।''

बात ख़त्म हो गयी । अपने-अपने कमरे में बेटे-बहू में खुसर-फुसर बातें होने लगीं । सब अपना-अपना हिसाब लगा रहे थे । यदि शादी में आठ लाख रुपये ख़र्च हुए तो भविष्य में बाबू जी क्या करेंगे ? क्या क़र्ज़ा ही चुकाते रहेंगे । फिर मकान का सपना सपना ही रह जाएगा । बेटी की चंता उसकी अच्छी जगह शादी अच्छी बात है लेकिन बेटों के बारे में कुछ नहीं सोचा बाबू जी ने । हमारा भी परिवार है । अम्मां, बाबू जी की तो कट गयी उमर । अब हमें तो अपने बारे में सोचना पड़ेगा, क्योंकि बाबू जी को तो कुछ सोचना नहीं है । उन्हें सिर्फ़ बेटी की शादी की चिंता है । बेटी तो शादी के बाद अपने ससुराल चली जाएगी । हमारा क्या होगा ? दोनों बेटों-बहुओं ने आपस में सलाह करके 25-25 हज़ार देने चाहे तो रामभगत ने कहा ।

''मुझे नहीं चाहिए । तुम्हारे पैसे । तुम्हें जो कुछ देना हो । दहेज ख़रीदकर अपनी बहिन के मंडप में रख देना ।''

संयुक्त रूप से सोचने की बजाय दोनों बेटे व्यक्तिगत रूप से सोचने लगे थे । यह कहना भी ठीक था कि पिता रामभगत भी संयुक्त परिवार में होते हुए व्यक्तिगत निर्णय ले रहे थे । सबसे पहले और बहुत पहले ख़ासकर बेटी की शादी के पहले स्वयं के मकान की व्यवस्था करनी चाहिए थी । बेटों ने अपने रोज़गार की व्यवस्था भी स्वयं की थी । वे आगे पढ़ना चाहते थे । इंजीनियर, डॉक्टर बनना चाहते थे लेकिन रामभगत ने स्पष्ट कर दिया था कि मेरी औक़ात नहीं इतनी महंगी शिक्षा देने की । अपने पैरों पर ख़ुद खड़े हो और अपनी पढ़ाई भी ख़ुद करो । बेटों ने मन मारकर बी॰ कॉम किया । फिर धीरे-धीरे दूसरे की दुकान में काम करते हुए अपनी-अपनी हिम्मत, मेहनत और बैंक से क़र्ज़ा लेकर अपनी दुकानदारी शुरू की । दुकान ख़रीदी और लोन भी चुका दिया । उनका काम-धंधा ठीक-ठीक चल रहा था । लेकिन शादी के बाद ख़ासकर एक-एक बेटा होने के बाद उन्हें अपने बच्चों के भविष्य की चिंता थी । वे नहीं चाहते थे जो अभाव उन्होंने झेले, उनके बच्चे भी सहें । बच्चे पढ़ने में होशियार निकले तो यह न कहना पड़े कि हमारी पढ़ाने की औक़ात नहीं है ।

सुनकर कितना मन टूटता है । जब योग्य होने के बाद भी वे धन के अभाव में उच्च शिक्षा हासिल न कर सकें । उन्हें लगता था कि बाबू जी एक अच्छे पिता का फ़र्ज़ नहीं निभा पाए पूरी तरह से । केवल यह कह देना कि रहना-खाना फ़्री । बाक़ी अपना-अपना देखो । कितनी लापरवाही भरी बात कहते रहे बाबू जी । आज भी अपनी ही चला रहे हैं । रोज़ घर के झगड़ों से तनाव, चिंता अलग । हर समय यह एहसास दिलाना कि हम कुछ भी नहीं हैं । उनके वेतन से पल रहे हैं । हम सुनते रहे । हमारी औरतें क्यों सुनें ? बाबू जी को भी लगा कि बेटे बदल गये हैं । पूरा जीवन उनके लिए करते रहे । आज जब बहुएं बहस करती हैं अपने ससुर पर मकान न बना पाने के लिए कोसती है । तब भी बेटे चुप रहते हैं ।

कुछ नहीं कहते अपनी पत्नियों से । अभी अपनी कमाई है तो यह हाल है । इनके भरोसे रहते तो भूखा मार डालते ये । रामभगत जी ने धूमधाम से बेटी की शादी निपटाई। बेटे उनकी नज़र में गिर चुके थे । मात्र रिश्तेदारों की तरह सुन्दर ने सोने की चैन और अंगूठी और चन्दर ने सोने के कंगन दिये । चन्दर और सुन्दर दोनों ही सुरक्षित भविष्य के लिए एक छोटे-से मकान की अलग-अलग तलाश करते रहे । इस भांति की किसी को ख़बर भी न लगी । कुछ बिल्डिंग 750 स्क्वायर फ़ीट में 3 कमरे 2 लेट बाथ का, आकर्षक विज्ञापन देकर मकान बेच रहे थे । साथ में बैंक लोन की

गारंटी भी । वे अलग-अलग बिल्डर से जाकर मिले । कुछ रुपये उनके पास जमा थे । कुछ बीवियों के गहने बेचकर दिये । उन्होंने कब मकान ख़रीद लिए ? किसी को पता भी नहीं चला । जब मकान उनके सुपुर्द हो गया, उन्हें पोज़िशन मिल गया । तब भी वे छिपाये रहते लेकिन बच्चों के मुंह से निकल गया । माता-पिता को बात करते सुन लिया था उन्होंने । दादा-दादी को बच्चों ने बता दिया । बच्चे क्या समझे दुनियादारी ? माता-पिता को ख़ुशी भी हुई और धक्का भी लगा । पिता ने दोनों बेटों को बुलाकर कहा, ''ख़ुशी हुई जानकर लेकिन ख़ुद बताते तो और भी अच्छा लगता । कितना बड़ा मकान है । कितने कमरे हैं ।''

बड़ी बहू ने बीच में बोल दिया, ''बाबू जी क़र्ज़ लेकर लिया है । सिंगल फैमिली के लायक़ है । तीन कमरे हैं ।''

''और हम कहां रहेंगे ?'' मां ने पूछा ।

बाबू रामभगत ने गुस्से में कहा, ''अभी मैं ज़िंदा हूं । मर नहीं गया हूं ।'' फिर छोटे बेटे से पूछा, ''तुम्हारा भी इतना ही छोटा मकान है सिंगल फैमिली लायक़ ।''

''जी'' अब की बार विमला ने उत्तर दिया ।

''ठीक है । फिर यहां क्यों पड़े हो ? जाओ अपने-अपने मकान में । हम दोनों पति-पत्नी के लिए दो कमरे का मकान बहुत है । इतना बड़ा मकान लेकर ज़्यादा किराया देने से बचूंगा ।''

''आप भी चलिए हमारे साथ ।'' बड़े बेटे ने कहा ।

''पूछ लिया बहुत है । साथ में रखना होता तो इतना छोटा मकान क्यों ख़रीदते सिंगल फैमिली लायक़ ।'' बाबू जी ने व्यंग्य से कहा ।

''आप हमारे साथ चलिए'', सुन्दर ने कहा ।

''साथ तो हम अपने बाप के भी नहीं रहे । बिना बताए चोरी-छिपे मकान ले लिया और बताया तक नहीं । चलो अच्छा है रोज़ लड़ाई-झगड़े से मुक्ति, अब अपने-अपने परिवार के साथ अपने-अपने मकान में शांति से रहो ।'' बाबू जी गुस्से और गंभीर स्वर में बोले ।

दोनों बेटे अपने-अपने मकान में चले गये । रामप्यारी ने उदास मन से कहा, ''बेटों के साथ तो रह लेती, लेकिन इन बहुओं के साथ निबाह मुश्किल है । बेटी आएगी कभी, तो कहां रुकेगी ? इस किराए के घर में ।''

रामभगत ने उदास स्वर में कहा, ''काश, बहुएं लाते वक़्त यह सोच लिया होता तो अपनी छत होने के बहाने सब एक घर में तो रहते ।''

''मुझे भी अपना मकान चाहिए । आज तक कुछ नहीं मांगा तुमसे । अब किराये के मकान में रहकर बेटों-बहुओं की नज़रों में लज्जित नहीं होना है ।'' रामप्यारी की ज़िद और अपने सम्मान के लिए रामभगत ने भी अपनी जमा-पूंजी जो उन्होंने किसी को नहीं बतायी थी, से एक छोटा-सा मकान ले लिया । अब सबके अपने मकान थे, जिसमें सभी अपनी सिंगल फ़ैमिली के साथ एक ही शहर में रहते थे और अक्सर रिश्तेदारों, परिचितों की तरह मिलते थे ।

संयुक्त से व्यक्तिगत होने के बाद भी सबको सुकून था कि उनका अपना मकान है । यदि समझ से आपसी विचार-विमर्श और सद्भाव से काम लेते तो एक ही ज़मीन पर तीन मंज़िल का मकान बनाकर अलग-अलग रहते हुए भी साथ-साथ रह सकते थे । पैसा भी बचता और मन में दुर्भाव भी नहीं आता । अनेक होकर भी एक बने रहते । लेकिन सबके अपने स्वार्थ अपनी चिंता और ज़िद के चलते यह हो न सका । जब भी आपस में मिलते या टकरा जाते तो बड़े संकोच और कुछ गर्व के साथ मिलते । थोड़ी-सी नादानी से एक परिवार तीन हिस्सों में बिखर गया और साथ में बंट गया मन भी ।

25 yrs. Service (Regd.)

AL KAUSAR HOLY HERBAL

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)

Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

शिशु के स्वास्थ्य के प्रति सजगता

■ डॉ॰ विभा खरे

आज का बालक देश का उज्ज्वल भविष्य है । आवश्यक है कि बालक बचपन से स्वस्थ हो, विभिन्न प्रकार की व्याधियों से बार-बार पीड़ित न हो । परंतु आज के यांत्रिक एवं अत्यंत अस्त-व्यस्त वातावरण में माता-पिता बालक के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सजग नहीं रहते, बल्कि भौतिक सुख के पीछे ज़्यादा भाग-दौड़ में पड़े रहते हैं । यदि बच्चे को शारीरिक तौर पर कुछ समस्या होती है तो समाज को अपनी सजगता दिखाने के लिए उसे लेकर बड़े से बड़े डॉक्टर के पास पहुंचते हैं, लेकिन बाद में बच्चे को बेबीसीटर या आया के हवाले कर देते हैं, जबकि शिशु को माता-पिता के प्यार की, उसके स्नेह की आवश्यकता रहती है ।

बालक की अच्छी तरह देखभाल करना, जिससे बालक स्वस्थ रहे, उसकी शारीरिक वृद्धि एवं पोषण अच्छी तरह हो, बाल्यावस्था में होने वाली व्याधि से बालक की रक्षा करना प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य होना चाहिए । यदि बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ होगा तो उसका मन या मस्तिष्क भी स्वस्थ होगा और वह प्रतिभासंपन्न बन सकेगा ।

माता का दूध देना अत्यंत आवश्यक

जन्म के 6 घंटे के पश्चात बालक को माता का दूध देना अत्यंत आवश्यक है । माता का दूध ही बालक के लिए सर्वश्रेष्ठ एवं उत्तम आहार है । माता का दूध बालक को दिन में 3-4 बार दे सकते हैं । इससे बालक में रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ जाती है ।

8 दिन पश्चात बच्चे को माता से पूरक दूध मिलने लगता है । ज़बरदस्ती शिशु को दूध कभी न पिलाएं । जब बच्चे को रोने या माता को महसूस हो कि उसे भूख लगी है तभी दूध देना चाहिए । दूध पिलाने के बाद हमेशा अपने कंधे पर शिशु को लेकर डकार दिलानी चाहिए, ताकि बालक को गैस या उल्टी न हो । बालक को 4 महीने तक माता के दूध के अलावा कुछ भी देने की आवश्यकता नहीं है ।

बच्चे का आहार प्राथमिक ज़रूरत है, लेकिन साथ ही बालक सुन्दर स्वस्थ और स्वच्छ रहे, यह अत्यंत आवश्यक है । शिशु के स्वच्छ रखने से उसे त्वचा रोग नहीं होते एवं बालक सुन्दर लगता है । शिशु को प्रतिदिन स्नान कराना चाहिए । बच्चे को स्नान कराने से पहले तेल से मालिश करनी चाहिए । इससे रक्त परिभ्रमण अच्छी तरह होता है, शरीर स्वस्थ एवं कांतिमय होता है ।

शिशु को कपड़े सूती एवं अत्यंत ढीले पहनाएं । अन्य कपड़ों या इलास्टिक वाले कपड़ों से विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग, एलर्जी होने की संभावना रहती है ।

5 या 6 महीने के पश्चात ही बालक को फल आदि के रस देना चाहिए, ताकि पाचक रस बनें और बच्चे की पाचन शक्ति बढ़े । बच्चे को एकदम ठोस पदार्थ खाने को न दें । फलों का गूदा उबालकर नरम चटनी बनाकर शक्कर डालकर खिलाएं । नरम दाल, चावल भी दे सकते हैं । इनसे आंत्रस्राव, आमाशथिक स्राव धीरे-धीरे बढ़ते हैं और पाचन शक्ति बढ़ती है ।

दांत निकलने के दौरान विटामिन डी युक्त पौष्टिक आहार दें

प्राय: 8वें मास के पश्चात बच्चे के दांत निकलने शुरू होते हैं । इस समय अनेक प्रकार की तकलीफ़ होती है । अतिसार, हल्का-सा बुख़ार आदि । बालक अशांत एवं चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है एवं उसकी पाचन क्रिया बिगड़ जाती है, इसलिए माता-पिता का सर्वप्रथम कर्तव्य है कि इस समय उचित ध्यान दें, ताकि बच्चे को कोई कष्ट न हो । दांत निकलने के दौरान माता कैल्शियम और विटामिन डी युक्त पौष्टिक आहार दें ।

पाठकों और विज्ञापनदाताओं से निवेदन

चेक और ड्राफ्ट केवल
'कान्ति' के नाम से बनवाएं,
'मासिक कान्ति' के नाम से नहीं ।

–मैनेजर

"जब आसमान फट जाएगा,
और जब तारे बिखर जाएंगे,
और जब समुद्र फाड़ दिए
जाएंगे, और जब क़ब्रें खोल
दी जाएंगी, उस समय प्रत्येक
व्यक्ति को उसका
अगला-पिछला सब किया-धरा
मालूम हो जाएगा ।"

A Well Wisher

KOLKATA

इंटरनेट बैंकिंग पर सुरक्षा के सूत्र

■ रमेश पलन

आज ऐसा देखने में कम ही मिलता है कि कोई व्यक्ति रोज़-रोज़ ट्रांजेक्शन के लिए बैंक की सीढ़ियां चढ़ता हो । आज ए॰टी॰एम॰ और नेट बैंकिंग जैसी सुविधाओं ने बैंक के कस्टमर के ट्रांजेक्शन के तौर-तरीक़ों को बदल कर रख दिया है । कस्टमर अब घर या ऑफ़िस से सीधे बैंक की वेबसाइट से नेट के ज़रिए जुड़ कर पैसे का लेन-देन कर सकता है ।

ऑनलाइन बैंकिंग व्यवसाय को मज़बूती और कस्टमर की सूचना और ट्रांजेक्शन को सुरक्षा प्रदान करने के लिए बैंक उपलब्ध सबसे सुरक्षित सिक्योरिटी चैनल-124 बिट इनक्रिप्शन-का इस्तेमाल करते हैं जिससे किसी तीसरे व्यक्ति के लिए बैंक और कस्टमर के बीच मौजूद जानकारी प्राप्त करने और किये गये ट्रांजेक्शन में हेर-फेर करना बिल्कुल असंभव हो जाता है ।

इंटरनेट बैंकिंग आपके लिए काफ़ी सारे फाइनेंशियल प्रोडक्ट और सर्विसेज ऑफ़र करता है । इसमें से ज़्यादातर प्रोडक्ट ऐसे हैं जो बिना बैंक जाए ही आप घर या ऑफ़िस में बैठे प्राप्त कर सकते हैं । आपको कैश निकालने या जमा कराने के लिए सिर्फ़ बैंक के ए॰टी॰एम॰ तक जाने की ज़हमत उठानी पड़ेगी बाक़ी तमाम सेवाएं आपको ऑनलाइन बैंकिंग से प्राप्त हो जाएंगी ।

कई बार ऐसा होता है आपको काफ़ी बड़ी राशि बैंक



नेट पर रहें सुरक्षित

● बैंक द्वारा आपको मुहैया कराया गया नेट बैंकिंग यूजर आई॰डी॰ और पासवर्ड किसी को भी न बताएं यहां तक कि बैंकिंग ऑफ़ीसर को भी नहीं । याद रखें बैंक प्रतिनिधि नेट बैंकिंग पासवर्ड नहीं मांगेगा ।

● अपना पासवर्ड अपने मोबाइल, पी॰डी॰ए॰, आर्गेनाइजर, डायरी इत्यादि में नोट न करें ।

● अपना पासवर्ड जल्दी-जल्दी बदलें । पुराना पासवर्ड के पुनः इस्तेमाल से बचें । कोशिश करें कि आपका नेट बैंकिंग पासवर्ड आपके ईमेल और दूसरे लॉग-इन आई॰डी॰ से मिलता-जुलता या समान न हो ।

● नेट बैंकिंग पासवर्ड तैयार करते समय ऐसी किसी व्यक्तिगत जानकारी इस्तेमाल न करें जिसका कोई अन्य व्यक्ति पासवर्ड तोड़ने के लिए प्रयोग कर सकता हो । अपने पासवर्ड में लेटर्स और नम्बर्स के साथ स्पेशल करेक्टर्स के काम्बीनेशन इस्तेमाल करें ।

● नेट बैंकिंग वेबसाइट का प्रयोग करने से पहले अपने ब्राउजर पर ऑटो-कम्पलीट फंक्शन डिजेबल कर दें । साइबर कैफे, सार्वजनिक स्थल पर नेट बैंकिंग सेशन के बाद लॉग-आउट बटन इस्तेमाल करें, ब्राउजर हिस्ट्री क्लीयर करें व कैचे को ख़ाली कर दें ।

● सार्वजनिक स्थलों पर वर्चुअल की बोर्ड का इस्तेमाल करते हुए सुनिश्चत करें कि कोई देख न रहा हो ।

● सार्वजनिक स्थल पर या प्राइवेट पीसी का इस्तेमाल करने के बाद फ़ौरन पासवर्ड बदलें ।

● ब्राउजर पर बैंक का यू॰आर॰एल॰ खुद टाइप करें । ईमेल पर मिले मैसेज में लिखे यू॰आर॰एल॰ पर क्लिक कर ट्रांजेक्शन करना जोखिम भरा हो सकता है । बैंक से ऑनलाइन बैंकिंग के बारे में सुरक्षा निर्देश पता कर लें ।

में जमा करानी या निकालनी होती है, लेकिन आपको डर लगता है कि रास्ते में कहीं कोई हादसा न हो जाए तो आप बैंक से अनुरोध कर सकते हैं कि वह आपको कैश जमा कराने या निकालने के लिए पिकअप और डिलीवरी की सुविधा (ऐसी सुविधा कुछ बैंक मुहैया करा रहे हैं) उपलब्ध कराए । बैंक के कस्टमर ऑनलाइन बैंकिंग के मारफ़त कई तरह की सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं । जैसे–

- ऑनलाइन बिल पेमेंट ।
- नयी चेक बुक के लिए अनुरोध ।
- डिमांड ड्राफ्ट के लिए अनुरोध ।
- फिक्स्ड डिपाजिट एकाउंट खोलना ।
- ईमेल के ज़रिये एकाउंट स्टेटमेंट पाना ।
- क्रेडिट कार्ड के लिए ऑनलाइन आवेदन ।
- मनी ऑर्डर भेजना ।
- ऑनलाइन शेयर ट्रेड करना और डीमैट एकाउंट खोलना ।
- आई॰पी॰ओ॰ और म्युचुअल फंड में निवेश करना ।
- मोबाइल और ईमेल अलर्ट के लिए रजिस्टर करना ।

आप अपने कंप्यूटर के माउस के एक क्लिक के ज़रिये बैंक को स्टेंडिंग इंस्ट्रक्शन भी दे सकते हैं और चेक पेमेंट भी रोक सकते हैं । ऑनलाइन सर्विस का एक महत्वपूर्ण पहलू है इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर । आप नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड्स ट्रांसफर (एन॰ई॰एफ॰टी॰) राष्ट्रव्यापी फंड ट्रांसफर सिस्टम का इस्तेमाल कर अपने फंड एक बैंक की शाखा से दूसरे बैंक की शाखा में ट्रांसफर कर सकते हैं । आज कई बैंक वेल्थ मैनेजमेंट प्लानिंग सर्विस के ज़रिये कस्टमर्स को निवेश के लिए उपलब्ध विभिन्न विकल्पों के लिए परामर्श भी प्रदान करते हैं ।

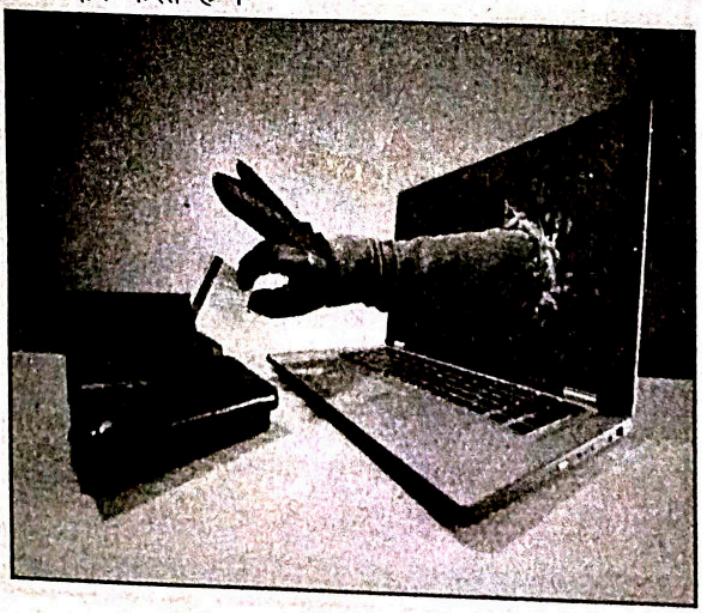

वायरस है बड़ा दुश्मन

आज कंप्यूटर हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है । घर पर हों या दफ़्तर में, यहां तक कि स्कूल के बच्चे भी कंप्यूटर को अपना दोस्त मानने लगे हैं । अब कल्पना कीजिए कि आप मज़े से कंप्यूटर पर काम कर रहे हैं और अचानक आपका कंप्यूटर बंद हो जाता है । थोड़ी देर में एक संदेश आता है, आपके कंप्यूटर पर वायरस का हमला हुआ है । ऐसे में मूड तो बहुत ख़राब होता है, लेकिन यह जानना भी ज़रूरी है कि आख़िर यह वायरस होता क्या है ?

दरअस्ल कंप्यूटर वायरस आमतौर पर ऐसे प्रोग्राम होते हैं, जो सिस्टम में पहले से मौजूद प्रोग्राम और हार्डडिस्क को तबाह कर सकते हैं । इसके अलावा कंप्यूटर पर यह वायरस किसी भी फ्लॉपी, सी॰डी॰ या ई-मेल के ज़रिये आसानी से पहुंच सकता है । यहां हम आपको यह ज़रूर बताना चाहेंगे कि सबसे अधिक वायरस हमले नेट पर काम करने के दौरान होते हैं ।

वायरस हमले का पता आपको कई तरह के संकेतों से मिलता है, जैसे कंप्यूटर का बार-बार हैंग होना, फाइलों या प्रोग्राम नहीं खुलना, कंप्यूटर शुरू नहीं होना, ठीक से शट डाउन नहीं होना आदि । चलिए यह तो हुई बात वायरस की, लेकिन यह जानना भी ज़रूरी है कि इन वायरस से निबटा वैसे जाए ।

आजकल रोज़ कई तरह के वायरस हमले कंप्यूटर पर हो रहे हैं, ऐसे में बेहद ज़रूरी हो गया है कि हम न सिर्फ़ अपने कंप्यूटर में एंटी वायरस सिस्टम इंस्टॉल कराएं, बल्कि इस सिस्टम को अपडेट भी करते रहें, जिससे नये जन्म लेते वायरस के हमलों से हम अपने कंप्यूटर को सुरक्षित रख सकें और बिना किसी परेशानी के अपने काम का कंप्यूटर पर आनंद लेते रहें । वायरस से कंप्यूटर को सुरक्षित रखने के लिए बाज़ार में यूं तो कई एंटी वायरस सिस्टम हैं, लेकिन मुख्यत: www.mcafee.com, (Norton Antivirus 2006), www.bitdefender.com (Bit Defender 9 Standard), (e Trust EZ Antivirus R7) and (PC Tools Antivirus 2.0 for Windows) एंटी वायरस साइट हैं, जहां से आप अपनी ज़रूरत के अनुसार एंटी वायरस सिस्टम ले सकते हैं ।

● ज्योति उनियाल

"इन्कार करने वालों के लिए हमने ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।"
(क़ुरआन, 76:4)

A Well Wisher
GOA

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

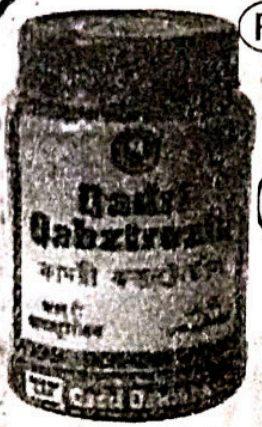

گیسٹک کے درد میں

قادری قبض ٹروجن

دافع

بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے



گھٹیا کے درد میں؟

زعفرانی تیل



کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گھٹیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشتک چورن



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

شوگر کی کامیاب دوا

ذیابطیش سی

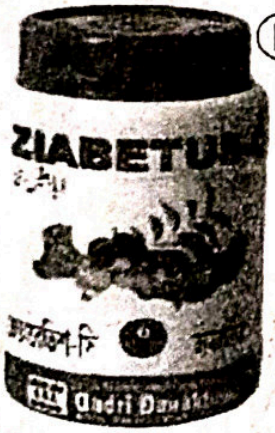

مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

Qadri Dawakhana™

An ISO 9001:2008 Certified Company

B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24

(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018

Ph. No. 2469-3173-2489-3539

www.qadridawakhana.com • E-mail : qadridawakhana80@yahoo.co.in

साइरस और बाबिल

■ अख़्लाक़ अहमद क़ादिरी

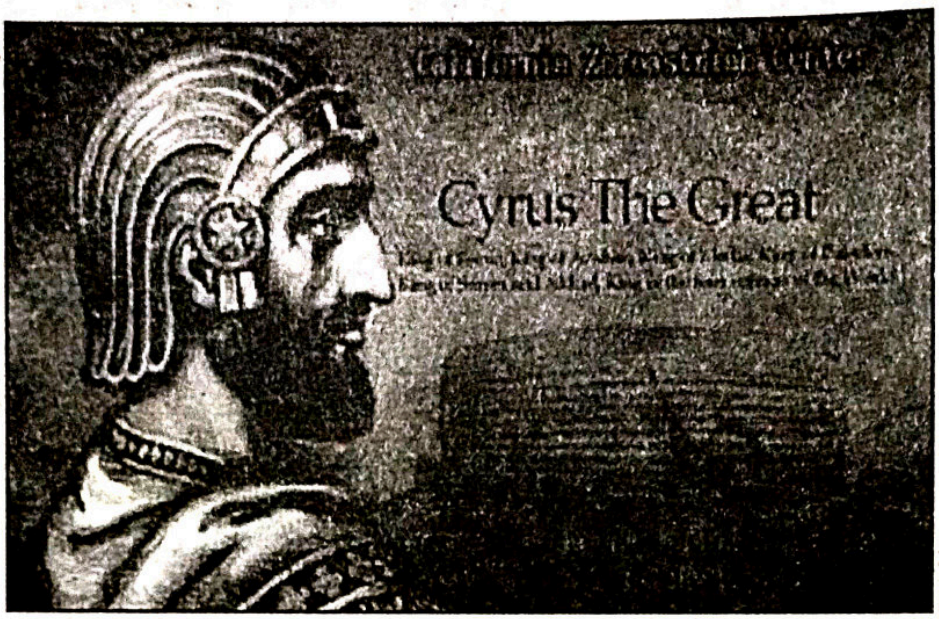

एक लंबी अवधि तक इतिहासकार साइरस आज़म Cyrus the great या कोरूश आज़म (बाइबल ने ख़ुरूश के नाम से याद किया है) को ईरान के हंखामंशी राज्य के संस्थापक के रूप में याद करते हैं, लेकिन बाबिल राज्य का शासक नीबोनिद्स (Nabonides) और कोरूश के समय के स्तंभों के कुछ अवशेष खुदाई के दौरान प्राप्त हुए हैं, जिस पर मैखी लिपि में कुछ लेख खुदे हैं । इन लेखों की रोशनी में सूरतेहाल बदल गयी । A History of Persia के लेखक साईक्स इन लेखों से प्रमाणित करते हैं कि हंखामुंशी राज्य की नींव फ़ारस में हंखामंश नामक एक अमीरज़ादे ने रखी थी, जिसका संबंध पाज़ारगद क़बीले से था । उसके बाद चैशपैश (Theispes) कम्बोजिया प्रथम (Cambyses) और कोरूश आज़म शासक बने ।

इस कोरूश आज़म (529 से 550 ईसा पूर्व) की गणना विश्व के उन महान बादशाहों में होती है, जिन्होंने पूरे राज्य को रोशन बना दिया । यद्यपि उसने हंखामुंशी राज्य की नींव नहीं रखी, मगर उसको इतना सुदृढ़ बना दिया कि वह साम्राज्य 220 वर्ष तक बड़े शानोशौकत के साथ स्थापित रहा । अंततः सिकन्दर जैसा महान विजेता ही इसे ख़त्म कर सका ।

कोरूश आज़म के बचपन के बारे में पूरी तरह से पता नहीं चलता, मगर प्रसिद्ध यूनानी इतिहास- कार हेरोडोट्स एक उल्लेख का वर्णन करता है कि आलमाद राज्य के अन्तिम बादशाह अस्तियागेस (Asty-ages) ने एक स्वप्न देखा था कि उसकी बेटी के गर्भ से एक ऐसा वृक्ष पैदा हुआ, जिसने पूरे एशिया को अपने घेरे में ले लिया । जब काहिनों से उसकी ताबीर पूछी गयी, तो उन्होंने बताया कि तुम्हारा पैदा होने वाला नवासा माद ख़ान दान (Medes) के राज्य को ख़त्म कर देगा । बल्कि पूरे एशिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित करेगा । जब कुछ समय बाद अस्तियागेस की बेटी के यहां एक लड़का पैदा हुआ, तो उसने उस स्वप्न को याद करते हुए उस नवजात बच्चे की हत्या करने का आदेश जारी कर दिया । मगर उसके राज्य के एक अधिकारी ने उस मासूम के ख़ून में अपने हाथ रंगने के बजाय उसे एक गड़ेरिये को सौंप दिया । गड़ेरिये ने उसका नाम कोरूश रखा और उसकी परवरिश की । जवान होकर कोरूश ने सचमुच अपने बाप कम्बोजिया (Cambyses) के आदेश पर अपने नाना के राज्य का तख़्ता उलट दिया और 549 ईसा पूर्व में आलमाद ख़ानदान के बजाय पूरे ईरान पर पारसियों की हुकूमत क़ायम की ।

अपनी विजय व सफलता के बल पर कोरूश ने उस ज़माने की तीन महान राज्यों को तहस-नहस करके एक महान साम्राज्य की स्थापना की । उन तीनों राज्यों में से एक ईरान की आलमाद सल्तनत, दूसरी एशिया-ए-कौचूक (अब तुर्की) में स्थित यूनान नवआबादी लीडिया के शासक करज़ोश (Crocsus) की सल्तनत और तीसरी बाबिल की कल्दानी सल्तनत थी ।

आलमाद की सल्तनत पर अधिकार कर लेने के बाद

एशिया-ए-कौचूक (जिसे अब तुर्की के नाम से जाना जाता है) में स्थित सल्तनत लीडिया की तरफ़ ध्यान दिया। लीडिया का शासक करज़ोश और आलमाद का शासक अस्तियागेस आपस में रिश्तेदार थे। आलमाद की तबाही के बाद से वह मिस्र और स्पार्टा के शासकों से साज़बाज़ में व्यस्त था।

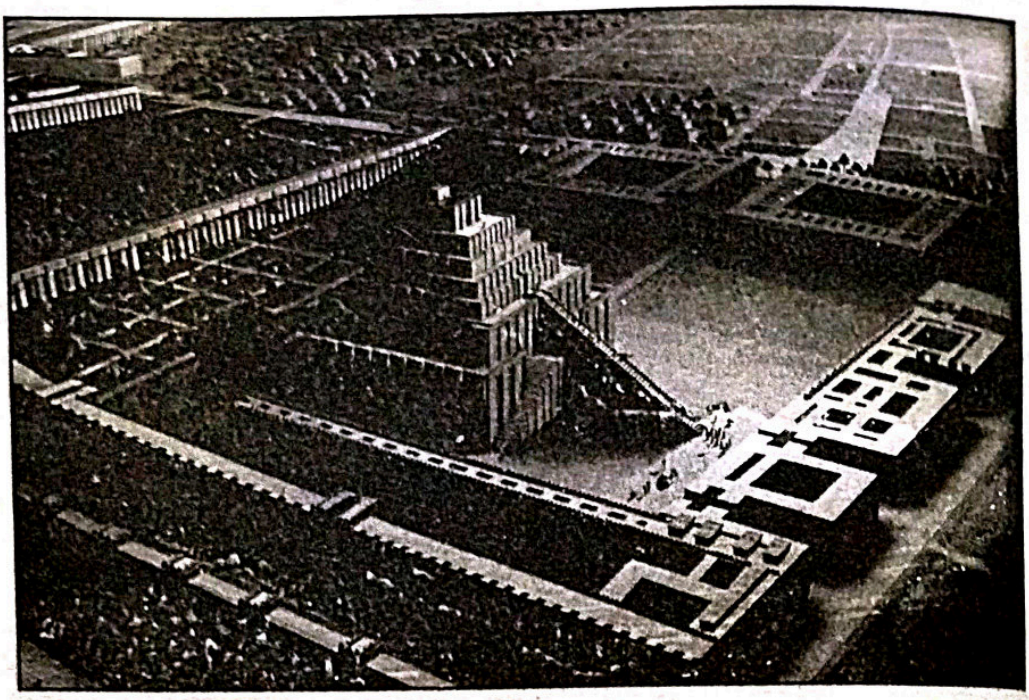

क़रीब 546 ईसा पूर्व में कोरूश आज़म ने लीडिया पर विजय प्राप्त करके करज़ोश को गिरफ़्तार करने का आदेश जारी किया। करज़ोश पराजय का अपमान सह न सका और जलती हुई चिता में कूद पड़ा।

कोरूश को मालूम हुआ, तो उसने फ़ौरन आग बुझा कर करज़ोश (Crocsus) को जलने से बचा लिया। करज़ोश की सल्तनत पर अधिकार हो जाने के बाद एशिया-ए-कौचूक में स्थित अन्य यूनान की नयी आबादियां भी उसके अधिकार क्षेत्र में आ गयीं। इस विजय के बाद कोरूश आज़म ने पूरब का रुख़ किया और बल्ख़, मर्व, सगद, सेस्तान से लेकर कांधार तक का पूरा इलाक़ा अपने राज्य में शामिल कर लिया।

अब उसके सामने बाबिल की प्राचीन सल्तनत थी, जिसे कुछ समय पहले नीबोकदज़्नर ने एक महान राज्य बना दिया था। अब वहां नीबोकदज़्नर का दामाद नीबोनिद्स (Nabonides) शासक था। नीबोनिद्स बाबिल के काहिनों के प्रभाव में था। उसका अधिकतकर ध्यान पुरानी इमारतों के अवशेषों की ओर था। उसने खुदाई करवा कर कई देवी-देवताओं की मूर्तियों को निकलवाया और यह मालूम किया कि इन मूर्तियों का निर्माण किन बादशाहों ने करवाया था। फिर उन मूर्तियों का नये सिरे से निर्माण करवाया। इस तरह वह इन मूर्तियों के निर्माण कार्य में इतना व्यस्त रहता था कि अपने राज्य की ओर से एकदम लापरवाह हो गया था और उसने राज्यकी बागडोर अपने बेटे बालशज़र (Balshazzar) के हाथ में दे रखी थी। प्राचीन इमारतों के भग्नावशेषों से लगाव रखने के कारण नीबोनिद्स ने प्राचीन समेरी शहरों औरोक (Uruk) एरीदो और उर (Ur) के प्रसिद्ध देवताओं को बाबिल में मंगवा लिया था। जिसके कारण बाबिल के काहिन जो मरदूक देवता के पुजारी थे, उससे बेहद नाराज़ थे और नीबोनिद्स की तबाही व बर्बादी की भविष्यवाणियां कर रहे थे।

कोरूश आज़म जैसा विजेता अपनी नाक के नीचे बाबिल की शक्तिशाली व स्वतंत्र सल्तनत को सहन नहीं कर सकता था, इसलिए उसने 539 ईसा पूर्व में बाबिल पर आक्रमण कर दिया। कोरूश आज़म को इस बात का पूरा एहसास था कि बाबिल राज्य की फ़सीले रक्षात्मक रूप से बहुत सुदृढ़ हैं। इसकी फ़सीलें ईरान और बाबिल के बीच बाहरी सीमा का काम देती थीं। अगर कोरूश इस फ़सील के रास्ते से आक्रमण करता, तो उसे एक लंबी अवधि के लिए इन्तिज़ार करना पड़ता। दूसरी तरफ़ दजला नदी उसके मार्ग में अवरोधक बनी हुई थी, जिसे पार करना भी आसान न था।

अंततः जब दजला नदी का पानी कुछ कम हुआ, तो कोरूश आज़म के आदेश से नदी की धारा मोड़ दी गयी और उसी ओर से ईरानी सेना बाबिल में दाख़िल हो गयी। फिर उत्तर की ओर से कोरूश ने बाबिल पर आक्रमण किया। दक्षिण की ओर से कोरूश का सेनानायक गोब्रयास (Gobryas) ने आक्रमण किया। इस ओर यद्यपि नीबोनिद्स अपनी सेना के साथ मौजूद था। गोब्रयास बाबिल की सेना को पीछे हटाता हुआ बेरोक-टोक शहर में दाख़िल हो गया। बाबिल शहर पर कोरूश का अधिकार हो गया। वहां

के निवासियों ने काहिनों की ताकीद पर अपने धर्म का मोक्षदाता समझकर कोरूश के क़दमों में अपनी आंखें बिछा दीं। कोरूश ने एक फ़रमान जारी किया कि शहर में लूट-मार न की जाए। किसी को किसी तरह का नुक़सान न पहुंचाया जाए।

बाइबल की किताब दानियाल (अलैहि॰) में कोरूश की विजय, बाबिल के संबंध में एक रिवायत दर्ज है जिसकी घटनाएं अनोखी और नागहानी (आकस्मिक) हैं। कहते हैं कि बाबिल का बादशाह बालशज़र (Balshazzar) के महल में प्रीतिभोज का प्रबंध अपने एक हज़ार दरबारी पदाधिकारियों और अतिथियों के लिए किया था। अतिथि सेवा के दौरान बादशाह का एक सेवक शाही ख़ज़ाने से बर्तन, पात्र उठाने गया, जो शुद्ध सोने के थे, जो यरुशलम के हैकले सुलैमानी से नीबोकदज़र ने विजय के अवसर पर हथियाये थे।

बादशाह चाहता था कि आज उन बर्तनों में शराब पी जाए। बर्तन लाए गये और सभी मेहमान उसमें शराब पीने लगे। ऐसे में अचानक वहां एक ग़ैबी हाथ नमुदार हुआ और रोशनी वाली दीवार पर कुछ लिखने लगा। यह देखकर बादशाह का रंग उड़ गया। उसने चिल्लाकर अपने रक्षकों को आदेश दिया कि कोई है, जो इस लिखावट को पढ़कर सुनाये।

बाबिल में मौजूद यहूदी क़ैदियों में से हज़रत दानियाल (अलैहि॰) को बुलाया गया। उन्होंने उस लेख का अर्थ यह बताया कि बहुत जल्द पारसियों की सेना सल्तनत बाबिल का ख़ात्मा कर देगी, ऐसा ही हुआ, उसी रात को कोरूश आज़म की सेना बाबिल में दाख़िल हुई और बालशज़र को क़त्ल कर दिया गया।

विजस के बाद कोरूश आज़म ने तबाह व बर्बाद बाबिल के यहूदी क़ैदियों की विशेष रूप से सहायता की और यह आदेश दिया कि जो यहूदी क़ैदी यरुशलम जाना चाहते हैं, उन्हें इजाज़त है। साथ ही हैकल सुलैमानी के दोबारा निर्माण के लिए शाही ख़ज़ाने से एक बड़ी रक़म उन्हें दिया और हैकल के सोने-चांदी के जो बर्तन नीबोकद्ज़र ने माले-ग़नीमत के तौर पर बाबिल ले आया था, वह भी यहूदियों को लौटा दिया। कोरूश आज़म का फ़रमान सुनकर यहूदियों की एक बहुत बड़ी संख्या ने यरुशलम का रुख़ किया। दूसरी तरफ़ जब कोरूश आज़म को यह यक़ीन हो गया कि बाबिल वाले अब ईरानी सल्तनत के वफ़ादार रहेंगे, तो गोब्रयास को वहां का शासक बनाकर स्वयं ईरान वापस आ गया।

कोरूश की आख़िरी मुहिम के बारे में कोई प्रमाणिक बात मालूम न हो सकी और उसकी मृत्यु के बारे में भी बहुत-सी रिवायतें मशहूर हैं। हेरोडोड्स लिखता है कि कोरूश ने मासासात (Massasetee) क़बीले की रानी तोमेरिस (Tomyris) को अपनी रानी बनाना चाहता था, लेकिन उसने इस महान विजेता के निवेदन को नफ़रत भरे दिल से ठुकराया दिया। इससे कोरूश ने नाराज़ होकर तोमेरिस के इलाक़े पर चढ़ाई की, तो रानी ने अपने फ़ौज की पिपसाई और अपने उत्तराधिकारी बेटे की मृत्यु के बावजूद हिम्मत न हारी और उसकी सेना ने एक-दूसरे मैदान में कोरूश आज़म का मुक़ाबला किया, जिसमें यह महान विजेता ख़ुद 529 ई॰ पूर्व में मृत्यु को प्राप्त हुआ। कहते हैं कि रानी ने उसका सिर कटवाकर उससे अपने प्रतिशोध का बदला लिया। बहरहाल उसकी लाश पाज़ारगद के स्थान पर दफ़न की गयी। आज भी उसका मक़बरा पाज़ारगद के क़रीब मौजूद और स्थित है। कोरूशं आज़म ईसा मसीह से पूर्व इतिहास के बादशाहों में से एक था, जिन्होंने बरबरियत की बजाय पराजितों से शिष्टता व मुहब्बत का सलूक किया।

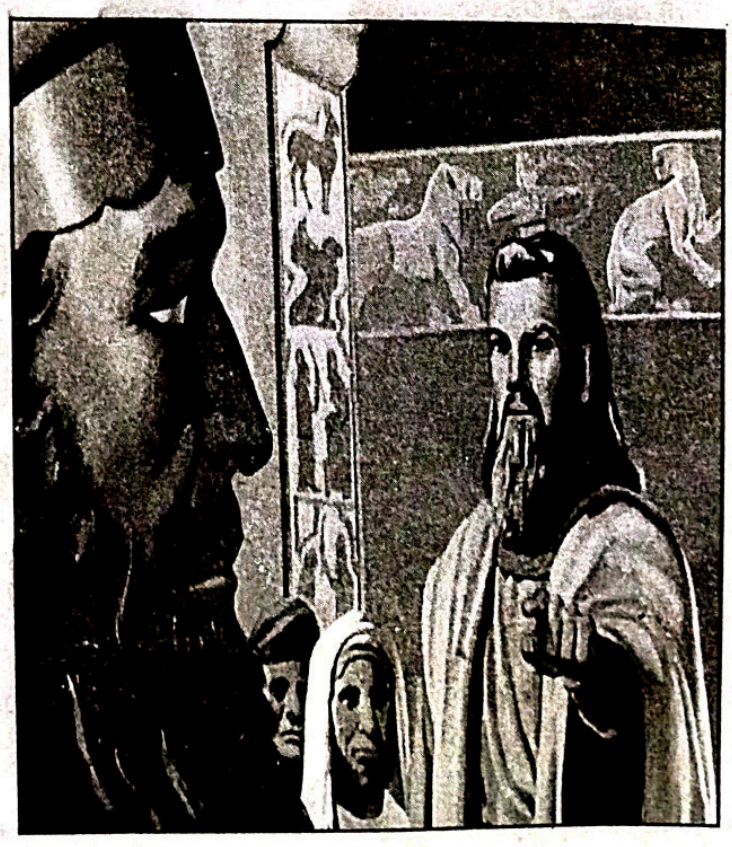

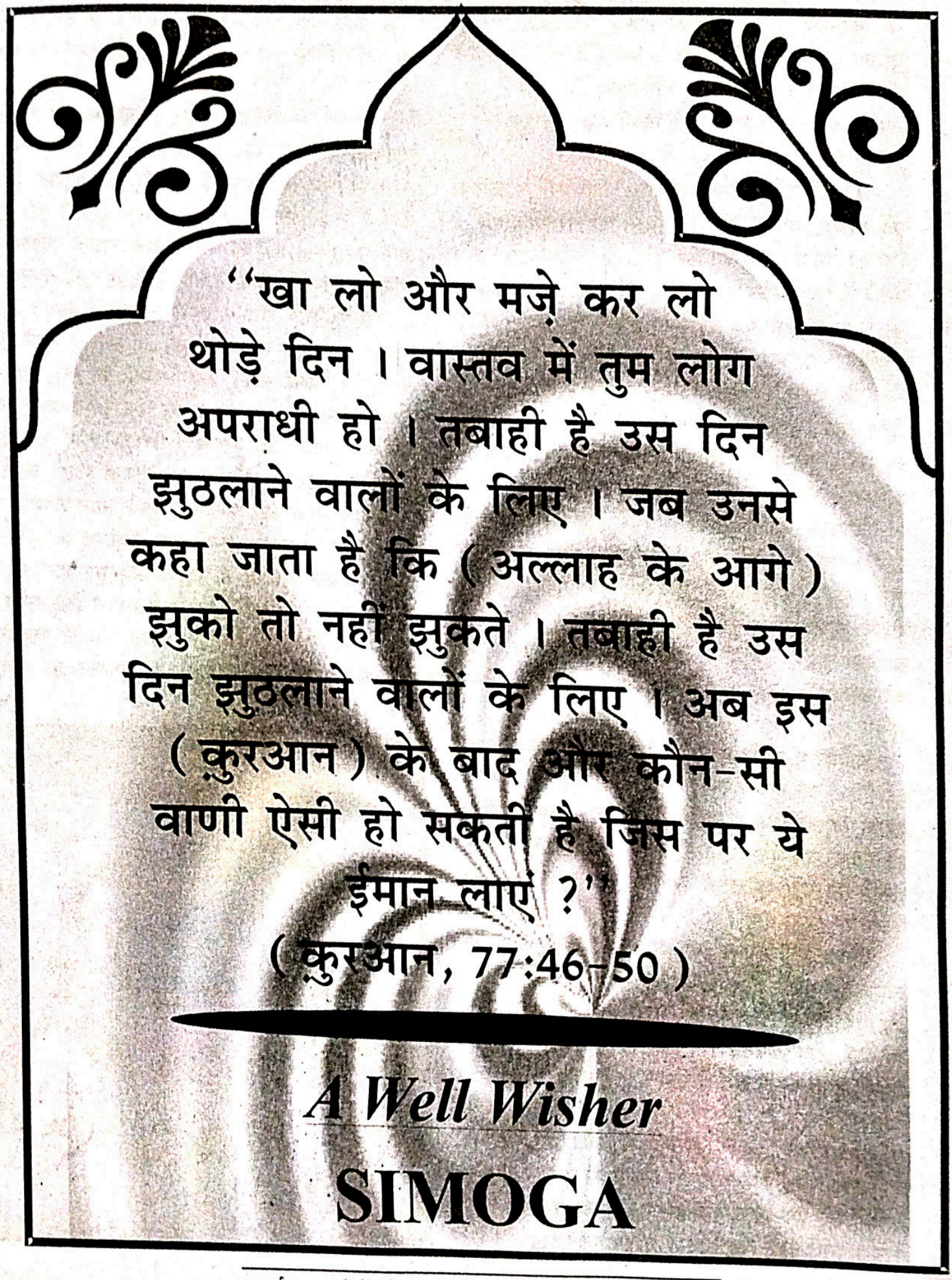
"खा लो और मज़े कर लो
थोड़े दिन । वास्तव में तुम लोग
अपराधी हो । तबाही है उस दिन
झुठलाने वालों के लिए । जब उनसे
कहा जाता है कि (अल्लाह के आगे)
झुको तो नहीं झुकते । तबाही है उस
दिन झुठलाने वालों के लिए । अब इस
(क़ुरआन) के बाद और कौन-सी
वाणी ऐसी हो सकती है जिस पर ये
ईमान लाएं ?"
(क़ुरआन, 77:46-50)
A Well Wisher
SIMOGA

हिमाचल के मीठे सेब

हिमाचल प्रदेश में पैदा होने वाला सेब अति उन्नत क़िस्म का माना जाता है । यहां शुरू से ही सेब की 'रेड डिलिशियस', 'रायल डिलिशियस', 'रिच-ए-टेड' जातियां बहुत लोकप्रिय रही हैं । लेकिन चूंकि ये जातियां बहुत नाज़ुक होने के कारण कोल्ड स्टोर्स में भंडारण के अयोग्य थीं, इसलिए प्रादेशिक फल अनुसंधान केन्द्र मशोबरा और कोटखाई में विभिन्न देशों से लगभग 400 सेबों की प्रजातियां लाकर अनुसंधान लाकर अनुसंधान कार्य शुरू किया गया । इनमें से टाइटमैन वरसेस्टर, रेड गोल्ड, स्आरकरिमसन



डिलिशयस, मैंकिटास, लार्ड लैंबोर्न, थोर्क-ए-रेड तथा ग्रेनी स्मिथ हिमाचल की जलवायु व मिट्टी के अनुरूप पायी गयीं । सेब की इन सभी प्रजातियों की गणना उन्नत क़िस्मों में की जाती है ।

चीन, बैबीलोनिया और मिस्र के प्राचीन साहित्य में भी सेब का उल्लेख मिलता है । प्रस्तर काल के कुछ शिल्पों में भी इस फल का अच्छा चित्रण किया गया है । बाइबल में भी कई जगह इसका उल्लेख आया है । फास्फोरस और लौह तत्व प्रधान होने के कारण सेब मस्तिष्क और शरीर की मांसपेशियों में शक्ति का संचार कर उन्हें सुदृढ़ बना देता है ।

सेब में विटामिन 'बी' काफ़ी मात्रा में रहता है । अत: सेब के नित्य प्रयोग से विटामिन बी की कमी से होने वाले अनेक रोगों जैसे स्नायु रोग, बैरी, अजीर्ण और शारीरिक दौर्बल्य में बहुत फ़ायदा होता है ।

अवसाद से हृदय रोग



हाल में किये गये एक शोध के अनुसार, जो व्यक्ति अवसादग्रस्त रहते हैं, उन्हें हृदय संबंधी रोग होने का ख़तरा बढ़ जाता है । विशेषज्ञों का मानना है कि हृदय संबंधी रोगों में मनोवैज्ञानिक कारण प्रमुख भूमिका निभाते हैं ।

दिमाग़ी तनाव के कारण रक्त नलिकाओं के बगल में प्लेक्सेस बढ़ता है, जिसके कारण धमनियों में अवरोध आ जाता है और हृदय संबंधी रो होने का ख़तरा बढ़ जाता है । इस संबंध में इससे पूर्व भ कई शोध हुए हैं और अवसाद को न केवल हृदय रोगो बल्कि कई अन्य गंभीर रोगों की जड़ माना गया है । इसलि व्यक्ति के लिए बहुत ज़रूरी है कि अवसाद से बचना खुश रहना ।

आठवें ग्रह की खोज

जब यूरेनस नामक ग्रह की खोज हुई थी, तब वैज्ञानिक का ध्यान इस बात पर गया कि यूरेनस उस तरह सूर्य की परिक्रमा नहीं कर रहा है जैसे कि उसे करनी चाहिए इंग्लैंड में जॉन एडम्स और फ्रांस में अरबेन लेवरेर ने गणन करके हिसाब लगाया और निष्कर्ष निकाला है कि बहुत दू का कोई ग्रह ज़रूर अपनी गुरुत्वाकर्षण शक्ति से यूरेनस के परिक्रमा पथ को विचलित कर रहा है । 1846 में जर्म



खगोलविद जॉन गेले ने अपना टेलिस्कोप आकाश में उस स्थान पर घुमाया जहां नये ग्रह का अनुमान लगाया गया था । अनुमान और गणनाएं बिल्कुल सही थी । सौरमंडल का आठवां ग्रह नेपच्यून यहां मौजूद था ।

नेपच्यून हमारी पृथ्वी से लगभग चार गुना ज़्यादा बड़ा है । इसका सबसे भीतरी हिस्सा (कोर) चट्टानों का बना है जो चारों तरफ़ से पानी, अमोनिया और मीथेन से घिरा है । अत्यंत दूरी पर होने के कारण यह पृथ्वी से बिना टेलिस्कोप के नहीं दिखायी पड़ता । 1989 में जब वॉयजर-2 नामक अंतरिक्ष यान नेपच्यून के नज़दीक से गुज़रा था, तब इसके बारे में पहली बार विस्तार से जानकारी मिली थी । वॉयजर द्वारा लिए गये चित्रों में इसके चारों ओर एक धुंधले से चक्र का पता चला । नेपच्यून के आठ चन्द्रमा हैं जिनमें दो का पता पृथ्वी से लगाया गया था जबकि 6 का पता वॉयजर यान ने लगाया ।

नेपच्यून के वायुमंडल के ऊपरी हिस्से में मीथेन गैस की अधिकता है जिसे इसके बादलों का रंग नीला दिखायी देता है । हालांकि इसके वायुमंडल में हाइड्रोजन और हीलियम गैस ही ज़्यादा मात्रा में है । नेपच्यून पर 2,000 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ़्तार से हवाएं चलती हैं । इतनी तेज़ आंधियां सौरमंडल के किसी ग्रह पर नहीं चलती । 1989 में वॉयजर-2 अंतरिक्ष यान ने नेपच्यून के दक्षिणी गोलार्द्ध में पृथ्वी के आकार जितने एक अंडाकार बादल का पता लगाया था । इसे 'ग्रेट डार्क स्पॉट' नाम दिया गया । लेकिन जब 1994 में अंतरिक्ष दूरबीन हब्बल ने नेपच्यून को देखा तो यह बादल ग़ायब था । बाद में पता चला कि यह एक विराट अंधड़ है जो हर 16वें दिन में इसके चारों ओर एक चक्कर पूरा करता है । ● दिनेश दावत

क्यों सूखते हैं होंठ ?

हमारी त्वचा शरीर को बाहरी वातावरण के प्रभावों से सुरक्षा प्रदान करती है । त्वचा की सबसे ऊपरी सतह एपीडरमिस पर मृत कोशिकाएं होती हैं जो त्वचा के नीचे की जीवित कोशिकाओं से निरंतर नमी और तेल प्राप्त करती रहती हैं । तेल यानी सीबम की यह पतली परत त्वचा के नीचे स्थित तैल ग्रंथियों के स्राव द्वारा उत्पन्न की जाती है । ठंडे मौसम में वायु की नमी कम और हवा शुष्क हो जाती है । जब ऐसी वायु त्वचा के संपर्क में आती है तो त्वचा से नमी बहुत तेज़ी से सोखती है । परिणामस्वरूप त्वचा सूख कर फटने लगती है । होंठों के नीचे तैल ग्रंथियां नहीं होती हैं इसलिए ठंड के मौसम में होंठ ही सबसे पहले फटते हैं । क्रीम या चिकने पदार्थों से त्वचा को जल और तेल दोनों मिल जाते हैं । पानी त्वचा के द्वारा अवशोषित हो जाता है और तेल की परत इसके ऊपर चढ़ जाती है ।

हाथी के बारे में रोचक तथ्य

21. नर हाथी 12 से 15 साल की आयु के बीच झुंड छोड़ देते हैं ।

22. एक हाथी का बच्चा अक्सर आराम के लिए अपनी सूंड चुसता है ।

23. हाथी भी मनुष्यों की तरह Right या Left Handed होते हैं ।

24. हाथी के दांत उसके जीवन काल के दौरान बढ़ते ही रहते हैं । अफ़्रीकी हाथी के 4 दांत होते हैं ।

25. हाथी अपने पैरों का उपयोग सुनने के लिए भी करते हैं । जब हाथी चलते हैं तो ज़मीन में एक विशेष प्रकार का कंपन पैदा होता है । इस कंपन से हाथी दूसरे हाथियों के बारे में जान लेते हैं ।

26. हमें बचपन से बताया जाता है कि अगर एक चींटी हाथी की सूंड में घुस जाए, तो वह मरने की कगार तक पहुंच सकता है, इसीलिए हाथी फूंक-फूंककर क़दम बढ़ाता है । यह बात सही है, लेकिन इसके आगे भी एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि अगर हाथी को चींटी, मच्छर या मक्खी काट ले, तो उसे घाव हो सकता है, वैसे तो एक हाथी की चमड़ी लगभग एक इंच तक मोटी होती है । लेकिन इसकी त्वचा बहुत संवेदनशील होती है । यही कारण है कि हाथी अपनी त्वचा को सूर्य से निकलने वाली अल्ट्रा वॉयलेट किरणों से बचाने के लिए मिट्टी में लोटता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

With Best Compliments From :

DILKUSHA NURSING HOME PVT. LTD

94A, Dilkusha Street, Kolkata-700 017
Phone : (033) 2287 4318, 22803639, 2290 1971
Fax : (033) 2290 1970
E-mail : ddilkusha@gmail.com

- This is a 36 bedded Modern Nursing Home including 6 bedded Elegant INTENSIVE CARE UNIT general surgery LAPAROSCOPIC, GALL BLADDER, APPENDEX AND ORTHOPAEDIC Surgery with latest C-ARM IMAGE INTENSIFIER and also provision for all categories of patients including Maternity and Modern Nursery attached with full fledged DIAGNOSTIC DIVISION equipped with latest U.S.G., X-Ray machines and PATHOLOGY UNIT etc.
- Maxillofacial & Microvascular Reconstruction of the Oro-Facial Region with Radial Forearm Flap. Plastic and Cosmetic Surgery Piles Removal by imported IRC etc. are regularly done. Specialists in all streams including Oncolgy, Urology, Gastroenterology etc.
- Polyclinic, In-house Medicine Shop, 24-hours expert Doctors, RMOs, Matrons, Trained Nursing Staff.
- charges moderate.

Posted on 20-21 June 2018
July 2018
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.06.2018
Total pages 52 with Cover

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

مسلمان وہ ہے
جس کی زبان اور ہاتھ سے
مسلمان محفوظ رہیں۔
(بخاری:10)

Seahath Canning Company
Plot No. 8, Margoa Industrial Estate
St. Jose de Areal. Post Curtorium
Margo, Goa 403709, INDIA
Tel.: +91-832-2860412 / 6481562
Email: info@seahath.com | www .seahath.com

